

अध्याय 1—वर्ण विचार

वर्ण :- 'वृ' धातु से वर्ण शब्द बना है। जिसका अर्थ— वरण करना या चुनना होता है।

—भाषा की सबसे लघूत्तम इकाई, जिसके खण्ड नहीं किए जा सकते हैं, वर्ण कहलाते हैं। **जैसे—** क्+अ+म्+अ+ल्+अ = कमल

— भाषा के मौखिक रूप को **अक्षर** कहा जाता है।

—वर्ण दो प्रकार के होते हैं— (1) स्वर (2) व्यंजन

☆ स्वर

वे वर्ण जो स्वतंत्र अवस्था में विद्यमान रहते हैं दूसरे वर्णों की सहायता नहीं लेते हैं, स्वर कहलाते हैं। **स्वर के भेद :-**

(अ) मात्रा या उच्चारण अवधि के आधार पर स्वर के भेद—

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

1. ह्रस्व स्वर :- वे स्वर वर्ण जिसके उच्चारण में बहुत ही कम समय लगता हो, उन्हें ह्रस्व स्वर/मूलस्वर/लघुस्वर/एकमात्रिक स्वर कहा जाता है।

— यह संख्या में 4 होते हैं— अ, इ, उ, ऋ

2. दीर्घ स्वर :- वे स्वर वर्ण जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता हो, उन्हें सन्धि स्वर/गुरु स्वर/संयुक्त स्वर/द्विमात्रिक स्वर कहा जाता है।

— यह संख्या में 7 होते हैं— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

— दीर्घ स्वर को दो भागों में बांटा गया है :- 1. सजातिय स्वर 2. विजातिय स्वर

सजातिय स्वर :- वे स्वर जो समान वर्णों के मेल से बनते हैं, सजातिय स्वर कहलाते हैं।

जैसे:- (1) अ+अ = आ (2) इ+इ = ई (3) उ+उ = ऊ

विजातिय स्वर :- असमान जाति के स्वरों का परस्पर मेल विजातिय स्वर कहलाता है।

जैसे:- (1) अ/आ + इ+ई = ए (2) अ+इ = ए

(3) अ/आ + उ,ऊ = ओ (4) अ+उ = ओ

(5) अ/आ + ए, ऐ = ऐ (6) अ+ए = ऐ

(7) अ/आ + ओ, औ = औ (8) अ+ओ = औ

3. प्लुत स्वर :- वे वर्ण जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग संस्कृत में किया जाता है।

:- इसे हिन्दी के अंक तीन की तरह लिखा जाता है।

:- यह 'अकार' की ध्वनि देता है।

:- इसका प्रयोग संगीत, सम्बोधन, चिखने, चिल्लाने में किया जाता है।

(ब) ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरों के भेद :-

1. वृत्ताकार स्वर :- उ, ऊ, ओ, औ

2. अवृत्ताकार स्वर :- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

(स) मुखाकृति के आधार पर स्वरों के प्रकार :-

1. संवृत्त स्वर :- इ, ई, ऋ, उ, ऊ (जिनके उच्चारण में मुँह कम से कम खुले)
2. विवृत्त स्वर :- आ (जिनके उच्चारण में मुँह ज्यादा खुलता हो)
3. अर्द्ध संवृत्त स्वर :- अ, ए, ओ
4. अर्द्ध विवृत्त स्वर :- ऐ , औ

(द) जिह्वा के आधार पर स्वरों के प्रकार :-

1. अग्र स्वर - इ, ई, ऋ, ए ,ऐ
2. मध्य स्वर - अ
3. पश्च स्वर - आ, उ,ऊ ,ओ, औ

→ स्वरों की कुल संख्या 11 होती है।

नोट :- हिन्दी भाषा के कुछ विद्वानों का मानना है कि 'ऋ' स्वर नहीं है यह व्यंजन होता है। ऐसी स्थिति में स्वरों की संख्या 10 रह जाती है। यदि विकल्प में 11 हो तो 11ही सही माना जाएगा।

अयोगवाह ध्वनियाँ :- वे वर्ण जो ना तो स्वर होते है और न ही व्यंजन होते है इनका प्रयोग स्वर व व्यंजन दोनों में होता है। उन्हें अयोगवाह ध्वनियाँ कहते है।

अनुनासिक वर्ण :-वे वर्ण जिसके उच्चारण में वायु , नाक व मुख से ध्वनि निकलती है उन्हें अनुनासिक वर्ण कहा जाता है। **जैसे-** अँ, आँ, ईँ, ईऔँ।

निरनुनासिक वर्ण :- वे वर्ण जिसके उच्चारण से वायु केवल मुख से बाहर निकलती है। उन्हें निरनुनासिक वर्ण कहते है। **जैसे-** अ, आऔ।

☆ व्यंजन

-वे वर्ण जो स्वतंत्र नहीं होते है।

- ये स्वर वर्णों की सहायता से बोले एवं लिखे जाते है

जैसे- (1) क+अ = क (2) म्+ अ = म

व्यंजनों का वर्गीकरण -

1. क से म तक के 25 वर्णों को - **स्पर्श व्यंजन वर्ण** कहते हैं-

क वर्ग - क, ख, ग, घ, ङ,

च वर्ग - च, छ, ज, झ, ञ

ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग- त, थ, द, ध, न

प वर्ग- प, फ, ब, भ, म,

2. अन्तस्थ व्यंजन(मध्य या बीच का):- य, र, ल, व = 4

3. **उष्म व्यंजन वर्ण/संघर्षी** :- वे वर्ण जो घर्षण के साथ उच्चारित होते हैं। उष्म या संघर्षी व्यंजन वर्ण कहलाते हैं। :- श, ष, स, ह = 4

4. **संयुक्त व्यंजन वर्ण**:- वे वर्ण जो दो वर्णों के मेल से बनते हैं।

क्ष = क्+ष् +अ (क्+ष)

त्र = त्+ र् + अ (त्+र)

ज्ञ = ज्+ञ् +अ (ज् + ञ)

श्र = श् + र् +अ (श्+र)

5. **उत्क्षिप्त व्यंजन** = उत्क्षिप्त का अर्थ = फैंकना। जिन व्यंजनों का प्रयोग एक झटके के साथ होता हो, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे :- ङ, ढ (2)

:- ङ, ढ = ङ व ढ का विकसित रूप होता है इनका प्रयोग शब्दारम्भ में नहीं होता। शब्द के अन्त या मध्य में होता है। **जैसे** :- मेढक, फड़, लड़का, लड़की आदि।

➤ ङ,ढ का प्रयोग शब्द के प्रारम्भ में होता है।

➤ ङ,ढ जिनके नीचे बिन्दी लगी होती है तो इन्हें **नुक्ता या बिन्दुतल** कहा जाता है।

6. **लुण्ठित /प्रकम्पी व्यंजन वर्ण** :- जिस वर्ण के उच्चारण में जिह्वा नीचे की ओर लुढ़कती है तो उसे लुण्ठित/प्रकम्पी व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे:- 'र'

7. **पार्श्विक/वर्त्य व्यंजन वर्ण** :- 'ल'

— वर्णों के क्रमबद्ध रूप को वर्णमाला कहते हैं।

— **हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं।** जो निम्न हैं—

स्पर्श व्यंजन — 25 (क से म तक)

अन्तस्थ व्यंजन — 04 (य, र, ल, व)

ऊष्म/संघर्षी व्यंजन—

04 (श, ष, स, ह)

संयुक्त व्यंजन — 04 (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)

उत्क्षिप्त व्यंजन — 02 (ङ, ढ)

अयोगवाह ध्वनियाँ — 02 (अं, अः)

स्वर — 11

कुल वर्ण— 52

➤ मूल वर्णों की संख्या — 44 (11 स्वर + 33 व्यंजन)

➤ स्पर्श संघर्षी व्यंजन वर्ण — च, छ, ज, झ

➤ संघर्षी सप्रवाह व्यंजन वर्ण — य,र, ल, व

➤ अर्द्ध स्वर— य, व

(अ) **प्रयत्न के आधार पर स्वर व व्यंजन वर्णों का वर्गीकरण**— वर्णों के उच्चारण करने की रीति को प्रयत्न कहते हैं।

—प्रयत्न के आधार पर वर्ण दो प्रकार के होते हैं—

(क) **अभ्यान्तर प्रयत्न** — 4 प्रकार के होते हैं—

1. विवृत्त प्रयत्न — सभी स्वर

2. स्पृष्ट प्रयत्न — क से लेकर म तक

3. ईषद् स्पृष्ट प्रयत्न — य,र,ल,व

4. ईषद् विवृत्त प्रयत्न — श, ष, स, ह

(ख) बाह्य प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण – 2 प्रकार

(i) घोषत्व के आधार पर— 1. घोष/सघोष वर्ण 3,4,5 य, र, ल, व, ह, सभी स्वर, अनुस्वार
2. अघोष वर्ण 1,2, श, ष, स, विसर्ग

(ii) प्राणत्व के आधार पर— 1. अल्पप्राण – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा व पाँचवा वर्ण तथा य, र, ल, व, अनुस्वार वर्ण । 2. महाप्राण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण तथा श, ष, स, ह आदि ।

	1	2	3	4	5
क वर्ग —	क,	ख,	ग,	घ,	ङ
च वर्ग —	च,	छ,	ज,	झ,	ञ
ट वर्ग —	ट,	ठ,	ड,	ढ,	ण
त वर्ग —	त,	थ,	द,	ध,	न
प वर्ग —	प,	फ,	ब,	भ,	म

उच्चारण स्थान के आधार पर वर्ण—इन्हें निम्न सूत्र की सहायता से समझा जा सकता है—

1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठा :— अ/आ, क वर्ग, ह, विसर्ग का उच्चारण कण्ठ से होता है
2. इचुयशनां तालु :— इ/ई, च वर्ग, य, श — तालव्य
3. ऋटुरषाणां मूर्धा :— ऋ, ट वर्ग, र, ष, — मूर्धन्य
4. लृतुलसानां दन्तां :— लृ, त वर्ग, ल, स, — दन्तव्य
5. उपूपध्यमानीयानामोष्ठो :— उ/ऊ, प वर्ग— ओष्ठव्य
6. एदेतो कण्ठतालु :— ए, ऐ — कण्ठतालव्य
7. ओदौतो कण्ठोष्ठ्य :— ओ, औ — कण्ठ ओष्ठ्य
8. वकारस्य दन्तोष्ठ्य :— व — दन्तोष्ठ्य
9. ड. जण्णम नासिका चः — नासिक्य

➤ आगत या गृहीत ध्वनियाँ :— ऑ, क, ख, ग, ज, फ,

➤ 'र' का प्रयोग

1. स्वर युक्त 'र' का प्रयोग :— स्वर युक्त 'र' का प्रयोग जिस व्यंजन वर्ण के नीचे की तरफ किया जाता है। वो व्यंजन वर्ण स्वर रहित होता है और स्वर युक्त 'र' से पूर्व प्रयुक्त होता है। स्वर युक्त 'र' उसके बाद में प्रयुक्त होता है। **जैसे—** चक्र :— चक्र प्रयोग :— प्रयोग

2. स्वर रहित 'र' का प्रयोग :— स्वर रहित 'र' अपने से आगे वाले वर्ण के ऊपर की ओर रेफ के रूप में लगता है। **जैसे :—** कर्म = कर्म, मर्म = मर्म, आशीर्वाद = आशीर्वाद

3. र का प्रयोग— ट, ड, ढ के बाद स्वर युक्त र का प्रयोग निम्न प्रकार से किया जाता है :— **जैसे :—** ट्रेन = ट्रेन, ड्रम = ड्रम, ट्रंक = ट्रंक

—अं (अनुस्वार), अँ (चन्द्र बिन्दु), अः (विसर्ग), अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

अध्याय 2 –सन्धि प्रकरण

—सन्धि शब्द का शाब्दिक अर्थ—मेल,योग, जोड़ होता है।

— सन्धि शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—सम् +धि , जिसका अर्थ— अच्छी तरह मिलना होता है। दो वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न ध्वनि विकार को सन्धि कहते हैं।

—सन्धि के तीन भेद होते हैं— 1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. विसर्ग सन्धि

—सन्धि में निम्न शर्तें कार्य करती हैं—

(अ) विकार (ब) लोप (स) संयोग (द) आगम (य) प्रकृतिभाव

(अ) विकार — दो वर्णों का परस्पर मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे विकार कहा जाता है। जो सन्धि में प्रमुख होता है। जैसे :— (1) बाल+इन्दु = बालेन्दु (2) विद्या+ आलय = विद्यालय

(ब) संयोग—जिस शब्द में दो वर्ण परस्पर ज्यों के त्यों आकर मिल जाते हैं, कोई विकार नहीं होता है तो उसे संयोग कहते हैं। जैसे :—(1) पंक + ज = पंकज (2) युग+ बोध = युगबोध

(स) लोप— जहां प्रथम पद के अन्तिम वर्ण का लोप करके दोनों पदों को परस्पर मिला देते हैं वहां लोप होता है। जैसे—(1) राजन् +गृह = राजगृह (2) मन्त्रिन्+मण्डल = मन्त्रिमण्डल

(द) आगम — जहाँ पर दोनों पदों के बीच में किसी अन्य वर्ण का प्रयोग करते हैं तो वह आगम कहलाता है। आगम निम्न स्थितियों में होता है :—

नियम-1 परि उपसर्ग के पश्चात् कृ धातु से निर्मित कोई शब्द होता है तो परि के बाद में 'ष्' (मूर्धन्य) का आगम हो जाता है। जैसे— परि+कार = परिष्कार (2) परि+करण= परिष्करण, (3) परि+कृता= परिष्कृता (4) परि + कारक — परिष्कारक

नियम-2 यदि सम् उपसर्ग के उपरान्त कृ धातु से निर्मित कोई शब्द होता है तो सम् उपसर्ग के बाद 'स्' (दन्तय) का आगम हो जाता है। जैसे—(1) सम्+कार= संस्कार,

(2) सम्+कृति= संस्कृति (3) सम्+ करण = संस्करण

नियम-3 यदि प्रथम पद में स्वर हो और उसके उपरान्त 'छ' हो तो दोनों पदों के बीच में च का आगम होता है। जैसे— (1) वि +छेद = विच्छेद, (2) आ + छादन = आच्छादन, (3) वृक्ष + छाया— वृक्षच्छाया

(य) प्रकृतिभाव— जहां सन्धि—नियम तो लगता हो लेकिन सन्धि नियम लगाने पर शब्द सही नहीं बने, ऐसी स्थिति में प्रकृतिभाव होता है। जैसे :—(1) सु+अवसर, (2) सु+अम्ब, (3) सु+ ओष्ठ

☆ (अ) स्वर सन्धि

स्वर सन्धि— दो वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि विकार को स्वर सन्धि कहते हैं।

—स्वर सन्धि के 5 भेद होते हैं—

1. दीर्घ स्वर सन्धि
2. गुण स्वर सन्धि
3. यण स्वर सन्धि
4. वृद्धि स्वर सन्धि
5. अयादि स्वर सन्धि

नोट :- सन्धि –विच्छेद करने तथा सन्धि पद बनाने के नियम–

नियम-1 सन्धि –विच्छेद से सन्धि पद बनाते समय प्रथम पद के अन्तिम वर्ण के स्वर को बाहर निकालकर दाहिनी ओर लिख देते हैं। बाकी पद को बाँयी ओर लिख देते हैं।

–द्वितीय पद के प्रथम वर्ण को बाहर निकालकर बाँयी ओर लिख देते हैं तथा बाकि पद को दाहिनी ओर लिख देते हैं। **जैसे–** (1) देव + आलय = देवालय

नियम-2 सन्धि–विच्छेद करते समय सन्धि पद को दो सार्थक पदों में विभक्त कर देते हैं। इस बात का ध्यान रखना होता है कि विच्छेद किए गए शब्द शुद्ध हों। **जैसे–** विद्या+आलय = विद्यालय।

1. दीर्घ स्वर सन्धि

दीर्घ स्वर सन्धि– ह्रस्व या दीर्घ स्वर के उपरान्त कोई ह्रस्व/दीर्घ स्वर होने पर दीर्घादेश हो जाता है। नियम :-

अ+अ = आ	इ +इ = ई	उ+उ = ऊ	आ+आ = आ
ई+ ई= ई	ऊ+ऊ= ऊ	अ+आ = आ	ई+इ = ई
ऊ+उ =ऊ	आ+अ= आ	इ+ई= ई	ऊ+ उ=ऊ

उदाहरण– कार्य +आलय = कार्यालय,

वधू +उत्सव = वधूत्सव

पुरा +अवशेष = पुरावशेष,

चमू +ऊर्जा = चमूर्जा,

हिम +अद्रि = हिमाद्रि,

मंजू +उषा = मंजूषा,

नयन + अम्बु = नयनाम्बू,

सिन्धु +ऊर्मि = सिन्धूर्मि,

मुर + अरि = मुरारि,

साधु + उपदेश = साधूपदेश,

रवि + इन्द्र = रवीन्द्र,

भू + उपरि =भूपरि,

नारी + ईश्वर =नारीश्वर,

भू + उष्मा = भूष्मा,

कवि + इन्द्र = कवीन्द्र,

मधु + ऊलिका =मधूलिका,

अनु + उदित = अनूदित,

भानु + उदय =भानूदय,

लघु +ऊर्मि = लघूर्मि,

लघु + उत्तम = लघूत्तम,

पहचान :- यदि शब्द के मध्य में बड़ा आ,ई,ऊ,की मात्रा दिखाई दे, तो वहां दीर्घ सन्धि होगी।

2 गुण सन्धि

नियम- 1 यदि अ या आ के बाद इ या ई आए तो दोनों मिलकर ए हो जाता है।

(अ,आ +इ,ई = ए)

उदाहरण :- 1 सुर +इन्द्र

2 महेन्द्र

3 राकेश =राका +ईश

सु र् अ + इन्द्र

महा + इन्द्र

4 गणेश = गण + ईश

सु र् ए न्द्र

म ह् आ +इन्द्र

5 सुरेश = सुर + ईश

सुरेन्द्र

महएन्द्र

6 देवेन्द्र =देव +इन्द्र

महेन्द्र

नियम - 2 यदि अ या आ के बाद उ या ऊ आए तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।

(अ,आ + उ,ऊ = ओ)

उदाहरण :- 1 महा + उदय

2 सूर्य + उदय

3 महोर्जा = महा + ऊर्जा

म ह आ + उदय	सूर य् अ + उदय	4 गंगोर्मी = गंगा + ऊर्मी
म ह ओ दय	सू र् य् ओ दय	5 यमुनोर्मी = यमुना + ऊर्मी
महोदय	सूर्योदय	

नियम - 3 यदि अ या आ के बाद ऋ आए तो दोनों मिलकर **अर्** हो जाते हैं।

(अ,आ + ऋ = अर्)

उदाहरण :-

1 वसन्त + ऋतु	2 ग्रीष्म + ऋतु	3 सप्तर्षि = सप्त + ऋषि
वसन्त् अ + ऋतु	ग्रीष्म् अ + ऋतु	4 महर्षि = महा + ऋषि
वसन्त् अर् तु	ग्रीष्म् अर् तु	5 देवर्षि = देव + ऋषि
वसन्तर्तु	ग्रीष्मर्तु	6 ग्रीष्मर्तु = ग्रीष्म + ऋतु

नियम :- 4 यदि अ या आ के बाद लृ आए तो दोनों मिलकर **अल्** हो जाते हैं।

(अ,आ + लृ = अल्) **उदाहरण :-** तव + लृकार = तवल्कार

पहचान:- यदि शब्द के मध्य में एक मात्रा दिखाई दे चाहे व, ए, या ओ की हो तथा अर व अल की ध्वनि सुनाई दे वहां गुण सन्धि होगी।

अपवाद :- 1 प्रौढ = प्र + ऊढ 2 अक्षौहिणी = अक्ष + ऊहिणी

3 वृद्धि सन्धि

नियम :- यदि अ,आ के बाद ए,ऐ आए तो दोनों मिलकर **ऐ** हो जाता है। (अ,आ + ए,ऐ = ऐ)

उदाहरण :-

1 सदा + एव	2 तथा + एव	3 एकैक = एक + एक
सद् आ + एव	त थ् आ + एव	4 मतैक्य = मत + ऐक्य
स द् ऐ व	त थ् ऐ व	5 देवैश्वर्य = देव + ऐश्वर्य
सदैव	तथैव	6 अद्यैव = अद्य + एव
7 अधुनैव = अधुना + एव	8 महैन्द्र = महा + एन्द्र	9 पुत्रैषणा = पुत्र + एषणा

नियम : 2 यदि अ,आ के बाद ओ,औ आए तो दोनों मिलकर **औ** हो जो है।

(अ,आ + ओ,औ = औ)

उदाहरण :-

1 परम + औषधि	2 वन + औषधि	3 जल + ओक = जलौक
परम् अ + औषधि	वन् अ + औषधि	4 परम् + औदार्य = परमौदार्य
परम् औ षधि	वन् औ षधि	5 महा + औषधि = महौषधि
परमौषधि	वनौषधि	6 महा + औदार्य = महौदार्य

पहचान :- यदि शब्द के मध्य में ऐ व औ की ध्वनि सुनाई दे या शब्द में दो मात्रा दिखाई दे वहां वृद्धि सन्धि होगी। **अपवाद :-** दन्त + ओष्ठ

4. यण सन्धि

नियम :- 1 यदि इ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ के स्थान पर **आधा य (य)** हो जाता है।

(इ + भिन्न स्वर = य)

उदाहरण :-

1 प्रति + एक	2 अति + अधिक	3 देव्यर्पण = देवी + अर्पण
--------------	--------------	----------------------------

प्रत् इ+ एक

अत् इ+ अधिक

4 नद्यन्त = नदी + अन्त

प्रत् य् एक

अत् य् + अधिक

5 वाण्युचित – वाणी+उचित

प्रत्येक

अत्यधिक

6 न्य – नि + अ

नियम-2 यदि उ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो उ के स्थान पर **आधा व (व)** हो जाता है।

(उ+भिन्न स्वर = व)

उदाहरण-1 अन्वय = अनु+अय, 2 गुरु +आज्ञा = गर्वाज्ञा 3 वधु+आगमन = वध्वागमन,

4 तनु+अंगी = तन्वंगी, 5 अनु+ऐषण = अन्वेषण 6 भू+आदि = भ्वादि

7 साधु+आचार= साध्वाचार

नियम-3 यदि ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ऋ के स्थान पर **आधा र(र)** हो जाता है।

(ऋ+ भिन्न स्वर = र)

उदाहरण-1 पितृ +आज्ञा = पित्राज्ञा 2 मातृ+ आज्ञा = मात्राज्ञा 3 मातृ+इच्छा = मात्रिच्छा

नियम-4 यदि लृ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो लृ के स्थान पर **आधा ल(ल)** हो जाता है।

(लृ+भिन्न स्वर = ल)

उदाहरण-1 लृ+आकृति-लाकृति 2 लृ+औष्ठ –लौष्ठ (ल+ऊष्ठ, यह विच्छेद गुण सन्धि के नियम से किया गया है ,लेकिन विच्छेद सही नहीं है। क्योंकि ऊष्ठ का कोई अर्थ नहीं होता।)

पहचान:- यदि शब्द के मध्य में य,र,ल,व दिखाई दे और उनसे पहले कोई आधा अक्षर हो तो वहां यण सन्धि होगी।

5 अयादि सन्धि

नियम-1 यदि ए के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ए के स्थान पर **अय्** हो जाता है।

(ए +भिन्न स्वर = अय)

उदाहरण-(1)चे +अन =चयन, (2)ने +अन = नयन (3)शे + अन =शयन (4)संचे +अ= संचय

नियम-2 यदि ऐ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ऐ के स्थान पर **आय्** हो जाता है।

(ऐ + भिन्न स्वर = आय)

उदाहरण-(1) नै+अक = नायक, (2) गै+अक = गायक, (3) नै + इका = नायिका

नियम-3 ओ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ओ के स्थान पर **अव्** हो जाता है।

(ओ + भिन्न स्वर = अव्)

उदाहरण-1. भो+ अन

2 पो + अन

3 धवन = धो + अन

भ् ओ + अन

प् ओ + अन

4 हवन = हो +अन

भ् अव् + अन

प् अव् + अन

भवन

पवन

नियम :- 4 यदि औ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो औ के स्थान पर **आव्** हो जाता है

(औ + भिन्न स्वर =आव्)

उदाहरण :- 1 पौ +अक

2 नौ +इक

3 धौ +अक

4 धौ + इका

प ओ + अक

न ओ + इक

ध ओ + अक

ध ओ + इका

प आव् + अक

न आव् + इक

ध आव् + अक

ध आव् + इका

पावक

नाविक

धावक

धाविका

पहचान :- यदि शब्द के मध्य में य,व दिखाई दे और उनसे पहले कोई पूरा अक्षर हो तो वहां अयादि सन्धि होगी तथा जिस शब्द की ध्वनि में अय्, आय्, अव्, आव् की ध्वनि सुनाई दे वहां अयादि सन्धि होगी।



(ब) व्यंजन सन्धि

परिभाषा :- जब व्यंजन से व्यंजन का या व्यंजन से स्वर का या स्वर से व्यंजन का परस्पर मेल हो और उसमें ध्वनि विकार उत्पन्न हो तो उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

व्यंजन + व्यंजन (वाक् + जाल = वाग्जाल)

व्यंजन + स्वर (जगत् + ईश = जगदीश)

स्वर + व्यंजन (आ + छादन = आच्छादन)

नियम:-1 यदि किसी अघोष व्यंजन के बाद कोई घोष व्यंजन आए तो अघोष व्यंजन के स्थान पर घोष व्यंजन हो जाता है अर्थात् वर्ग के प्रथम/द्वितीय वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवा वर्ण/य,र,ल,व/स्वर आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

3 सदानन्द — सत् + आनन्द

उदाहरण -1 उद्विग्न

2 उद्यत

4 तद्रूप = तत् + रूप

उद्विग्न

उद्यत

5 चिद्रूप = चित् + रूप

उत् + विग्न

उत् + यत

6 अब्ज = अप् + ज

नियम:-2 यदि वर्ग के प्रथम अक्षर के बाद किसी भी वर्ग का पांचवा वर्ण आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के पांचवे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

उदाहरण:-1 वाक् + मय = वाङ्मय 2 दिक् + नाथ = दिङ्नाथ

3 जगत् + नाथ = जगन्नाथ

4 सत् + मार्ग = सन्मार्ग

5 सत् + नारी = सन्नारी

6 विद्युत् + माला = विद्युन्माला

7 एतत् + मुरारी = एतन्मुरारी

नियम:-3 यदि ह्रस्व स्वर (अ,इ,उ,ऋ) के बाद छ आए तो दोनों के बीच में आधा त(त्) आता है लेकिन त् के स्थान पर च् का प्रयोग किया जाता है

(अ,इ,उ,ऋ + छ = त् - च्)

उदाहरण:- सन्धि + छेद

2 स्व + छन्द = स्वच्छन्द

सन्धि इ + छेद

3 वि + छेद = विच्छेद

सन्धि त् छेद

4 तरु + छाया = तरुच्छाया

सन्धि च् छेद

5 पितृ + छाया = पितृच्छाया

सन्धिच्छेद

नियम:- 4 (1) यदि त् या द् के बाद च या छ आए तो त् या द् के स्थान पर च् (आधा च) हो जाता है। (2) यदि त् या द् के बाद ज या झ आए तो त् या द् के स्थान पर ज् (आधा ज) हो जाता है। (3) यदि त् या द् के बाद ट या ठ आए तो त् या द् के स्थान पर ट् (आधा ट) हो जाता है। (4) यदि त् या द् के बाद ड या ढ आए तो त् या द् के स्थान पर ड् (आधा ड) हो जाता है।

(5) यदि त् या द् के बाद ल आए तो ल के स्थान पर ल् (आधा ल) हो जाता है।

(त्, द् + च, छ = च्)
(त्, द् + ज, झ = ज्)
(त्, द् + ट, ठ = ट्)
(त्, द् + ड, ढ = ड्)
(त्, द् + ल = ल्)

उदाहरण:-1 उत् + चारण = उच्चारण

2 सत् + चरित्र = सच्चरित्र

3 सत् + जन = सज्जन

4 जगत् + छाया = जगच्छाया

5 उद् + ज्वल = उज्ज्वल

6 तत् + टीका = तट्टीका

7 बृहत् + टीका = बृहट्टीका

8 उत् + डयन = उड्डयन

9 तत् + लीन = तल्लीन

10 उज् + लास = उल्लास

11 उत् + छिन्न = उच्छिन्न

नियम:- (5) यदि त् के बाद श आए तो त् का च् और श का छ् हो जाता है।

त्	श
↓	↓
च्	छ्

उदाहरण:- 1 तत् + शिव

2 उत् + श्वास = उच्छ्वास

3 उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

तच् + छिव

4 उत् + श्लोकेन = उच्छ्लोकेन

तच्छिव

5 श्रीमत् + शरत् + चन्द्र

6 श्रीमच् + छरच् + चन्द्र = श्रीमच्छरचन्द्र

नियम:- (6) यदि त् के बाद ह आए तो त् का द् एवं ह का ध हो जाता है।

त् + ह
↓ ↓
द् + ध

उदाहरण:- 1 पत् + हति

2 उत् + हरण

3 तत् + हित

पद् + धति

उद् + धरण

तद् + धित

पद्धति

उद्धरण

तद्धित

नियम:- 7 यदि म् के बाद अन्तस्थ (य, र, ल, व) / उष्म (श, ष, स, ह) व्यंजन आए तो म् का अनुस्वार हो जाता है।

(म् + अन्तस्थ / उष्म व्यंजन = अनुस्वार)

उदाहरण:—1 सम् + वाद = संसार 2 सम् + सार = संसार
3 सम् + शय = संश 4 सम् + हार = संहार

नियम:—8 यदि म् के बाद अन्तस्थ (य, र, ल, व) / ऊष्ण (श, ष, स, ह) व्यंजन आए तो म् का अनुस्वार हो जाता है। (म्+ अन्तस्थ /ऊष्ण व्यंजन = अनुस्वार)

उदाहरण:—1 सम्+वाद = संवाद, 2 संसार= सम्+सार, 3 संशय= सम् + शय

नियम —8 यदि ष के बाद त, थ, न आए तो त्, थ्, न् के स्थान पर ट, ठ, ण, हो जाता है।

ष+ त	थ	न
↓	↓	↓
ट	ठ	ण

उदाहरण— 1 अधिष्ठाता = अधिष्+थाता, 2 विष्णु= विष् +नु,
3 कृष्ण = कृष्+न, 4 युधिष्ठिर = युधिष्+थिर

नियम—9 यदि इ, उ, ए, के बाद दन्तव्य 'स' आए तो स , ष में परिवर्तित हो जाता है।
(इ, उ, ए,+स = ष)

उदाहरण—1 नि+साद = निषाद, 2 अनु+संगी = अनुषंगी ,
3 अधिष्ठाता= अधि+ स्ठाता 4 वि+साद = विषाद

☆ (स) विसर्ग सन्धि

— जंहा विसर्ग के बाद स्वर/व्यंजन आए वहां विसर्ग सन्धि होगी।(:+स्वर = व्यंजन)

नियम—1 यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद कोई घोष वर्ण (प्रत्येक वर्ण का तीसरा ,चौथा, पांचवा वर्ण य, र, ल, व, ह सभी स्वर एवं अनुस्वार (.) हो तो विसर्ग के स्थान पर ओ हो जाता है। (अ: +घोष वर्ण = ओ)

उदाहरण:—1 यश: +दा = यशोदा , 2 मन: +हर = मनोहर, 3 मन:+ ज = मनोज,
4 अध:+ भाग = अधोभाग 5 मनोविकार= मन:+विकार, 6 पय: +द पयोद

नियम—2 यदि विसर्ग से पहले अ हो एवं बाद में भी अ हो तो : विसर्ग के स्थान पर ओ हो जाता है एवं बाद वाले अ का लोप हो जाता है। (अ:+ अ् = ओ)

उदाहरण:— 1 मन:+अनूकूल = मनोनुकूल 2 मनोभिलाषा = मन: अभिलाषा
3 कोऽपि = क: +अपि

नियम—3 यदि विसर्ग से पहले छोटा इ, उ, हो तथा विसर्ग के बाद च, छ, श, हो तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है। (इ,उ : + च,छ, श = श्)

उदाहरण:— 1 नि:+चल = निश्चल, 2 नि:+ छल = निश्छल, 3 दु: +चरित्र = दुश्चरित्र,
4 नि : +शक = निश्शक, 5 नि: +शशांक = निश्शशांक, 6 नि: + चय = निश्चय

नियम—4 यदि विसर्ग से पहले इ, उ, व सभी स्वर तथा बाद में त, थ, स हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। (इ,उ : + त,थ, स = स्)

उदाहरण— (1) सर्वस्सर्पति = सर्वः + सर्पति,

(2) नि :+ तेज = निस्तेज

(3) दु : +तर = दुस्तर

(4) दु : +साहस = दुस्साहस

नियम —5 यदि विसर्ग से पहले अ, ओ, हो तथा बाद में क,त,प हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। (अ, ओ : + क, त, प =स)

उदाहरण—(1) नम : +कार = नमस्कार,

(2) भा : +पति = भास्पति ,

(3) नम : + ते = नमस्ते

(4) भा: + कर = भास्कर

अध्याय 3 —समास

— दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने सार्थक शब्दों के समूह को समास कहते हैं।

— समास **6 प्रकार** के होते हैं—1 तत्पुरुष समास 2 कर्मधारय समास 3 बहुब्रिही समास

4 अव्ययीभाव समास 5 द्विगु समास 6 द्वन्द्व समास

1 द्विगु समास

नियम:— संख्या समूह तो द्विगु होगा।

—द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची और दूसरा पद समूहवाची होता है।

—एक से दस तक की संख्याएं तथा 20,30,40,50,60,70,80,90,100,1000 एक लाख आदि संख्याएं भी इसी में आती हैं।

उदाहरण:— 1 सतसई — सौ वर्षों का समूह

2 सप्ताह — सात दिनों का समूह

3 सप्तर्षि — सात ऋषियों का समूह

4 पंजाब —पांच नदियों का समूह

5 चौराहा — चार राहों का समूह

6 चवन्नी —चार आनों का समूह

7 शताब्दी — सौ वर्षों का समूह

8 त्रिलोक — तीन लोकों का समूह

9 पंचवटी — पांच वटों का समूह

10 अष्टाध्यायी = आठ अध्यायों का समूह

11 त्रिवेदी = तीन वेदों का समूह

12 चतुर्भुज = चार भुजाओं का समूह

13 त्रिनेत्र = तीन नेत्रों का समूह

14 दसानन = दस आननों का समूह

15 त्रिवेणी = तीन धाराओं का समूह

16 त्रिभुज =तीन भुजाओं का समूह

2 द्वन्द्व समास

—इस समास में दोनों पद समान होते हैं।

—दोनों शब्द एक दूसरे के विलोमार्थी होते हैं।

—समास विग्रह करने पर और, तथा, या एवं अथवा शब्द का प्रयोग होता है।

— दोनों पदों के बीच योजक चिन्ह (—) का भी प्रयोग होता है।

— दस के बाद की सभी संख्याएं जो द्विगु समास में न हो।

(10,20,30,40,50,60,70,80,90,100,100,1000 आदि को छोड़कर) जैसे — 11,26,45,58,72,99,135

आदि। **उदाहरण:—**1 माता—पिता = माता और पिता 2 शीतोष्ण = शीत और उष्ण

- 3 धर्मधर्म = धर्म और अधर्म 4 यशापयश = यश और अपयश
5 आन –बान –शान = आन ,बान और शान 6 बानवे = नब्बे और दो
7 लाल–पाल–बाल = लाल, पाल और बाल 8 रात–दिन = रात और दिन
9 दस – बीस =दस और बीस 10 एक – दो = एक और दो
11 पचास – साठ = पचास और साठ 12 छब्बीस = छः और बीस
13 चाय– वाय = चाय आदि 14 पानी –वानी = पानी इत्यादि
15 रोटी – वोटी = रोटी इत्यादि 16 पिता– पुत्र =पिता और पुत्र
17 भाई –बहिन = भाई और बहिन 18 पति –पत्नि = पति और पत्नि
19 राजा– रानी = राजा और रानी 20 राजा –प्रजा =राजा और प्रजा
21 अमीर –गरीब = अमीर और गरीब 22 हानी –लाभ =हानी और लाभ
23 बाहर – भीतर = बाहर और भीतर 24 ऊपर – नीचे = ऊपर और नीचे
25 यहां –वहां = यहां और वहां 26 चप्पल–जूता = चप्पल और जूता
27 पचपन = पचास और पांच 28 रोटी–कपड़ा–मकान = रोटी,कपड़ा और मकान
29 बाईस = बीस और दो

3 बहुब्रीहि समास

नियम:- इस समास मे न तो पूर्व पद प्रधान होता है और न ही उत्तर पद प्रधान होता है।दोनों पद मिलकर एक विशिष्ट अर्थ अथवा तीसरे अर्थ का बोध करवाते है अर्थात इस समास मे अन्य पद की प्रधानता रहती है।

– दोनों पद गौण होते है

– समास –विग्रह करने पर जिसका, जिसके,आदि शब्दों का प्रयोग करके तीसरा अर्थ ज्ञात करते है।

नोट:- इस समास में जिन नगरों को बसाया गया या आबाद किया गया है उन नगरों में भी बहुब्रीहि समास होता है।

उदाहरण : 1 जयपुर = राजा जयसिंह द्वारा बसाया गया पुर

2 जोधपुर = राव जोधा द्वारा बसाया गया पुर

3 हैदराबाद = हैदरअली ने आबाद किया है जिस पुर को

4 तुगलकाबाद =तुगलक ने आबाद किया है जिस पुर को

5 त्रिनेत्र = तीन है आंखे जिसकी (शिवजी) 6 लम्बोदर = लम्बा है जिसका पेट (गणेश)

7 श्वेताम्बर =श्वेत है अम्बर जिसके 8 बाघाम्बर = बाघ का अम्बर है जिसका (शिव)

9 पंकज = पंक मे जन्म लेने वाला 10 दशानन = दस है आनन जिसके

11 मुरारि = मुर नामक राक्षस का अरि है जो (कृष्ण)

12 कंसारि = कंस का अरि है जो (कृष्ण)

13 मूषकवाहन = मूषक का वाहन है जिसके 14 चन्द्रचूड़ =चन्द्रमा है जिसके चूड़ पर

15 चन्द्रमोली = चन्द्र है जिसके मोली (ललाट) पर (शिव)

16 गंगाधर = गंगा को धारण करने वाले है जो

17 पापमोचनी = पापों का नाश करने वाली है जो

18 जलद = जल को देने वाला है जो 19 जलधि = जल को धारण करने वाला है जो

20 रत्नाकर = रत्नों का आकर (खजाना) है जो

21 वीणापाणी = पीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)

22 चक्रपाणी = चक्र है जिसके हाथ में (विष्णु)

23 चतुरानन = चार है मुंह जिसके (विष्णु) 24 षडानन = छः है मुंह जिसके (कार्तिकेय)

25 शूलपाणी = त्रिशूल है जिसके हाथ में (शिव)

26 नीलकण्ठ = नीले है जिसके कण्ठ (शिव)

27 सोमित्र = सुमित्रा के है जो पुत्र (लक्ष्मण)

नोट:—1 अ, अन्, ना उपसर्गों से निर्मित शब्द नन् तत्पुरुष समास में आते है।

2 कु, सु, दुर्, दुस्, निर्, निस् इत्यादि उपसर्गों से निर्मित पद कर्मधारय/बहुब्रीहि समास के उदाहरण भी होते है, लेकिन जब विकल्प में कर्मधारय/बहुब्रीहि न होकर अव्ययीभाव समास ही हो तो ऐसी स्थिति में ये अव्ययीभाव की श्रेणी में गिने जाएंगे।

— समास की पहचान के लिए हमें समास —विग्रह पर ध्यान देकर विकल्प को चुनना चाहिए।

जैसे :— 1 शिव के त्रिनेत्र ने कामदेव को भस्म कर दिया।

2 त्रिनेत्र ने कामदेव को भस्म कर दिया।

— प्रथम वाक्य में त्रिनेत्र शब्द में द्विगु समास है लेकिन द्वितीय वाक्य में त्रिनेत्र में बहुब्रीहि समास है।

— कर्मधारय व बहुब्रीहि समास के उदाहरणों की पहचान विग्रह के द्वारा ही की जा सकती है। **जैसे—**1 लम्बा है उदर जिसका — लम्बोदर 2 नीला है कण्ठ जिसका — नीलकण्ठ

(दोनों उदाहरणों में बहुब्रीहि समास हैं।)

— 1 नीला है कण्ठ जो — कर्मधारय 2 लम्बा है उदर जो — लम्बोदर

(दोनों उदाहरणों में अब कर्मधारय समास है।)

4 अव्ययीभाव समास

— जहां पहला पद अव्यय (जिसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता) या उपसर्ग हो तथा एक ही शब्द की आवृत्ति बार —बार हो वहां अव्ययीभाव समास होता है।

उदाहरण :—(1) यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार

(2) यथारूप = रूप के अनुसार

(3) यथाक्रम = क्रम के अनुसार

(4) यथेच्छा = इच्छा के अनुसार

(5) यथाभाव = भाव के अनुसार

(6) यथाचक्र = चक्र के अनुसार

उपसर्ग के उदाहरण :- 1 प्रत्येक = हर पल, 2 हर पल = प्रत्येक पल, 3 प्रतिक्षण = हर क्षण
4 प्रतिदिन = हर दिन, 5 आजन्म = जन्म से लेकर, 6 आमरण = जन्म से मृत्यु पर्यंत तक
7 हाथोंहाथ = हाथ ही हाथ, 8 दिनोंदिन = दिन ही दिन, 9 रातोंरात = रात ही रात

5 कर्मधारय समास

- कर्मधारय समास में एक पद विशेषण होता है तो दूसरा पद विशेष्य।
- इसमें कहीं कहीं उपमेय उपमान का सम्बन्ध होता है तथा विग्रह करने पर **रूपी** शब्द प्रयुक्त होता है। उदाहरण :- महापुरुष — महान् है जो पुरुष
पीताम्बर — पीत है जो अम्बर नराधम — अधम है जो नर
कुमति — कुत्सित जो मति चरम सीमा — चरम है जो सीमा
राजर्षि — जो राजा भी है और ऋषि भी चरणारविन्द — चरण रूपी अरविन्द
चन्द्र मुख — चन्द्र जैसा मुख वचनामृत — वचन रूपी अमृत

अध्याय 4 — शब्द विचार

शब्द— वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

प्रकार

(अ) स्त्रोत/उत्पत्ति के आधार पर	(ब) बनावट/रचना के आधार पर	(स) अर्थ के आधार पर	(द) रूप परिवर्तन के आधार पर
↓	↓	↓	↓
1. तत्सम	1. रूढ़ शब्द	1. एकार्थी	1. विकारी
2. तद्भव	2. यौगिक	2. अनेकार्थी	2. अविकारी
3. देशज	3. यौगरूढ़	3. विलोम	
4. विदेशज		4. पर्यायवाची	
5. संकर		5. युग्म — शब्द/सम—श्रुति भिन्नार्थक	

(अ) 1. तत्सम :- तत्+सम दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है— उसके समान अर्थात् वे शुद्ध संस्कृत के शब्द जिनका प्रयोग ज्यों का त्यों हिन्दी में करते हैं।

जैसे— नासिका, चक्षु, अक्षर, चूर्ण, ग्रीवा, हस्त, हाथी आदि।

2. तद्भव शब्द— वे संस्कृत के शब्द जिनमें लम्बे समय के बाद परिवर्तन हो गया है। जिनका प्रयोग हम हिन्दी में करते हैं।

जैसे — नाक, चावल, चूरा, हाथ, गर्दन, आँख, आदि।

3. देशज शब्द – जिन शब्दों का जन्म एक अंचल विशेष में होता है। अर्थात् वे क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द जिनका प्रयोग हम हिन्दी में करते हैं, देशज शब्द कहलाते हैं।

जैसे – लोटा, डण्डा, लता, खिड़की, बयार आदि।

4. विदेशी शब्द :- अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसिसी, अरबी, फारसी, उर्दू आदि विदेशी भाषाओं के शब्द जिनका प्रयोग हम हिन्दी भाषा में करते हैं।

जैसे– किताब, आलपीन, रिक्शा, क्रिकेट, अलमारी, बॉलीबाल, फुटबाल आदि।

5. संकर शब्द – जंहा दो भाषाओं के शब्द मिश्रित रहते हैं संकर शब्द कहलाते हैं।

जैसे–1 रेलगाड़ी, (यंहा रेल शब्द अंग्रेजी तथा गाड़ी शब्द हिन्दी का है।)

2 टिकिटघर, (यंहा टिकिट शब्द अंग्रेजी तथा घर शब्द हिन्दी का है।)

3 उड़नतस्तरी (यंहा उड़न शब्द अरबी तथा तस्तरी शब्द हिन्दी का है।)

(ब)1. रूढ़ शब्द – रूढ़ का शाब्दिक अर्थ रूढ़ी या परम्परा होता है। वे शब्द जो परम्परा से एक निश्चित अर्थ ग्रहण करते आ रहे हैं।

जैसे– घर, देव, कपड़ा पुस्तक, गंगा, उदर, कान, आँख आदि।

2. यौगिक शब्द – वे शब्द जो एकाधिक रूढ़ शब्दों के योग से या किसी रूढ़ शब्द में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। **जैसे**– विद्यालय, देवालय, पुस्तकालय, रसोईघर, प्रहार, प्रबल, सौन्दर्य, मधुरता, सुन्दरता आदि।

3 योग रूढ़ शब्द– वे शब्द जंहा एकाधिक रूढ़ शब्द या किसी रूढ़ शब्द में उपसर्ग या प्रत्यय लगकर बनते हैं लेकिन ये शब्द एक विशेष अर्थ का बोध करवाते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि समास के उदाहरणों की भांति एक विशिष्ट अर्थ का बोध करवाते हैं।

जैसे– नीलकण्ठ, लम्बोदर, गजानन्द, चन्द्रचूड़, पीताम्बर, श्वेताम्बर आदि।

(स)1. एकार्थी शब्द –वे शब्द जो एक ही अर्थ का बोध करवाते हैं। **जैसे**–देव, जल, वस्त्र आदि।

2. अनेकार्थी शब्द –वे शब्द जिनके अनेक अर्थ निकलते हो।

जैसे– अर्क (रस तथा सूर्य), कर (किरण, हाथ तथा हाथी की सूण्ड)

3. विलोम शब्द – वे शब्द जो विपरीत अर्थ का बोध करवाते हैं।

4. पर्यायवाची शब्द – वे शब्द जो समान अर्थ का बोध करवाते हैं।

5. युग्म शब्द/सम-श्रुति भिन्नार्थक – वे शब्द जो उच्चारण की दृष्टि से समान लगते हैं, लेकिन अर्थ अलग-अलग होता है। **जैसे**– i तरणी – नाव ii अंस – कंधा

तरणि – सूर्य अंश – हिस्सा

iii सूत – सूर्य /धागा iv कुल – योग /जोड़

सुत – पुत्र

कूल – किनारा

(द)1. विकारी शब्द – वे शब्द जिनमें कर्ता, लिंग, वचन, कारक व काल के अनुसार परिवर्तन होता है विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्द 4 प्रकार के होते हैं–

i संज्ञा ii सर्वनाम iii विशेषण iv क्रिया

2. अविकारी/अव्यय शब्द — वे शब्द जिनमें कर्ता ,लिंग ,वचन , कारक व काल के अनुसार परिवर्तन नहीं होते हैं, अविकारी शब्द कहलाते हैं। अविकारी शब्द 4 प्रकार के होते हैं—

i क्रिया-विशेषण, ii समुच्चय बोधक iii सम्बन्ध बोधक iv विस्मयादि बोधक

अध्याय 5 —संज्ञा

संज्ञा— संज्ञा का शाब्दिक अर्थ — नाम होता है। जो सम्+ज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ सम्यक प्रकार से ज्ञान होता है।

- किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, घटना, या पदार्थ के नाम को संज्ञा कहते हैं।

—संज्ञा के मूल रूप से तीन भेद होते हैं—

1. व्यक्ति वाचक संज्ञा 2. जाति वाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा

नोट — अंग्रेजी में संज्ञा के 5 भेद होते हैं—

1. व्यक्ति वाचक 2. जाति वाचक 3. भाव वाचक 4. द्रव्य वाचक 5. समूह वाचक

— लेकिन हिन्दी में अंग्रेजी के अन्तिम दो भेद द्रव्य वाचक और समूह वाचक जाति वाचक संज्ञा के ही भेद होते हैं। अर्थात् यह दोनों संज्ञाएं जाति वाचक संज्ञा के अन्तर्गत आती हैं।

— संस्कृत में भी संज्ञा के तीन ही भेद माने गए हैं तो संस्कृत के अनुरूप हिन्दी में भी मूलरूप से संज्ञा के 3 ही भेद होते हैं।

1. व्यक्ति वाचक संज्ञा :— किसी व्यक्ति वस्तु, स्थान, घटना या पदार्थ विशेष के नाम को व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— राम ,मोहन, सीता ,रामायण, महाभारत, हिमालय ,सतपुड़ा, गंगा, जलियावाला बाग हत्याकाण्ड, खानवा का युद्ध, ताजमहल , कुतुबमीनार आदि।

उदाहरण — 1. खानवा का युद्ध राणा सांगा व बाबर के मध्य हुआ।

- | | |
|-----------------------------|------------------------------|
| 2. हिमालय भारत का मुकूट है। | 3. गंगा हिमालय से निकलती है। |
| 4. ताजमहल सुन्दर है। | 5. गीता रामायण पढ़ती है। |

नोट— देशों के नाम , विद्यालय व कोंचिंग संस्थानों के नाम , नदियों व पर्वतों के नाम , दिन, माह ,गृहों के नाम, समाचार पत्रों व पुस्तकों के नाम , युद्धों के नाम आदि व्यक्ति वाचक संज्ञा में आते हैं।

— लेकिन जब बहुत व्यक्ति ,वस्तु ,स्थान आदि के नाम जाति वाचक संज्ञा होने पर भी व्यक्ति वाचक संज्ञा बन जाते हैं अर्थात् बहुत में से एक को ही विशेष बताया जाए।

जैसे—1 जानवरों में शेर ताकतवर होता है। (इस वाक्य में शेर शब्द व्यक्तिवाचक होगा)

2 शेर ताकतवर होता है। (इस वाक्य में शेर शब्द जातिवाचक है।)

3 फलों में आम रसीला है। (इस वाक्य में आम व्यक्तिवाचक संज्ञा है।)

(2)जातिवाचक संज्ञा :—जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, या पदार्थ की जाति का बोध होता है अथवा समूह का बोध होता है। अथवा द्रव पदार्थों का बोध होता हो तो वह जातिवाचक संज्ञा

कहलाती है। **जैसे**— जानवर, फल, फूल, पेड़-पौधे, मनुष्य, औरत, आम, चीकू, केला, खरबूजा, तरबूज, पपीता, पुस्तक, शेर, चीता इत्यादि।

उदाहरण— 1 सर्दियों में गर्म दूध पीना चाहिए। 2 आज शिक्षकगण की आम हड़ताल है।

3 शेर ताकतवर है। 4 आम रसीला है।

नोट— जब एकवचन गुणवाचक शब्द बहुवचन के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। तब एकवचन गुणवाचक शब्द भी जातिवाचक बन जाते हैं। **जैसे**— 1 ताजा मिठाइयों की दुकान खुली है।

3. भाववाचक संज्ञा — जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पदार्थ के भाव का बोध होता है। इनके गुण, धर्म बताए तथा आई, आव, आवा, आहट, आवट, ता, त्व, पन, आपा, आना, आनी, गी, य, इत्यादि प्रत्ययों से बनने वाले शब्द भी भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।

उदाहरण— 1 राम की लिखाई सुन्दर है। 2 हिन्दू-मुस्लिमों में तनाव चल रहा है।

3 मीरा की लिखावट सुन्दर है। 4 मीरा को आज घबराहट हो रही है।

5 बुढ़ापा अनेक बीमारियों की जड़ है। 6 जवानी में अनेक भूले होती हैं।

7 मोदी जी ने लोगो को गंदगी के प्रति जाग्रत किया है।

8 सुन्दरता से व्यक्ति का मन खुश होता है।

9 गलत दिशा में गाड़ी चलाने पर दौ सो रुपए जूरमाना लगता है।

10 मनुष्यता देवत्व की निशानी है। 11 बचपन बड़ा सुहावना होता है।

12 ताज महल का सौन्दर्य फीका पड़ रहा है।

अध्याय 6 —सर्वनाम

सर्वनाम— सर्वनाम शब्द का अर्थ — सब का नाम होता है, संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त करने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। सर्वनाम के छः भेद हैं—

(अ) **पुरुष वाचक सर्वनाम**— वक्ता जिन शब्दों का प्रयोग अपने लिए या श्रोता के लिए अथवा अन्य किसी के लिए करता है तो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

इसके तीन भेद हैं— i उत्तम पुरुष ii मध्यम पुरुष iii अन्य पुरुष

i उत्तम पुरुष :— वक्ता जिन शब्दों का प्रयोग स्वयं के लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुष के अन्तर्गत रखा जाता है। **जैसे**— मैं, मुझे, मेरा, मेरी, मेरे, हम, हमारा, हमारे, हमारी, आदि।

उदाहरण— 1 मैं पढ़ रहा हूँ। 2 मुझे जाना है।

ii मध्यम पुरुष :— जिन शब्दों का प्रयोग श्रोताओं के लिए किया जाता है। वे इसके अन्तर्गत आते हैं। **जैसे**— तु, तुम, तुम्हारा, तेरा, तुझे, तुम्हें, तुम्हारी, तुम्हारे आदि।

उदाहरण— 1 तुझे मार डालूंगा, 2 तु मेरी सांसो में बसता है।

iii अन्य पुरुष :— जिन सर्वनाम शब्दों का वक्ता न तो अपने लिए और न ही श्रोता के लिए प्रयोग कर, अन्य किसी के लिए करें तो उसे अन्य पुरुष कहते हैं।

जैसे— वे, उसे, उसका, उसकी, वह, यह, ये, आदि।

उदाहरण— 1. वे खेल रहे हैं। 2. यह जा रहा है।

(ब) निश्चय वाचक सर्वनाम :— वे सर्वनाम शब्द जो निश्चित संज्ञा या निश्चित सर्वनाम का बोध कराते हैं। जैसे— यह, वह, ये, वे, आदि।

उदाहरण— 1. यह मालती है। 2. वे कुत्ते हैं। 3. वह बन्दर है

(स) अनिश्चय वाचक सर्वनाम— वे सर्वनाम शब्द जिनसे निश्चित संज्ञा या सर्वनाम का बोध नहीं होता है तथा सदैव अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है। जैसे— कोई, (एक वचन हेतु), कई (बहुवचन हेतु) कुछ (सजीव व निर्जीव वस्तुओं हेतु)

उदाहरण— 1. कोई छत पर बैठा है। 2. बाहर सड़क पर कई लोग खड़े हैं।

3. दही में कुछ पड़ा है।

(द) सम्बन्ध वाचक सर्वनाम:— वे सर्वनाम शब्द जो वाक्य के दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ सम्बन्ध बताते हो, अर्थात् वह एक संज्ञा या एक सर्वनाम वाक्य के दूसरे संज्ञा व सर्वनाम शब्द के साथ सम्बन्ध बताते हैं।

उदाहरण:—1. वह घड़ी मिल गई जो जन्म दिन पर मिली थी। 2. उस पंखे को उतार कर लाओ जो सालों से खराब पड़ा है। 3. वे सोहन के दादाजी हैं। 4. यह मालती की कार है।

नोट:— यह, वह, ये, वे, आदि सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक, निश्चयवाचक तथा सम्बन्ध वाचक सर्वनाम में प्रयुक्त होते हैं, लेकिन इन सर्वनामों का प्रयोग अन्य पुरुष में होता है तो किसी संज्ञा शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है, जबकि निश्चयवाचक सर्वनाम में इनके साथ एक ही संज्ञा शब्द का प्रयोग होता है, लेकिन सम्बन्धवाचक सर्वनाम में इनका प्रयोग किया जाता है तो दो संज्ञा या दो सर्वनाम शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(य) प्रश्न वाचक सर्वनाम:— वे सर्वनाम शब्द जो प्रश्न का बोध करवाए। जैसे — कौन, क्या,

उदाहरण—1. आप खाने में क्या लोगे? 2. आप क्या करते हो? 3. यहां कौन आया था।

(र) निजवाचक — वे सर्वनाम शब्द जो निजत्व का बोध करवाते हैं। अर्थात् जो सर्वनाम शब्द अपने लिए प्रयुक्त होते हैं। जैसे— स्वयं, खुद, स्वतः, अपना—अपना, अपनी—अपनी, अपने आदि।

उदाहरण— 1. मुझे खुद को पढ़ना चाहिए। 2. हमें अपना—अपना कार्य करना चाहिए।

(3) पानी स्वतः बह जाएगा।

4. हमें अपने बिस्तर रखने चाहिए।

5. मैं अपना गृहकार्य स्वयं करूंगा।

अध्याय 7 —विशेषण

— वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

— विशेषण चार प्रकार के होते हैं:—

(अ) गुणवाचक कवशेषण :— वे विशेषण शब्द जो रंग, रूप, गंध, स्पर्श, आकार, प्रकार, दोष, दशा, दिशा, अवस्था आदि का बोध करवाए।

जैसे:—मुलायम,खुरदरा,नीला, पीला,हरा,लंगड़ा,पूर्वी,दक्षिणी,नर्म,कठोर,सर्दी,गर्मी इत्यादि।

उदाहरण:—1 मेहनत करने से हाथ कठोर हो जाते हैं।

2 काली बकरी मीठा दूध देती है। 3 सर्दी में लोग बाहर नहीं निकलते।

4 गर्मियों में लोग शीतल पेय पीते हैं।

5 बीकानेरी नमकीन में मुल्तानी मिट्टी मिलाई जाती है।

नोट:—आई,ई,आ,इय,इमा, इल,ईला,आलू,आलु,ईय,अ,इयल आदि प्रत्यय गुणवाचक विशेषण होते हैं। 6 मेरा मित्र झगड़ालू है। 7 पूजा दयालु है। 8 हम भारतीय सीधे—साधे हैं।

प्रविशेषण:—वे शब्द जो विशेषण की भी विशेषता बताते हैं। जैसे:—ज्याद थोड़ा,बहुत,कम आदि।

उदाहरण:—1 मेरी माताजी कम मीठा भोजन करती हैं।

2 मेरा भाई झगड़ालू है। 3 मेरा मित्र बहुत झगड़ालू व्यक्ति है।

(ब) संख्यावाची विशेषण:—वे विशेषण शब्द जो संज्ञा का बोध करवाते हैं। जैसे:—10 आदमी, 5 पुलिसकर्मी,सैकड़ों लोग,करोड़ों आदमी आदि।

संख्यावाची विशेषण के दो भेद होते हैं:—(1) **निश्चित संख्यावाची:**— वे शब्द जो निश्चित संख्या का बोध करवाते हैं। जैसे:— दस आदमी, पांच केले, पांच पुस्तकें आदि।

उदाहरण:—(1) पांच पुलिस कर्मियों ने 500 आदमियों को दोड़ा—दोड़ा कर मारा।

(2) **अनिश्चित संख्यावाची विशेषण:**— वे शब्द जो निश्चित संख्या का बोध नहीं करवाते हैं।

जैसे:—सैकड़ों लोग,हजारों आम,लाखों पुस्तकें, 4—5 पेन आदि।

उदाहरण:— 1 सैकड़ों आदमी बाहर खड़े हैं।

(स)परिमाणवाचक विशेषण

— वे विशेषण शब्द जिनमें नाप,तौल व मात्रा सम्बन्धि विशेषताओं का बोध होता है।

जैसे:— दो मीटर कपड़ा,दो किलो चीनी, दो गज जमीन,सैकड़ों हैक्टेयर आदि।

—इसके दो भेद होते हैं:—

(1) **निश्चित परिमाणवाची:**—वे विशेषण शब्द जिनमें निश्चित नाप,तोल,मात्रा सम्बन्धि विशेषताओं का बोध होता है।

उदाहरण:— (1) रिलायन्स फ्रेश में दो किलो चीनी खरीदने पर दस ग्राम हरा धनिया मुफ्त मिलता है। (2) दो किलो आम खरीदने पर एक किलो पपीता मुफ्त मिलेगा।

(2) **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :**— वे विशेषण शब्द जो अनिश्चित नाप,तोल,मात्रा सम्बन्धि विशेषताओं का बोध होता है।

उदाहरण:— 1 मोतीलाल की मील में आग लगने पर सैकड़ों मीटर कपड़ा जल गया।

2 तेल टैंकर के पलट जाने से हजारों लीटर तेल बह गया।

3 पहलवान व्यायाम करने के पश्चात् सैकड़ों लीटर दूध पी जाता है।

(द) **सार्वनामिक/संकेतवाची विशेषण:**— वे विशेषण शब्द जो वाक्य के दूसरे संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं अथवा संकेत का बोध करवाते हैं। **जैसे:**— जो,सो,जैसा,वैसा,जिसे, जिसने, यह,वह आदि।

उदाहरण:—(1) उस पंखे को उतारकर लाओ जो बरसों से खराब पड़ है।

(2) जैसा बोओगे वैसा पाओगे। (3) जो करता है वो भरता है।

(4) उसे आज फाँसी लग गई जो कल टी. वी. पर बोल रहा था।

(5) उस लड़के को इधर लाओ जिसने कल चोरी की थी।

अध्याय 8 —कारक

— कारक शब्द कृ धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ—करना होता है, अर्थात् ऐसे संज्ञा व सर्वनाम के शब्द जो क्रिया के साथ सम्बन्ध को बताते हैं, उन्हें कारक कहा जाता है। कारक निम्न है—

कारक चिह्न



- 1 कर्त्ता कारक — ने
- 2 कर्म कारक — को
- 3 करण कारक — से, के द्वारा
- 4 सम्प्रदान कारक — के लिए
- 5 अपादान कारक — से (पृथक् हो के लिए)
- 6 सम्बन्ध कारक — का, के, की
- 7 अधिकरण कारक — में, पर
- 8 सम्बोधन कारक — हे!, अरे!

हे बच्चों ! राम ने रावण को बाण से सीता के लिए अयोध्या से रावण की लंका में मारा।

(1) कर्त्ता कारक:—वाक्य में जो कार्य करने वाला होता है अर्थात् काम करने वाला कर्त्ता होता है। कर्त्ता कारक के योग में ने विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण:— 1 राम ने रावण को मारा। 2 सीता ने गाना गाया।

3 मोहन पुस्तक पढ़ता है। 4 वे घूमने गये।

नोट:— भूतकाल के वाक्यों में ही कर्त्ता के साथ ने विभक्ति दिखाई देती है। लेकिन वर्तमान व भविष्यकाल तथा अकर्मक क्रिया के वाक्यों में कर्त्ता के साथ ने विभक्ति छिपी होती है।

(2) कर्म कारक:— कर्त्ता जिसको बहुत अधिक चाहता है अर्थात् कर्त्ता को जो फल मिलता है, उसमें कर्म कारक होता है। कर्म के योग में को विभक्ति होती है।

उदाहरण:— 1 राम ने रावण को मारा। 2 सीता ने गाना गाया। 3 मोहन पुस्तक पढ़ता है।

4 मोर सापों को खा रहा है। 5 नारद जी केले खा रहे हैं।

(3) करण कारक:—कर्त्ता कार्य करने के लिए जिस साधन/माध्यम को अपनाता है, उस साधन/माध्यम में करण कारक होता है। करण के योग में से, के द्वारा विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण:— 1 मोहन कलम से लिखता है। 2 गीता हवाई जहाज से लन्दन जाती है।

3 रमेश साइकिल से घूमने जाता है। (के द्वारा) 4 राधा चाकू से फल काटती है।

(4) सम्प्रदान कारक:—जब वाक्य में किसी को कुछ दिया जा रहा हो, बदले में कुछ भी लेने की भावना नहीं हो अर्थात् जब किसी को कुछ दी जाती है अर्थात् जिसको वस्तु दी गई है उसमें सम्प्रदान कारक होता है। जब कोई वस्तु अच्छी लगे अर्थात् अच्छे लगने के अर्थ में भी सम्प्रदान कारक होता है। सम्प्रदान कारक के योग में के लिए विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण:—(1) भारत ने नेपाल को आर्थिक सहायता दी।

(2) सेठ जी ने गरीबों को कम्बल बाँटे। (3) गीता बच्चों के लिए फल जाती है।

(4) राधा बहिन के लिए साड़ी लाती है।

(5) अपादान कारक:—(1) कोई व्यक्ति, वस्तु किसी स्थान से अलग हो रही है तो जिस स्थान से अलग हो रही है उस स्थान में अपादान कारक होता है।

(2) जिससे डर या भय लगता है। (3) जिससे तुलना की जाती है।

(4) जिससे लज्जा या शर्माया जाता है। (5) जिससे प्रेम, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि किया जाता है।

(6) जिससे शिक्षा या संस्कार लिए जाते हैं। (7) जिस तिथि, दिन, दिनांक तथा वर्ष से कार्य आरम्भ हो रहा हो। (इन सभी के योग में अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है।)

उदाहरण:— (1) मोहन कुत्ते से डरता है। (2) गंगा हिमालय से निकलती है।

(3) राधा जयपुर से अजमेर गयी। (4) गीता छत से कूद गई। (5) बच्चे अपरिचितों से शर्माते हैं।

(6) राधा कुत्ते से प्रेम करती है। (7) गीता राधा से ईर्ष्या करती है। (8) पेड़ से पत्ता गिरा।

(9) गीता राधा से बुद्धिमान है। (10) गीता ससूर से लजाती है।

(11) 26 दिसम्बर 2015 से क्रिकेट मैच आरम्भ होंगे।

(12) अर्जुन ने गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सिखी।

(13) बच्चे माता— पिता से संस्कार सिखते हैं।

(6) सम्बन्ध कारक:— वाक्य में जब एक संज्ञा या सर्वनाम शब्द का वाक्य के दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ सम्बन्ध का बोध कराया जाता है, वहाँ सर्वनाम शब्द का प्रयोग किया जाता है। सम्बन्ध कारक के योग में **का, के, की** विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण:— (1) राजा दशरथ राम के पिता थे। (2) यशोदा कृष्ण की माता थी।

(3) यह पुस्तक मेरी है।

(4) यह मेरा भाई है।

(7) अधिकरण कारक:— जब कर्त्ता किसी आधार को मानकर या अपनाकर कार्य करता है, तो उस आधार में अधिकरण कारक होता है। अधिकरण कारक के योग में **में, पर** विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसके दो भेद होते हैं:— (1) कालाधिकरण (2) स्थानाधिकरण

उदाहरण:— (1) गीता छत पर बैठी है। (2) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

(3) रमेश घोड़े पर बैठा है। (4) सीता दिन में नहीं सोती है। (5) मीरा पलंग पर सो रही है।

(6) मेंढक कुएं में टर्रा रहे हैं। (7) मोहन रात में खाना नहीं खाता है।

(8)सम्बोधन कारक:- जब किसी को सम्बोधित किया जाए अर्थात् पुकारा जाए तो वहां सम्बोधन कारक होता है। सम्बोधन कारक के लिए हे!, अरे!, अजी!, हे भगवान!, वाह! आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण:- (1) अरे! आप को इधर आना है। (2) अजी! आज घूमने नहीं गए।
(3) हे भगवान! मैं पास हो जाऊ। (4) अरे! कल तुम नहीं आए।

अध्याय 9 – वाक्य

वाक्य—शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

—वाक्य के दो अंग होते हैं— (1) उद्देश्य (2) विधेय

(1) उद्देश्य :- वाक्य में कार्य करने वाला उद्देश्य होता है। अर्थात् कर्ता ही उद्देश्य होता है।

(2) विधेय :- वाक्य में उद्देश्य अर्थात् कर्ता के द्वारा जो कार्य किया जाता है, वह विधेय कहलाता है। इसमें — कर्म+क्रिया दोनों होते हैं, या वाक्य में जब कर्ता नहीं होता है तब क्रिया विधेय होती है।

जैसे— राम पुस्तक पढ़ता है। — वाक्य में राम कर्ता कारक है और यह कर्ता कारक ही उद्देश्य है। तथा पुस्तक कर्म है और पढ़ता है क्रिया है। तो कर्म व क्रिया दोनों विधेय होंगे।

वाक्यों के प्रकार—

(अ) बनावट/रचना के आधार पर :-

1. सरल या साधारण वाक्य:- जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है वह सरल वाक्य होता है। जैसे— (1) मोहन पुस्तक पढ़ता है। (2) गाय दूध देती है।

(3) मोहन खाना पकाता है।

(2) मिश्र/मिश्रित वाक्य:- जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य होता है, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

ये वाक्य — कि, क्यों कि, ज्यों —त्यों, जैसे—वैसे, जिसे, जिसका, जिसको, चूंकि, इसलिए, ताकि आदि शब्दों से जुड़े हुए होते हैं।

उदाहरण— (1) गाँधी जी ने कहा कि सदा सत्य बोलो। (2) वह लड़की मिल गई जो मेले में खो गई थी। (3) मैंने जैसा सुना वह वैसा ही निकला। (4) जैसी करनी वैसी भरनी।

(5) ऐसा कौन भारतीय होगा जिसने भगत सिंह का नाम नहीं सुना होगा।

(6) भगवान ने जब आलू का निर्माण किया होगा तब उसे अपने ऊपर कितना गुमान होगा कि मेरे इतने रूप हैं।

3. संयुक्त वाक्य/जटिल वाक्य— जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य या मिश्रित उपवाक्य या कोई समानिकरण उपवाक्य किसी संयोजक अव्यय द्वारा जुड़ा हुआ हो तो उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। ये संयुक्त वाक्य किन्तु, परन्तु, लेकिन, अपितु, तथा, यद्यपि, तदापि, या, अथवा और, आदि शब्दों से जुड़ा हुआ हो। जैसे— (1) कृष्ण और बलराम भाई थे।

(2) राधा रेलवे स्टेशन गई लेकिन रेलगाड़ी जा चुकी थी।

(3) मदारी डमरू बजा रहा था और बन्दरिया नाच रही थी।

(4) मोहन या गोविन्द में से एक अजमेर जाएगा।

(5) मोहन की शादी हो जाती लेकिन लड़की नहीं मिली।

(ब) अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार:-

1. विधेयात्मक वाक्य:- जहां कार्य के करने या होने का भाव प्रकट हो रहा हो।

जैसे- (1) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है। (2) गीता खाना बना रही है। (3) सोहन खेल रहा है।

2. नकारात्मक वाक्य:- जिस वाक्य में कार्य न करने और न होने का भाव प्रकट होता हो।

जैसे- (1) राधा गाना नहीं गाएगी। (2) गीता रामायण नहीं पढ़ती है। (3) सीता दूध नहीं पीती है।

3. प्रश्न वाचक वाक्य- जिस वाक्य में प्रश्न किया गया हो उस वाक्य को प्रश्न वाचक वाक्य कहते हैं। जैसे- (1) आप खाने में क्या लोगे? (2) आपके पिताजी क्या करते हैं?

4. संकेत वाचक :- जब वाक्य में किसी कार्य के करने या होने का पूर्व संकेत हो।

जैसे- (1) यदि मैं परिश्रम करता तो पास हो जाता। (2) मैं गांव चला जाता तो मेरी शादी हो जाती।

5. संदेहार्थक:- जब वाक्य में किसी कार्य के करने या होने में संदेह या संभावना की गई हो। इन वाक्यों में वाक्य के प्रारंभ में शायद, सम्भव है, लगता है, हो सकता है, आदि शब्द जुड़े होते हैं। जैसे- (1) शायद कल मैं नहीं आऊंगा। (2) हो सकता है आज मैं गांव चला जाऊं। (3) लगता है आज कोई आने वाला है। (4) सम्भव है आज वर्षा हो जाए।

6. इच्छात्मक वाक्य- जिस वाक्य में कार्य करने की इच्छा का भाव प्रकट होता हो या आशीर्वाद, शुभकामना या बद्दुआ दी जाती हों।

जैसे- (1) खाना खा लेते हैं। (2) तुम्हारी यात्रा मंगलमय हों। (3) तुम दीर्घायु हो।

(4) तुम चिरंजीवी हो। (5) बुरी नजर वाले तुम्हारे बच्चे जीए ताकि बड़े होकर तुम्हारा खून पीए।

7. आज्ञार्थक:- जहां वाक्य में कार्य करने की आज्ञा दी जाए या निवेदन किया जाए या आदेश दिया जाए, धमकी दी जाए तो वहां आज्ञार्थक वाक्य होते हैं।

जैसे :- (1) कृपया गंदगी नहीं फैलाए। (2) इधर आकर बैठो। (3) आप जा सकते हैं। (4) तुम खेलने नहीं जाओगे। (5) आज खाना नहीं खाओगे।

8. सम्बोधन बोधक :- जहां वाक्य में कार्य करने के लिए सम्बोधित किया जाए अथवा पुकारा जाए। जैसे- (1) अरे! खाना खा लो। (2) अजी! आप क्या कर रहे हैं?

अध्याय 10 – विराम चिह्न

विराम चिह्न :- भाषा को बोलते/पढ़ते समय हमें थोड़े विराम की आवश्यकता होती है। जहां पर थोड़ा विश्राम करते हैं या रुकते हैं, ठहरते हैं, उसे भाषा में विराम कहा जाता है। लिखित

भाषा में इस विश्राम के स्थान पर जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, उसे विराम चिह्न कहते हैं। **जैसे—** (1) रोको , मत जाने दो। (2) रोको मत , जाने दो।

उपर्युक्त वाक्य से विराम चिह्नों का भाषा में क्या महत्व होता है, वह स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा है कि अल्पविराम का स्थान परिवर्तन करने पर वाक्य का अर्थ ही बदल जाता है।

() [] { }	—कोष्ठक	:-	विवरण चिह्न
" "	उद्धरण	,	अल्पविराम
	पूर्णविराम	",	अर्द्धविराम
-	योजक चिह्न	?	प्रश्न वाचक
.....	लोप या लुप्ताकार	!	विस्मयादिबोधक
o	लाघव या संक्षेपण —		निर्देशक
-0-0-	इति श्री	^	हंसपद / विस्मरण / त्रुटिबोधक

1. अल्पविराम(,) — बात करते समय या लिखते समय जहां पर थोड़े विश्राम की आवश्यकता होती है।

i समान वस्तुओं को अलग करने के लिए। जैसे— राम, सीता , पेन, गीता आदि।

उदाहरण:— (1) राम,सीता,गीता और सोहन बाजार गए।(2) मोहन आलू,मटर,टमाटर लेकर आए।

ii उद्धरण चिह्न से पूर्व प्रयोग।

उदाहरण— (1) गांधी जी ने कहा , “आराम हराम है” (2) हाँ, कल आना है।

2.अर्द्धविराम चिह्न(" ,)— बात करते समय या लिखते समय अल्पविराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से थोड़ा कम रूका जाता है तब वहां इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे—(1) प्रातः काल हुआ , पक्षी चहकने लगे और अपने —अपने घोंसलों से बाहर आ गए।

(2) तेज हवा चली , वर्षा हुई और ओले पड़े।

3.पूर्ण विराम — जहां पर हमारी बात पूर्ण हो जाती है और पूरा ठहराव करते हैं।

जैसे— (1) राधा नाच रही थी। (2) सोहन बाजार गया।

4. उद्धरण/अवतरण — इसका प्रयोग किसी के कथन या वाक्य को परिबद्ध करने के लिए किया जाता है। यह दो प्रकार के होते हैं—

i इकहरा (' ') — इसका प्रयोग किसी उपनाम किसी पुस्तक के नाम को अवतरित करने के लिए किया जाता है। **जैसे—**(1) ‘रामधारी दिनकर ’ ओजस्वी कवी थे।

(2) सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ ने ‘नए पत्ते’ कविता लिखी।

(3) जयशंकर प्रसाद ने ‘कामायनी’ लिखी।

ii दोहरा चिह्न—किसी के कथन या वाक्य के लिए प्रयोग। **जैसे—**गांधी ने कहा,“आराम हराम है।”

5. लाघव (0)— शब्दों को संक्षिप्त करने के लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे— (1) सुरेन्द्र ने एम. ए. की उपाधि प्राप्त की।

(2) पं. जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

6. त्रुटिबोधक (~) :— जहाँ पर लिखते समय किसी शब्द को भूल जाते हैं वहाँ इस का प्रयोग करके ऊपर लिख देते हैं।

जयपुर

जैसे— राम, जाएगा।

7. योजक चिह्न (—) : इसका प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने के लिए किया जाता है, तुलना वाचक शब्दों से पूर्व (सा, सी, से) भी किया जाता है।

उदाहरण— (1) सागर—सा गम्भीर हृदय, (2) माता—पिता (3) रात—दिन

8. विवरण चिह्न(—) —इसका प्रयोग विवरण देने के लिए किया जाता है

जैसे — निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिए:—

9. निर्देशक चिह्न (—) यह योजक चिह्न से बड़ा होता है इसका प्रयोग निर्देश देने के लिए तथा नाटकों में किया जाता है। जैसे— मनीषा — गीता क्या कर रही है।

गीता— मैं सो रही हूँ।

10. विस्मयादिबोधक :- जहाँ विस्मय, आश्चर्य, हर्ष, प्रसन्नता, दुःख, पीड़ा, आदि मनोविकारों या सम्बोधन करने के लिए किया जाता है।

जैसे—(1) अरे! इधर आना है। (2) अजी! कहां जा रहे हो?(3) हे भगवान! ये क्या हो गया है?

11. प्रश्नवाचक चिह्न (?) :— जहाँ पर प्रश्न किया जाता हो वहाँ प्रयोग किया जाता है—

जैसे:—(1) आप खाने में क्या लगे? (2) आपके पिताजी क्या करते हैं।

12. कोष्ठक चिह्न— () इसे छोटा कोष्ठक कहा जाता है। { } — इसे मंजला एवं इसे []— बड़ा कोष्ठक कहते हैं।

— मंजले व बड़े कोष्ठक का प्रयोग अधिकांश गणित के सवालों में किया जाता है जबकि छोटे कोष्ठक का प्रयोग हिन्दी में नाटकों के अन्दर पात्रों के हाव-भाव को बताने के लिए तथा किसी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।

जैसे:— (1) गीता (जोर से) सोहन को आवाज लगाती हैं

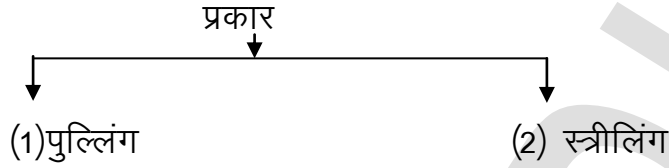
(2) रात्रि को आकाश में मयंक (चन्द्रमा) दिखाई देता है।

13 लोप चिह्न :- अपनी बातों व कथनों को लिखते समय कुछ शब्दों को छोड़ देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं तो वहाँ लोप चिह्न आते हैं। नाटकों में इस चिह्न का अधिक प्रयोग किया जाता है।

14 इतिश्री/समाप्ति चिह्न:—जहाँ पर कोई कविता, नाटक, कहानी अथवा जो भी हम लिखते हैं उसकी समाप्ति के बाद इस चिह्न का प्रयोग करते हैं।

अध्याय 11 –लिंग

- लिंग का शाब्दिक अर्थ— चिह्न या निशान होता है।
- जिस संज्ञा शब्द से नर या मादा जाति का बोध होता है,उसे लिंग कहा जाता है।
- लिंग दो प्रकार के होते हैं—



(1) **पुल्लिंगः**— जिस संज्ञा शब्द से नर जाति का बोध होता हो,उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे:— आदमी,मनुष्य,चीता,घोड़ा आदि।

निम्न शब्दों में सदैव पुल्लिंग होता है—

- (1) पर्वतों के नाम (हिमालय,विन्ध्याचल,सतपुड़ा आदि)
- (2) महिनों के नाम (जनवरी,चरवरी,चैत्र चाल्गुन आदि)
- (3) वारों के नाम (रविवार,सोमवार,शुक्रवार आदि)
- (4) ग्रहों के नाम (बुध,शुक्र,मंगल आदि) अपवाद— पृथ्वी,स्त्रीलिंग होता है।
- (5) सागर व महासागरों के नाम (प्रशान्त महासागर, लाल सागर, भू-मध्य सागर आदि)
- (6) देशों के नाम (भारत, अमेरिका, रूस, नेपाल आदि) अपवाद— श्रीलंका,स्त्रीलिंग होता है।
- (7) धातुओं के नाम (सोना,लोहा,पीतल आदि) अपवाद— चांदी,स्त्रीलिंग होता है।
- (8)मूल्यवान धातुओं(पत्थर व रत्न) के नाम (नीलम,पन्ना आदि) अपवाद—मणि,स्त्रीलिंग होता है।
- (9) शरीर के अंगों के नाम (हाथ,पैर,नाक आदि) अपवाद—जिह्वा,स्त्रीलिंग होता है।
- (10)देवताओं के नाम (विष्णु,कृष्ण राम आदि)
- (11) अनाजों के नाम (बाजरा,गेंहू,चना आदि) अपवाद— ज्वार व मेथी स्त्रीलिंग होता है।
- (12) द्रव पदार्थों के नाम (घी,दूध,पानी आदि) अपवाद— छाछ,स्त्रीलिंग होता है।
- (13) वृक्षों के नाम (नीम,खेजड़ा आदि) अपवाद—खेजड़ी, इमली, चमेली, छुईमुई, मेहन्दी स्त्रीलिंग होता है।
- (14) वर्णमाला के वर्ण (स्वर,व्यंजन) अपवाद — इ,ई,ऋ स्त्रीलिंग होता है।
- (15) समय सूचक शब्द :—(दिन,रात,प्रातः आदि) अपवाद — संध्या स्त्रीलिंग होता है।

नोट—ख,ज,न,त्र से अन्त होने वाले शब्दों में पुल्लिंग होता है। जैसे— दुख,नयन,शस्त्र आदि।

— निम्न प्रत्यय लगकर बनने वाले शब्दों में भी पुल्लिंग होता है —

- | | | |
|---|--------------------------------------|--------------------------------|
| (1) आपा — बुढ़ापा | (2) आव — चढ़ाव | (3) आवा — पहनावा,दिखावा,चढ़ावा |
| (4) आर — लुहार,सुनार | (5) अ — मानव,यादव,राघव | (6) य — सौंदर्य, माधुर्य |
| (7) अन — कम्पन,पालन,लालन,झाड़न,मिलन | (8) ईय — भारतीय | |
| (9) त्व — देवत्व, प्राणत्व, पठित्व, मनुष्यत्व | (10) दान — कुड़ादान, फुलदान,कन्यादान | |

(11) पन — बचपन, लड़कपन, अपनापन (12) खाना — दवाखाना, डाकखाना

(13) वाला — दूधवाला, सब्जिवाला, घरवाला (14) ऐसा — लुटेरा, फुफेरा, दादेरा

स्त्रीलिंग

—जिस संज्ञा शब्द से मादा जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं।

जैसे— देवी, घोड़ी, अनुजा, तनुजा आदि ।

— निम्न शब्दों में सदैव स्त्रीलिंग होता है —

- (1) तिथियों के नाम (एकादशी, दशमी, पंचमी आदि)
- (2) लिपियों के नाम (देवनागरी, गुरुमुखी, फारसी, रोमन)
- (3) भाषाओं के नाम (हिन्दी, ऊर्दू, गुजराती)
- (4) बोलियों के नाम (ब्रज, अवधि, मारवाड़ी, शेखावाटी आदि)
- (5) नक्षत्रों के नाम (मघा, पुष्य, रोहिणी आदि)
- (6) देवियों के नाम (दुर्गा, लक्ष्मी, उमा, रमा, सरस्वती आदि)
- (7) महिलाओं के नाम (गार्गी, सीता, गीता आदि)
- (8) लताओं के नाम (अमरबेल, चम्पा, चमेली आदि)

नोट— इ, ई से बनने वाले सभी शब्द स्त्रीलिंग में आते हैं।

☆ निम्न प्रत्ययों से लगकर बनने वाले शब्द स्त्रीलिंग के होते हैं—

- | | |
|--|--|
| (1) आ — आत्मजा, अर्कजा (सूर्य पुत्री), शैलजा | (2) आई — पढ़ाई, लिखई, बुनाई |
| (3) आइन — ठकुरायन, पण्डितायन | (4) इया — खटिया, गुड़िया, बन्दरिया, कुटिया |
| (5) आवट — घबराहट, खड़खड़ाहट, बिलबिलाहट, सनसनाहट, फड़फड़ाहट | (6) ई — देवी, नेत्री |
| (7) त — चलत, लिखत, पढ़त | (8) ता — सुन्दरता, मधुरता, चंचलता |
| (9) ति — स्वाति, प्रीति | |

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाना

1. अ के स्थान पर आ प्रत्यय लगाकर:—जैसे—छात्र—छात्रा, पूज्य—पूज्या, अनुज—अनुजा।
2. अ/आ, के स्थान पर ई प्रत्यय लगाकर:—जैसे— नाना —नानी, दादा —दादी, पुत्र—पुत्री।
3. आ के स्थान पर इया प्रत्यय लगाकर:— जैसे—बुढ़ा — बुढ़िया, चूहा — चूहिया।
4. अक के स्थान पर इका प्रत्यय लगाकर:—जैसे—लेखक —लेखिका, पाठक —पाठिका, नायक— नायिका।
5. नी प्रत्यय से बनने वाले शब्द:—जैसे—शेर — शेरनी, मोर —मोरनी, जाट —जाटनी।
6. इन प्रत्यय लगाकर:—जैसे—माली — मालिन, धोबी—धोबिन, चमार —चमारिन।
7. ई प्रत्यय के स्थान पर इनी प्रत्यय लगाकर:—जैसे—हाथी—हथनी, तपस्वी — तपस्विनी,
8. आइन से बने शब्द:—जैसे— ठकुराइन, पण्डिताइन, चौधराइन, ललाइन।
9. वान के स्थान पर वती प्रत्यय लगाकर —

गुणवान — गुणवती, पुत्रवान — पुत्रवती, भगवान — भगवती।

10. मान के स्थान पर मती करने पर:-**जैसे**-बुद्धिमान – बुद्धिमती, श्रीमान – श्रीमति।

11. ता प्रत्यय के स्थान पर त्री प्रत्यय लगाने पर:-**जैसे**-नेता – नेत्री, दोहिता – दोहित्री,

12 मादा शब्द लगाकर:-**जैसे**- मादा खरगोश, मादा भालू, मादा भेड़िया।

अध्याय 12 – क्रिया

क्रिया:- वह शब्द या शब्द समूह जिससे कार्य के होने या न होने का बोध होता हो।

जैसे- 1. मोहन पुस्तक पढ़ता है। 2. मोहन पुस्तक पढ़ रहा है। 3. मोहन पुस्तक नहीं पढ़ेगा।

क्रिया के भेद- (अ) अर्थ के आधार पर क्रिया के भेद :-1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया :- स+कर्म – कर्म सहित क्रिया। जब वाक्य में कर्म सहित क्रिया का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् कर्त्ता द्वारा किये गये कार्य का फल जब कर्म पर पड़े तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। **जैसे-** (1) गाय दूध देती है। (2) मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(3) गीता खाना पकाती है। (4) मोर साँपों को खाता है। (5) सीता रामायण पढ़ती है।

—उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म विद्यमान होने के कारण उपर्युक्त उदाहरण सकर्मक क्रिया के हैं।

द्विकर्मक सकर्मक क्रिया :- जब वाक्य में दो या दो से अधिक कर्म होते हैं या एक मुख्य कर्म तथा दूसरा कर्म का साधन कारण या स्थान हो तो वहाँ द्विकर्मक सकर्मक क्रिया होती है।

उदाहरण – (1) अध्यापकजी छात्रों को व्याकरण पढ़ाते हैं। (2) राधा चाकू से फल काटती है।
(3) महात्मा जी मंदिर में भजन करती हैं। (4) रमेश हवाई जहाज से लंदन जा रहा है।
(5) महात्मा जी भक्तों को गीता सुना रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में एक मुख्य कर्म के साथ दूसरा गौण कर्म या कर्म का साधन ,कारण या स्थान का प्रयोग हुआ है। इसलिए उपर्युक्त उदाहरण द्विकर्मक क्रिया के हैं।

2.अकर्मक क्रिया :- (अ+ कर्म) अर्थात् कर्म रहित। जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं हो अथवा कर्त्ता द्वारा किये गये कार्य का फल कर्म पर नहीं पड़कर क्रिया पर पड़ता हो तो वह अकर्मक क्रिया होती है।

जैसे- (1) मीरा हँसती है। (2) गीता खाती है। (3) कुत्ता भौंकता है। (4) राधा सोती है।

अकर्मक क्रिया के भेद-

1.पूर्ण अकर्मक क्रिया :- जो क्रिया पूरी तरह अकर्मक है अर्थात् क्रिया के साथ कर्म नहीं है।

उदाहरण :-(1) मोर नाचता है। (2) गीता सोती है। (3) शेर दहाड़ता है।

2.अपूर्ण अकर्मक क्रिया :-जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म तो नहीं होता लेकिन कर्म का भ्रम उत्पन्न करने के लिए अन्य कारकों का प्रयोग कर दिया जाता है।

उदाहरण :-(1) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।(2) राधा पलंग पर सोती है।

(3) मेढक कुँ में टर्रा रहे हैं।

(ब) रचना या संरचना के आधार पर क्रिया के भेद-

(क) संयुक्त क्रिया— i जो क्रिया दो क्रियाओं के मेल से बनती है उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

ii जिन क्रियाओं के द्वारा नविनता, रोचकता या वाक्य के अर्थ को सीमित करने के लिए प्रयोग किया जाता है उन्हें (रंचक क्रिया) रंगने वाली क्रिया कहते हैं। अर्थात् संयुक्त क्रियाएँ रंचक क्रिया भी कहलाती हैं।

iii जिन क्रियाओं के द्वारा आरम्भ, अवकाश, समाप्ति, अभ्यास, इच्छा, नित्यता (समानता सत्य) शक्ति प्रदर्शन विवशता आदि का बोध होता हो तो वह संयुक्त क्रिया होती है।

उदाहरण :—(1) मैं उपन्यास पढ़ा करता हूँ। (अभ्यास) (2) मैं घर जा रहा हूँ। (अवकाश)

(3) गरीब की जोरु सबकी भाभी हुआ करती है। (विवशता) (4) पानी बरसने लगा। (आरम्भ)

(5) माताजी भगवान के दर्शन करना चाहती हैं। (इच्छा)

(6) सूर्य पूर्व से उदीत होता है। (सनातन सत्य) (7) पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

(8) मैं तुझे मार डालूँ। (शक्ति प्रदर्शन) (9) मैं खाना खा चुका हूँ। (समाप्ति)

(ख) नामधातु क्रिया— जो क्रिया संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों से बनती है।

पहचान— वाक्य के अन्त में क्रिया के स्थान पर संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण शब्दों का प्रयोग होता है तो उन शब्दों में नामधातु क्रिया होती है। जहाँ नामधातु क्रिया का प्रयोग किया जायेगा वहाँ पर क्रिया नहीं होती है। यह नाम ही (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) क्रिया होती है।

उदाहरण :—(1) मेरा मित्र बहुत चालाक है। (2) मेरा मित्र बुद्धिमान है। (3) रमेश हसौड़ है। (4) मीरा का पति पीयूष है। (5) मीरा ससुर से लज्जाती है। (6) मीरा अपनी सास से बतियाती है।

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया— जिस क्रिया के साथ दो कर्त्ता होते हैं एक प्रमुख कर्त्ता व दूसरा गौण कर्त्ता। मुख्य कर्त्ता स्वयं कार्य नहीं करके सहायक कर्त्ता से कार्य करवाता है या कार्य करने की प्रेरणा देता है।

उदाहरण :—(1) थानेदार ने सिपाही से चोर पकड़वाया। (2) राधा ने मीरा से पत्र लिखवाया।

(3) गीता ने सुरेश से हवन करवाया। (4) महात्मा जी ने भक्तों से भजन करवाया।

(5) अध्यापक जी ने छात्रों को व्याकरण पढ़ायी।

नोट:— द्विकर्मक सकर्मक क्रिया के सभी उदाहरण प्रेरणार्थक क्रिया के होते हैं।

(घ) पूर्वकालिक क्रिया:— इसमें दो क्रियाएँ होती हैं एक क्रिया पूर्व में होती है और दूसरी क्रिया बाद में होती है जो क्रिया पूर्व में होती है उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं, और जो क्रिया बाद में होती है उसे समाधिक क्रिया कहते हैं।

पूर्वकालिक क्रिया की पहचान:— इस क्रिया में कर, करके, ते, ही शब्द जुड़े होते हैं।

उदाहरण :—(1) रमेश के दादाजी अखबार पढ़करके घुमने गये।

(2) दीपिका ग्रहकार्य करके सहेली से मिलने गयी। (3) रमेश को खाना खाते ही नींद आ गयी।

(4) राधा पलंग पर जाते ही सो गयी।

अध्याय 13 – वचन

वचन :—ऐसे शब्द जिनसे एक या एक से अधिक संख्या का बोध होता है, उन्हें वचन कहा जाता है। हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं :—(1) एकवचन (2) बहुवचन

(1) **एकवचन** :—जिन शब्दों से एक ही संख्या का बोध होता है, उन्हें एकवचन कहते हैं।

उदाहरण :— छात्र, बालक, खिड़की, पुस्तक, कुर्सी आदि।

(2) **बहुवचन** :—ऐसे शब्द जिनसे दो या दो से अधिक संख्या का बोध होता है, उन्हें बहुवचन कहते हैं। जैसे— बालिकाएँ, कुर्सियाँ, खिड़कियाँ, पुस्तकें आदि।

सदैव एकवचन में रहने वाले शब्द— सोना, चांदी, लोहा, स्टील, पानी, दूध, जनता, आग, आकाश, घी, सत्य, झूठ, मिठास, प्रेम, मोह, सामान, ताश, सहायता, तेल, वर्षा, जल, क्रोध, हवा, रेत इत्यादि।

सदैव बहुवचन में रहने वाले शब्द — आँसू, दर्शन, प्राण, हस्ताक्षर, आप, नियम, समाचार, दाम, बाल, लोग, होश, हालचाल, आदि।

एकवचन शब्द के साथ जन —गण— मण, वर्ग, वृंद, मण्डल, हर, परिषद् आदि शब्द जोड़कर, हम उसे बहुवचन बना देते हैं।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम—

- (1) शब्द के अन्त में आ आए तो ए कर दिया जाता है :— कमरा— कमरें।
- (2) यदि शब्द के अन्त में अ आए तो ए कर दिया जाता है :— पुस्तक— पुस्तकें।
- (3) यदि शब्द के अन्त में आ आए तो ऐँ कर दिया जाता है :— बाला— बालाएँ।
- (4) यदि शब्द के अन्त में दीर्घ ई आए तो याँ कर देते हैं :— लड़की— लड़कियाँ।
- (5) यदि शब्द के अन्त में या आए तो याँ कर दिया जाता है :— चिड़िया— चिड़ियाँ।
- (6) यदि शब्द के अन्त में उ, ऊ आए तो ऊँ कर दिया जाता है :— वधू— वधूँ।
- (7) यदि शब्द के अन्त में इ, ई आए तो यों कर दिया जाता है :— जाति— जातियों, खाति— खातियों।

अध्याय 14 – वाच्य

वाच्य :— क्रिया के जिस रूप से ये पता चले की उसका मुख्य विषय क्या है अर्थात् कर्ता, कर्म, या भाव। अर्थात् क्रिया के जिस रूप से उसके कर्ता, कर्म, या भाव के अनुसार होने का बोध होता है उसे वाच्य कहते हैं। **वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—** कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य :— जिसमें कर्ता प्रधान हो कर्ता के अनुसार क्रिया के लिंग व वचन हो। कर्तृवाच्य में सकर्मक, अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है। **उदाहरण —**

- | | |
|--|-----------------------------------|
| (1) रमेश किताब पढ़ता है। (सकर्मक क्रिया) | (2) रमेश रोता है। (अकर्मक क्रिया) |
| (3) राकेश पत्र लिखता है। | (4) रमेश पुस्तक पढ़ रहा है। |

2. कर्मवाच्य :— कर्म प्रधान होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया के लिंग, वचन, होते हैं। यदि कर्म पुल्लिंग एकवचन हो तो क्रिया भी पुल्लिंग एकवचन होगी। कर्म स्त्रीलिंग एकवचन हो तो

क्रिया भी पुल्लिंग एकवचन होगी। कर्म स्त्रीलिंग एकवचन हो तो क्रिया भी स्त्रीलिंग एकवचन होगी। कर्मवाच्य में सकर्मक क्रिया होती है। जैसे—

:- कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय कर्ताकारक के बाद “के द्वारा” विभक्ति जोड़ दी जाती है। जिससे कर्तृवाच्य कर्मवाच्य बन जाता है।

उदाहरण —(1) मोहन के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। (2) अंशु के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(3) सोहन के द्वारा पुस्तक नहीं पढ़ी जाती है। (4) मेरे द्वारा पत्र लिखा जाता है।

3. भाववाच्य :- जहाँ क्रिया कर्ता कर्म के अनुसार नहीं होकर भाव के अनुसार हो उसे भाव वाच्य कहा जाता है। **उदाहरण** —(1) मुझसे लिखा नहीं जाता है। (2) मुझसे पढ़ा नहीं जाता है।

(3) सीता से नृत्य नहीं किया जाता है। (4) देवेश से रामायण पढ़ी नहीं जाती है।

अध्याय 15 — काल (समय)

काल:- शाब्दिक अर्थ —समय होता है। क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के होने के समय का बोध होता हो उसे काल कहते हैं। काल के **तीन भेद** होते हैं—

1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत काल

1. भूतकाल:- क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध होता है।

भूतकाल के 6 भेद होते हैं—

1. सामान्य भूत:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध होता हो लेकिन निश्चित समय का बोध नहीं होता हो ।

उदाहरण —(1) राम ने रावण को मारा। (2) सीता ने खाना खाया। (3) मैं घर आया।

2. आसन्भूत:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के अभी-अभी बीते हुए समय में होने का बोध होता हों। इसमें सामान्य भूत काल क्रिया के साथ — हैं, हूँ का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण — (1) मैं घर आया हूँ। (2) वे स्कूल गए हैं। (3) सीता ने खाना खाया है।

(4) राम ने रावण को मारा है।

3. पूर्ण भूत:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के बहुत पहले बीते हुए समय में होने का बोध होता है। इस काल के वाक्यों में सामान्य भूतकाल कि क्रिया के साथ था, थी, थे आते हैं।

उदाहरण — (1) मैंने खाना खाया था। (2) राम ने रावण को मारा था। (3) वे घूमने गए थे।

4. अपूर्ण भूत:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध तो होता है लेकिन पूर्णता या समाप्ति का बोध नहीं होता है। इस काल के वाक्यों में सामान्य भूत काल कि क्रिया के साथ रहा था, रही थी, रहे थे, आदि का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण —(1) मोहन पुस्तक पढ़ रहा था। (2) सोहन खाना खा रहा था।

(4) वे घूमने जा रहे थे।

5. संधिगद्भ भूत :- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के बीते हुए समय में होने पर संदेह व्यक्त किया गया हो। इस काल के वाक्यों में सामान्य भूत काल की क्रिया के साथ होगा, होगी, होंगे, आदि शब्द जुड़े होते हैं।

उदाहरण —(1) मीरा ने खाना खाया होगा। (2) राम ने रावण को मारा होगा।
(3) जब भूकम्प आया होगा तब बिजली गयी होगी। (4) वे घूमने गए होंगे।

6. हेतु हेतुमद भूत:- जहां दो क्रियाएं बीते हुए समय में ही रही हो किन्तु एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करती हो। **उदाहरण** —

- (1) यदि वह मुम्बई नहीं जाता तो विस्फोट में नहीं मरता।
- (2) यदि वह परिश्रम करता तो सफल हो जाता।
- (3) यदि उसकी नौकरी लग जाती तो शादी हो जाती।

वर्तमान काल

वर्तमान काल:- क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध होता है। इसके तीन भेद होते हैं—

1. सामान्य वर्तमान काल:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के सामान्यतः वर्तमान काल में होने का बोध होता है। इस काल के वाक्यों में क्रिया के मूल रूप के साथ ता है, ती है, ते है, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण —(1) बच्चे गेंद से खेलते हैं। (2) भालू खेल दिखाता है।
(3) मोहन उपन्यास पढ़ता है। (4) भय से बकरी भी नाचती है।

2. संधिगद् वर्तमान काल:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के वर्तमान में होने पर संदेह प्रकट किया गया हो। इस काल के वाक्य में क्रिया के मूल रूप के साथ ता होगा, ती होगी, ते होंगे आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण —(1) मीरा गाना गाती होगी। (2) प्रेमचन्द उपन्यास लिखते होंगे।
(3) राधा गाय चराती होगी।

3. अपूर्ण वर्तमान काल:- क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के वर्तमान काल में होने का बोध तो होता हो लेकिन पूर्णता का बोध नहीं होता हो इस काल के वाक्यों में क्रिया के साथ रहा है, रही है, रहे हैं, रहा हूँ, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण — (1) मैं गया जा रहा हूँ। (2) वे मैदान में खेल रहे हैं।
(3) बालक दूध पी रहा है। (4) हवा बह रही है। (5) समुद्र उफन रहा है।

भविष्यत काल

भविष्यत काल:- जहाँ पर क्रिया आगे आने वाले समय में हो रही हो तो उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके तीन भेद होते हैं—

1. सामान्य भविष्यत काल:- जिन वाक्यों में क्रिया आगे आने वाले समय में होती हों उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। सामान्य भविष्यत् काल के वाक्यों में अन्त में ऐगा, ऐगी, ऐंगे, ऊँगा, ऊँगी, ओगे, औगी आदि शब्द जुड़े रहते हैं।

उदाहरण –(1) वह घूमने जायेगा। (2) वे खेलने जायेगे। (3) वह घूमने जायेगी।

(4) मैं खाना खाऊँगी। (5) मैं पढ़ने जाऊँगा। (6) राधा बकरी चराने जायेगी।

2. संभाव्य भविष्यत् कालः— जिन वाक्यों में क्रिया के आगे आने वाले समय में होने की सम्भावना हो। इन वाक्यों में लगता है, संभव है, शायद, हो सकता है आदि शब्द वाक्य के पूर्व में लगते हैं। **उदाहरण** —

(1) लगता है आज वर्षा होगी। (2) सम्भव है कल कोई मेहमान आएगा।

(3) शायद राधा कल घूमने जायेगी। (4) हो सकता है, मैं कल नहीं आऊँ।

3. हेतुमद भविष्यत्काल :— कार्य तो आगे आने वाले समय में होता है, इस काल के वाक्यों में दो क्रियाएँ होती हैं—**उदाहरण**— (1) बिजली चमकेगी तो वर्षा होगी।

(2) वर्षा होगी तो फल बोएंगे। (3) हम व्यायाम करेंगे तो शरीर बनेगा।

अध्याय 16 – शब्द शक्ति

शब्द शक्ति— शब्द के अन्तर्निहित व्यापार को शब्द शक्ति कहा जाता है।

शब्द शक्ति के तीन प्रकार होते हैं— वाचक (अभिधा), लक्षक (लक्षणा), व्यंजक (व्यंजना)

1. अभिधा शब्द शक्ति— जिसमें वाच्यार्थ, मुख्यार्थ या संकेतार्थ/अभिधेयार्थ प्रमुख होता है।

अर्थात् मुख्य अर्थ निकलता है या मुख्य अर्थ ग्रहण किया जाता है उसे अभिधा शब्द शक्ति

कहते हैं। **जैसे**— (1) मोती नटखट लड़का है। (2) उसके घर का मोती कीमती है।

(3) भगवान विष्णु ने नारद को हरि रूप दिया। (4) हरि पुस्तक पढ़ता है।

2. लक्षणा शब्द शक्ति— जहाँ वाक्य के मुख्यार्थ में बाधा उत्पन्न हो तथा लक्ष्यार्थ के माध्यम से

अर्थ ग्रहण किया जाये। **जैसे**—(1) राजस्थान जाग उठा। (2) लाल लाजपतराय पंजाब के शेर थे।

(3) वह हवा से बातें कर रहा था। (4) मोहन तो गधा है।

लक्षणा शब्द शक्ति के दो भेद हैं—

(अ) रूढ़ा लक्षणा— जहाँ पर रूढ़ी या परम्परा से अर्थ ग्रहण किया जाता है। हिन्दी के सभी मुहावरे रूढ़ा लक्षणा के अन्तर्गत आते हैं। **जैसे**— (1) पुलिस को देखकर चोर नो दो ग्यारह हो गया। (2) वह हवा से बातें कर रहा है।

(ब) प्रयोजनवती लक्षणा— जहाँ पर अर्थ ग्रहण करने का कोई प्रयोजन या उद्देश्य हो।

जैसे—(1) मोहन तो गधा है। (2) राजस्थान जाग उठा। (3) लाला लाजपत राय पंजाब के शेर थे।

3. व्यंजना शब्द शक्ति :— जहाँ पर न तो मुख्यार्थ प्रमुख होता है और नहीं लक्ष्यार्थ प्रमुख होता है। जहाँ पर व्यंग्यार्थ प्रमुख होता है, व्यंग्यार्थ के माध्यम से अर्थ ग्रहण किया जाता है।

जैसे—(1) प्रधानाचार्य जी ने चपरासी से कहा, चार बज गये हैं।

(2) किसी औरत ने पुजारी से कहा “ सन्ध्या हो गयी है।

व्यंजना शब्द शक्ति के दो भेद होते हैं — 1. शाब्दी व्यंजना, 2. आर्थी व्यंजना

(अ) शाब्दी व्यंजना :- जहां शब्द में व्यंजना होती है उस शब्द के स्थान पर उसका पर्यायवाची रखने पर व्यंजना ही नष्ट हो जाये तो उसे शाब्दी व्यंजना कहते हैं।

जैसे—(1) चिरंजीवी जोरी जुरै क्यो न स्नेह गंभीर।(2)को घटि वृषभानुजा के वे हलधर के बीर।।

—इस उदाहरण में वृषभानुजा शब्द का अर्थ राधा तथा गाय होता है तथा हलधर का अर्थ बैल व बलराम होता है। लेकिन यहाँ पर हलधर तथा वृषभानुजा के स्थान पर दूसरा पर्यायवाची रखने पर व्यंजना नष्ट हो जायेगी। जैसे—पानी गये न उबरे, मोती, मानुष , चून।

—इस दोहे में पानी शब्द व्यंजना है इसके स्थान पर दूसरा शब्द रखने पर इसकी व्यंजना समाप्त हो जाती है। मोती शब्द पानी से आशय चमक से है तथा मानुष में इज्जत, मान-सम्मान से है तथा चून में पानी से है।

(ब) आर्थी व्यंजना :- जहां व्यंजना किसी शब्द में न होकर अर्थ में होती है।

जैसे— प्रधानाचार्य जी ने चपरासी से कहा— चार बज गये।

अध्याय 17 —एक वाक्यांश के लिए एक शब्द

- | | |
|---|--|
| (1) सबसे आगे रहने वाला — अग्रणी | (2) जिसका खंडन न किया जा सके — अखंडनीय |
| (3) जो पहले गिना जाता हो — अग्रगण्य | (4) जो पहले जन्मा हो — अग्रज |
| (5) जिसे जाना न जा सके — अज्ञेय | (6) जिसे पता न हो — अज्ञात |
| (7) जो इंद्रियों द्वारा न जाना जा सके — अगोचर | (8) जो बहुत गहरा हो — अगाध |
| (9) जिसने अभी तक जन्म न लिया हो — अजन्मा | |
| (10) जिसकी गिनती न की जा सके — अगणित | (11) आगे आनेवाला — आगामी |
| (12) जिसको न जीता जा सके — अजेय | (13) जो कभी बूढ़ा न हो — अजर |
| (14) जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो — अजातशत्रु | (15) जो खाने योग्य न हो — अखाद्य |
| (16) जिसका चिंतन न किया जा सके — अचिंत्य | (17) जो क्षमा न किया जा सके — अक्षम्य |
| (18) धरती और स्वर्ग के बीच का स्थान — अंतरिक्ष | (19) जिसको कहा न जा सके — अकथनीय |
| (20) जिसको काटा न जा सके — अकाट्य | (21) अंडे से जन्म लेने वाला — अण्डज |
| (22) जिसके बारे में कोई निश्चित न हो — अनिश्चित | (23) जो छूने योग्य न हो — अछूत |
| (24) जो छुआ न गया हो — अछुता | (25) जो अपने स्थान से अलग न किया जा सके — अच्युत |
| (26) जो अपनी बात से टले नहीं — अटल | (27) पदार्थ का अत्यन्त सूक्ष्म भाग — परमाणु |
| (28) जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो — अतिथि | |
| (29) जो व्यतीत हो गया हो — अतीत | (30) बरसात बिल्कुल न होना — अनावृष्टि |
| (31) बहुत कम बरसात होना — अल्पवृष्टि | (32) इंद्रियों की पहुँच से बाहर — अतींद्रिय |
| (33) सीमा का अनुचित उल्लंघन — अतिक्रमण | (34) जो तर्क से परे हो — अतर्क्य |
| (35) किसी बात को अत्यधिक बढ़ाकर कहना — अतिशयोक्ति | |

- (36) आवश्यकता से अधिक बरसात – अतिवृष्टि (37) जिसको त्यागा न जा सके –अत्याज्य
(38) जिसकी तुलना न की जा सके – अतुलनीय (39) धर्म-शास्त्र के विरुद्ध कार्य –अधर्म
(40) जिसका दमन न किया जा सके – अदम्य (41) जिसे देखा न जा सके –अदृश्य
(42) जो पहले न देखा गया हो –अदृष्टपूर्व (43) विधयिका द्वारा स्वीकृत नियम –अधिनियम
(44) जो देखने योग्य न हो –अदर्शनीय (45) जिसके बराबर दूसरा न हो –अद्वितीय
(46) जो आज तक से संबंध रखता है –अद्यतन
(47) आदेश जो एक निश्चित अवधि तक ही लागू हो –अध्यादेश
(48) जिस पर किसी ने अधिकार कर लिया हो –अधिकृत
(49) वह सूचना जो सरकार के प्रयास से जारी हो –अधिसूचना
(50) आगे का विचार न कर सकने वाला –अदूरदर्शी
(51) सर्वाधिक अधिकार प्राप्त शासक –अधिनायक
(52) वह स्त्री जिसके पति ने दूसरी शादी कर ली हो –अध्यूढा
(53) पहाड़ के ऊपर की (समतल)जमीन –अधित्यका
(54) वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला मूल्य –अधिशुल्क
(55) जिसकी गहराई का पता न लग सके –अथाह
(56) जो अब तक से संबंध रखता है –अधुनातन
(57) जिसके हस्ताक्षर नीचे अंकित है –अधोहस्ताक्षरकर्ता
(58) जिसका कोई आदि/प्रारम्भ न हो –अनादि
(59) एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना –अनुवाद
(60) किसी संप्रदाय या सिद्धांत का समर्थन करने वाला –अनुयायी
(61) किसी प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया –अनुमोदन
(62) जिसका अनुभव किया गया हो –अनुभूत
(63) जो परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ हो –अनुत्तीर्ण (64) अन्य से संबंध न रखने वाला –अनन्य
(65) किसी एक में ही आस्था रखने वाला –अनन्य (66) जो बिना अंतर के घटित हो –अनंतर
(67) जिसका कोई घर (निकेत) न हो –अनिकेत
(68) कनिष्ठा (सबसे छोटी) व माध्यमा के बीच की उंगली –अनामिका
(69) जिसके माता-पिता न हो –अनाथ
(70) जिस भाई ने बाद में जन्म लिया हो –अनुज (71) जिसकी उपमा न दी जा सके –अनुपम
(72) जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ है –अंत्यज
(73) वह विद्यार्थी तो आचार्य के पास ही निवास करता हो –अंतेवासी
(74) मूलकथा मे आने वाला प्रसंग,लघु कथा – अंतःकथा
(75) जिसका निवारण न किया जा सके –अनिवार्य (76) जिसे करना आवश्यक हो –अनिवार्य

- (77) परम्परा से चली आई कथा –अनुश्रुति (78) जिसका कोई दूसरा उपाय न हो –अनन्योपाय
(79) जिसका भाषा द्वारा वर्णन न किया जा सके –अनिर्वचनीय,अवर्णनीय
(80) जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो – अनुगृहीत
(81) जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके –अविरोधी, अनिरुद्ध
(82) जिसके विषय में किसे ज्ञान न हो – अनवगत,अज्ञात
(83) वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो –अन्योदर
(84) जो नियन्त्रण में न हो –अनियंत्रित (85) पलक को झपकाए बिना –अनिमेष, निर्निमेष
(86) जिसे बुलाया न गया हो – अनाहूत (87) तो ढका हुआ न हो –अनावृत
(88) जो दोहराया न गया हो –अनावर्त (89) जिसका किसी से लगाव, प्रेम हो –अनुरक्त
(90) अविवाहित महिला –अनूढा (91) जो नियमानुसार न हो –अनियमित
(92) पीछे-पीछे चलने वाला – अनुगामी (93) जिसका उत्तर न दिया गया हो – अनुत्तरित
(94) पहले लिखे गये पत्र का स्मरण करते हुए लिखा गया पत्र – अनुस्मारक
(95) जिस पर आक्रमण न किया गया हो –अनाक्रांत (96) अनुकरण करने योग्य – अनुकरणीय
(97) अनुसरण (सम्पूर्ण रूप में) करने योग्य – अनुसरणीय
(98) वह सिद्धांत जो हर वस्तु को नश्वर मानता है –अनित्यवादी
(99) जो कभी न आया हो –अनागत (100) जो श्रेष्ठ गुणों से युक्त न हो –अनार्य
(101) जो सब के मन की बात जानता हो –अंतर्दामी
(102) महल का वह भाग जहां रानियां निवास करती हैं – अंतःपुर
(103) जिसे किसी बात का पता न हो – अनभिज्ञ
(104) जो कुछ नहीं जानता हो –अज्ञ/अज्ञानी
(105) जो बिना सोचे-समझे विश्वास करें – अंधविश्वासी
(106) जो बिना सोचे-समझे अनुगमन करे – अंधानुगामी (107) जिसकी अपेक्षा हो – अपेक्षित
(108) जिसकी अपेक्षा न हो – अनपेक्षित (109) जिसकी आवश्यकता न हो – अनावश्यक
(110) जिसका आदर न किया गया हो – अनादृत
(111) जिसका मन कही अन्यत्र लगा हो –अन्यमनस्क
(112) जो पूरा या भरा हुआ न हो –अपूर्ण (113) जो मापा न जा सके – अपरिमेय
(114) जो पहले पढ़ा न गया हो –अपठित (115) नीचे की ओर लाना या खींचना – अपकर्ष
(116) जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो – अपव्ययी(117) जो सामने न हो –परोक्ष/अप्रत्यक्ष
(118) आवश्यकता से अधिक धन ग्रहण न करना –अपरिग्रह
(119) जिसकी आशा न की गई हो –अप्रत्याशित
(120) जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके – अप्रमेय
(121) जिस पर अपराध करने का आरोप हो –अभियुक्त
(122) जो किसी पर अभियोग लगाए –अभियोगी (123) जो पहले कभी न हुआ हो – अपूर्व

- (124) जिसका विवाह न हुआ हो – अविवाहित, अपरिणीत
- (125) जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध है – अपथ्य (126) जो पीने योग्य न हो – अपेय
- (127) जिसका त्याग न हो सके – अत्याज्य
- (128) जिसके आर-पार न देखा जा सके – अपारदर्शी
- (129) वह समय जो दोपहर के बाद आता है – अपराह्न
- (130) जिस वस्त्र को पहना न गया हो, न जोता हुआ खेत – अप्रहत
- (131) किसी काम के बार-बार करने के अनुभववाला – अभ्यस्त
- (132) किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा – अभीप्सा
- (133) जिसको भेदा न जा सके – अभेद्य (134) जो पहले न हुआ हो – अभूतपूर्व
- (135) जिस वस्तु का मूल्य न आंका जा सके – अमूल्य
- (136) जो बिन मांगे मिल जाए – अयाचित (137) जिसकी कोई रक्षा न कर रहा हो – अरक्षित
- (138) जो साहित्य-कला आदि में रस न ले – अरसिक
- (139) जिसको प्राप्त न किया जा सके – अलभ्य (140) जो दिखाई न दे – अदृश्य
- (141) जिसको देखा न जा सके – अलक्ष्य (142) जिसको लांघा न जा सके – अलंघ्य
- (143) जो कम जानता हो – अल्पज्ञ (144) जो कम बोलता हो – अल्पभाषी
- (145) जो इस लोक का न हो – अलौकिक (146) जो वध करने योग्य न हो – अवध्य
- (147) जो विधि या कानून के विरुद्ध हो – अवैध (148) आदेश की अवहेलना – अवज्ञा
- (149) जिसका विभाजन न किया जा सके – अविभाज्य
- (150) जो भला-बुरा न समझता हो या सोच-समझकर काम न करता हो – अविवेकी
- (151) जिसका विभाजन न किया गया हो – अविभक्त
- (152) जिस पर विचार न किया गया हो – अविचारित
- (153) जो बिना वेतन के कार्य करता हो – अवैतनिक
- (154) जो व्यक्ति विदेश में रहता है – अप्रवासी (155) जो मृत्यु के समीप हो – आसन्नमृत्यु
- (156) जो कार्य अवश्य होने वाला हो – अवश्यंभावी
- (157) जिसको व्यवहार में न लाया गया हो – अव्यवहृत
- (158) जिसका विश्वास न किया जा सके – अविश्वसनीय
- (159) जो विधान के अनुसार न हो – अवैधानिक
- (160) जो स्त्री सूर्य भी नहीं देख पाती – असूर्यपश्या
- (161) न हो सकने वाला (कार्य आदि) – अशक्य (162) जो शोक करने योग्य न हो – अशोक्य
- (163) जो कहने-सुनने-देखने में लज्जापूर्ण या घिनौना हो – अश्लील
- (164) फेंक कर चलाये जाने वाले हथियार – अस्त्र
- (165) जिसको सहन न किया जा सके – असह्य (166) जो सहनशील न हो – असहिष्णु

- (167) जो समान न हो – असम/असमान
- (168) जिसे साधा न जा सके/जो वश में न आ सके – असाध्य
- (169) जिस रोग का इलाज न किया जा सके – लाइलाज या असाध्य रोग
- (170) किसी बात पर बार-बार जोर देना – आग्रह
- (171) वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो – आगतपतिका
- (172) जो जन्म लेते ही गिर या मर गया हो – आजन्मपात
- (173) जो जन्म से ही गिरा हुआ हो – आजन्मपात
- (174) जिसकी भुजाएं घुटनों तक लंबी हो – आजानुबाहु (175) मृत्यु पर्यंत – आमरण
- (176) जो गुण-दोष का विवेचन करता हो – आलोचक
- (177) जो ईश्वर में विश्वास रखता हो – आस्तिक
- (178) वह कवि जो तत्काल कविता कर सके – आशुकवि
- (179) जो शीघ्र प्रसन्न हो जाए – आशुतोष
- (180) जिसे आश्वासन पर विश्वास हो – आश्वस्त
- (181) विदेश से देश में सामान मंगवाना – आयात (182) सिर से पांव तक – आपादमस्तक
- (183) प्रारम्भ से लेकर अन्त तक – आद्योपांत
- (184) अपने प्राण स्वयं ही समाप्त कर लेनेवाला – आत्मघाती
- (185) अपनी हानी स्वयं करने वाला – आत्मघाती (186) पवित्र आचरण वाला – आचारपूत
- (187) जो अतिथि का सत्कार करता है – आतिथेय या मेजबान
- (188) दूसरे के हित में अपना जीवन त्याग कर देना – आत्मोत्सर्ग
- (189) जो बहुत क्रूर व्यवहार करता हो – आततायी
- (190) किसी वस्तु को आधुनिक रूप देने की क्रिया – आधुनिकीकरण
- (191) जिसका सम्बंध आत्मा से हो – आध्यात्मिक
- (192) वह जिस पर हमला किया गया हो – आक्रांत (193) जिसने हमला किया हो – आक्रांता
- (194) जिसे सूंघा जा सके – आग्नेय (195) किसी स्थान के सर्वाधिक पुराने निवासी – आदिवासी
- (196) वह चीज जिसकी चाह हो – इच्छित
- (197) किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया यथातथ्य वर्णन – इतिवृत्त
- (198) इस लोक से सम्बन्धित – इहलौकिक
- (199) जो इंद्र पर विजय प्राप्त कर चुका हो – इंद्रजीत
- (200) जो इंद्रियों से परे हो – इंद्रियातीत
- (201) उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा – ईशान्य, ईशान
- (202) जो दूसरे की उन्नति देखकर जलता हो – ईर्ष्यालू
- (203) वह पर्वत जहां से सूर्य और चन्द्रमा उदित होते माने जाते हैं – उदयाचल

- (204) पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि – उपत्यका
(205) किसी के संबंध में कुछ लिखने या वर्णन करने योग्य – उल्लेखनीय
(206) जिसके ऊपर किसी का उपकार हो – उपकृत
(207) ऐसी जमीन जो अच्छी उत्पादक हो – उर्वरा
(208) जो छाती के बल चलता हो (सांप आदि) – उरग
(209) जिसने अपना ऋण पूरा चुका दिया हो – उऋण
(210) जिसका ऊपर कथन किया गया हो – उपर्युक्त
(211) जिसका मन जगत् से उचट गया हो – उदासीन
(212) भोजन करने के बाद बचा हुआ अन्न या जूठन – उच्छिष्ट
(213) जिसकी दोनों में निष्ठा हो – उभयनिष्ठ (ऊपर की ओर जानेवाला – ऊर्ध्वगामी)
(214) जिस भूमि में कुछ भी पैदा न होता हो – ऊसर
(215) विचारों का ऐसा प्रवाह जिससे कोई निष्कर्ष न निकले – ऊहापोह
(216) जो केवल एक आंखवाला हो – एकाक्ष
(217) सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा – एषणा
(218) जिस पर किसी एक का ही अधिकार हो – एकाधिकार
(219) किसी एक पक्ष से संबंध रखने वाला – एकपक्षीय
(220) वह स्थिति जो अंतिम निर्णायक हो – एकांतिक
(221) कई जगह से मिलकर इकट्ठा किया हुआ – एकीकृत
(222) जो व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है – ऐच्छिक
(223) इंद्रियों को भ्रमित करनेवाला – ऐंद्रजालिक (224) जो इंद्रियों से संबंधित हो – ऐंद्रिय
(225) जो इस लोक से संबंधित हो – ऐहिक या ऐहलौकिक
(226) सांप-बिच्छू के जहर या भूत-प्रेत के भय को मंत्रों से झाड़नेवाला – ओझा
(227) जो उपनिषदों से संबंधित हो – औपनिषदिक
(228) जो मात्र शिष्टाचार, व्यावहारिकता के लिए हो – औपचारिक
(229) दो व्यक्तियों की परस्पर होने वाली बातचीत – कथोपकथन
(230) ऐसी लड़की जिसका विवाह न हुआ हो – कन्या या कुमारी
(231) कर्म करने में तत्पर व्यक्ति – कर्मठ (232) बर्तन बेचने वाला – कसेरा
(233) नियम विरुद्ध कार्य करने वालों की सूची – कालीसूची
(234) अपने काम के बारे में कुछ निश्चय नहीं करने वाला – किंकर्तव्यविमूढ
(235) जो बात पूर्व काल से कह-सुन कर लोगों में प्रचलित हो – किंवदंती/जनश्रुति
(236) बुरे मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति – कुमार्गगामी
(237) जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो – कुलीन

- (238) जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो – कुशाग्रबुद्धि
(239) बुरी संगत में रहने वाला – कुसंगी
(240) अपने लिए किए हुए उपकार को याद रखने वाला – कृतज्ञ
(241) अपने लिए किए गए उपकार को भुला देने वाला – कृतघ्न
(242) जो धन को अत्यधिक कंजूसी से खर्च करता है— कृपण
(243) जिसे खरीद/मोल लिया हो— क्रीत
(244) जिसकी अब कीर्ति शेष रह गई हो – कीर्तिशेष
(245) श्रृंगारिक वासनाओं के प्रति आकर्षित – कामुक
(246) जो दुख या भय से पीड़ित हो— कातर (247) दूसरे की हत्या करने वाला— कातिल
(248) अपनी गलती स्वीकार करने वाला— कायल
(249) ईश्वर का सामूहिक रूप से किया जाने वाला गुणगान – कीर्तन
(250) वह व्यक्ति जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो (कुँ का मेढक) – कूपमंडूक
(251) जो केंद्र से हटकर दूर जाता हो – केंद्रापसारी
(252) जो केन्द्र की ओर उन्मुख होता हो – केन्द्राभिसारी/केन्द्राभिमुख
(253) वृक्ष, लता, फूलों से घिरा हुआ कोई सुंदर स्थान— कुंज
(254) जिसने संकल्प कर रखा है— कृतसंकल्प
(255) सर्प के शरीर से निकली हुई खोली – केंचुली
(256) पूर्व में हुई हानि की भरपाई – क्षतिपूर्ति
(257) जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं— क्षितिज
(258) जो क्षमा किया जा सके – क्षम्य
(259) जिसका कुछ ही समय में नाश हो जाए— क्षण भंगुर
(260) जो क्षमा करने वाला हो – क्षमाशील
(261) जो भूख मिटाने के लिए बैचेन हो – क्षुधातुर (262) भूख से पीड़ित – क्षुधार्त
(263) आकाश के पिण्डों का विवेचन करने वाला— खगोलशास्त्र
(264) जिस ग्रहण में सूर्य या चन्द्र का पूर्ण बिंब (राहु से) ग्रस्त हो जाता है— खग्रास
(265) जो व्यक्ति अपने हाथ में तलवार लिए रहता है— खड्गहस्त
(266) दूसरों के मत का विरोध करना— खंडन
(267) वह स्त्री जिसका पति अन्य स्त्री के साथ रात को रहकर प्रातः लौटे – खंडिता
(268) खाने के योग्य वस्तु— खाद्य
(269) आकाश में विचरण करने वाला जन्तु – नभचर (नभश्चर)
(270) शरीर का व्यापार करने वाली स्त्री –गणिका (271) जो अशिष्ट व्यवहार करता हो—गँवार
(272) जिसका अर्थ स्वयं ही सिद्ध है— सिद्धार्थ

- (273) पहले से चली आ रही परंपरा का अनुपालन करनेवाला – गतानुगतिक
- (274) आकाश को स्पर्श करने वाला – गगनचुंबी
- (275) जिस नाटक के संवाद गीतों के रूप में लिखे हो – गीतनाटिका/गीतिनाट्य
- (276) गुप्त रूप से घूमकर सूचना देने वाला – गुप्तचर
- (277) हर पदार्थ को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाली गुरुत्व शक्ति – गुरुत्वाकर्षण
- (278) जो बात गूढ़ (रहस्यपूर्ण) हो – गूढ़ोक्ति (279) जो बोल नहीं सकता है – गूँगा
- (280) घर या देश के अंदर ही लोगों की आपसी लड़ाई – गृहयुद्ध
- (281) जिम्मेदारी पूरी न करने वाला – गैर-जिम्मेदार
- (282) दिन व रात्रि के बीच का समय – गोधूली वेला (संध्या का वह समय जब गायें जंगल से लौटती हैं और उनके चलने की धूल आसमान में उड़ती है।)
- (283) जो ग्रहण करने योग्य हो – ग्राह्य (284) जो छिपाने योग्य हो – गोपनीय
- (285) जहाँ से गंगा नदी का उद्गम होता है – गंगोत्री
- (286) घास खोदकर जीवन-निर्वाह करने वाला – घसियारा
- (287) शरीर की हानि करने वाला – घातक (289) जो पदार्थ घुलने योग्य हो – घुलनशील
- (290) जो घृणा का पात्र हो – घृणित या घृणास्पद
- (291) कोई कार्य करने के लिए नाजायज रूप में धन लेने वाला – घूसखोर
- (292) जो बहुत समय तक ठहर सके – चिरस्थायी (293) चौथे दिन आने वाला ज्वर – चौथिया
- (294) चक्र के रूप में घूमती हुई चलने वाली हवा – चक्रवात
- (295) आश्चर्य में डाल देनेवाला कार्य – चमत्कार
- (296) वह कृति जिसमें गद्य व पद्य दोनों मिश्रित हो – चंपू
- (297) ब्याज का वह प्रकार जिसमें मूल के ब्याज पर भी ब्याज दिया जाता है – चक्रवृद्धि
- (298) जिसके सिर पर चंद्र-कला हो (शिव) – चंद्रचूड़/चंद्रशेखर
- (299) कार्य करने की इच्छा – चिक्कीर्षा (300) लम्बे समय तक जीनेवाला – चिरंजीवी
- (301) बहुत समय से परिचित – चिरपरिचित (302) चिरनिद्रा (मृत्यु) को प्राप्त हुआ – चिरनिद्रित
- (303) जो चिरकाल से चला आया है – चिरंतन
- (304) चिंता करने योग्य बात – चिंतनीय/चिंत्य
- (305) सावधानी करने के लिए दिया गया संदेश – चेतावनी
- (306) सभी प्रकार की चिंताओं को दूर करने वाली एक मणि – चिंतामणि
- (307) जिस पर चिह्न लगाया गया हो – चिह्नित
- (308) जो गुप्त रूप से निवास कर रहा हो – छद्मवासी
- (309) वह स्थान जहाँ सैनिक निवास करते हैं – छावनी
- (310) जो दूसरों में केवल दोषों को ही खोजता हो – छिन्दान्वेषी

- (311) छिपकर आक्रमण करने वाला – छापमार दल
(312) पत्थर को गढ़ने वाला औजार – छैनी
(313) एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला –जंगम (314)जो जल बरसाता हो –जलद
(315) जो जल से उत्पन्न होता हो– जलज (316) जो जीव–जंतु जल में रहते हैं– जलचर
(317) जो बात लोगों से सुनी गई हो –जनश्रुति
(318) जो चमत्कारी क्रियाओं का प्रदर्शन करता है– जादूगर (मदारी)
(319) जो अकारण जुल्म ढाता हो –जालिम (320)जानने की इच्छा –जिज्ञासा
(321) जीतने,दमन करने की इच्छा – जिगीषा
(322) किसी को जीत लेने की इच्छा रखने वाला –जिगीषु
(323) किसी को मारने की इच्छा – जिंघासा (324) भोजन करने की इच्छा – जिघत्सा
(325) ग्रहण करने या पकड़ने की इच्छा –जिघृक्षा
(326) जिंदा रहने की इच्छा –जिजीविषा
(327) जिसने इंद्रियो को वश में कर लिया हो – जितेंद्रिय
(328) जिसने आत्मा को जीत लिया हों –जितात्मा (329) जो जीतने के योग्य हो – जेय
(330)किसी के जीवन भर के कार्यों का विवरण – जीवन–चरित्र
(331) जेठ (पति का बड़ा भाई) का पुत्र –जेठोत
(332) अपनी इज्जत को बचाने के लिए किया गया अग्नि–प्रवेश – जौहर
(334) वह पहाड़ जिसके मुँह से आग निकले – ज्वालामुखी
(335) जो ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखता हो – ज्ञानपिपासु
(336) लंबे और बिखरे बालोंवाला – झबरा
(337)बहुत गहरा तथा बहुत प्राकृतिक जलाशय – झील
(338) जहाँ सिक्कों की ढलाई होती है– टकसाल
(339) अधिक देर तक रहने वाला या चलनेवाला – टिकाऊ
(340) विवाह का संबध तय करने के लिए वर को वस्त्रादि वस्तुएँ प्रदान करने की रस्म – टीका
(341)बर्तन बनाने वाला – ठठेरा
(342) जो छोटे कद को हो – ठिगना
(343) जनता को सूचना देने हेतु बजाया जाने वाला वाद्य– ढिंढोरा
(344) जो किसी भी गुट में ना हों – निर्गुट/तटस्थ
(345) जो किनारे के सटे हुए हों – तटवर्ती
(346) जो किसी कार्य या चिंता में डूबा हुआ हो – तल्लीन
(347) जो चोरी छिपे माल लाता–ले जाता हो –तस्कर
(348) ऋषियों के तप करने की भूमि – तपोभूमि (349) उसी समय का – तत्कालीन

- (350) वह राजकीय धन जो किसानों की सहायता हेतु दिया जाता है— तकाबी
- (351) दैहिक, दैविक, और भौतिक दुःख— तापत्रय
- (352) तर्क करने वाला व्यक्ति — तार्किक
- (353) तांबे के रंग के समान लाल रंग — ताम्ररक्त / ताम्रवर्णी
- (554) तैर कर पार जाने की इच्छा — तितीर्षा (355) ज्ञान में प्रवेश का मार्गदर्शक — तीर्थङ्कर
- (356) बाणों को रखने का साधन — तरकस/तूणीर
- (357) किसी पद को छोड़ने के लिए लिखा गया पत्र — त्याग पत्र
- (358) वह व्यक्ति जो छुटकारा दिलाता है/रक्षा करता है— त्राता
- (359) सत्व, रज, और तम का समूह — त्रिगुण
- (360) गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम — त्रिवेणी
- (361) भूत, वर्तमान और भविष्य को देखने वाला — त्रिकालदर्शी
- (362) जिसके तीन आँखें हैं— त्रिनेत्र (363) तीन महीने में एक बार — त्रैमासिक
- (364) वह स्थान जो दोनों भृकुटियों के बीच होता है — त्रिकुटी
- (365) जो त्याग देने योग्य हो — त्याज्य (366) अनावश्यक मांसल और मोटा शरीर —थुल—थुल
- (367) बड़े व्यापारियों द्वारा आपस में किया जाने वाला व्यापार — थोकव्यापार
- (368) संकुचित विचार रखने वाला —दकियानूस (369) पति और पत्नी का जोड़ा — दम्पति
- (370) दस वर्षों की समय अविध —दशक (371) वह व्यक्ति जिसे गोद लिया जाय —दत्तक
- (372) जंगल में फैलने वाली आग — दावानल/दावाग्नि
- (373) जो सपना दिन में देखा जाता है —दिवास्वप्न (374) दो बार जन्म लेने वाला — द्विज
- (375) जिसे कठिनाई से जाना जा सके — दुर्ज्ञेय
- (376) जिसको पकड़ने में काफी कठिनाई हो — दुरभिग्रह/दुर्गाह्य
- (377) जिसने दीक्षा ली हो — दीक्षित (378) पति के स्नेह से वंचित स्त्री — दुर्भगा
- (379) जिसे कठिनाई से लाँघा/फाँदा जा सके —दुर्लघ्य
- (380) जिसे कठिनाई से साधा/सिद्ध किया जा सके — दुस्साध्य
- (381) जो कठिनाई से समझ में आता है — दुर्बोध
- (382) अनुचित बात के लिए आग्रह करना —दुराग्रह
- (383) जिसको कठिनाई से वहन या धारण किया जा सके—दुर्वह
- (384) जो बुरा आचरण करता हो — दुराचारी (385) बुरे भाव से की गयी संधि — दुरभिसंधि
- (386) वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करता है—दुर्गम
- (389) जिसमें खराब आदतें हो — दुर्व्यसनी
- (390) जिसको जीतना बहुत कठिन हो — दुर्जय
- (391) जिसको मापना कठिन हों — दुष्परिमेय

- (392) देव/ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला – देवज्ञ
(393) आगे की बात को भी सोच लेने वाला व्यक्ति – दूरदर्शी
(394) जिसे देवता भी पूजते हो – देवाराध्य
(395) दीक्षा की समाप्ति पर दिया जाने वाला उपदेश – दीक्षांत भाषण
(396) पुत्री का पुत्र – दौहित्र (397) वह कार्य जिसको करना कठिन हो – दुष्कर
(398) वह बच्चा जो अभी माँ के दूध पर निर्भर है – दूधमुँहा
(399) जो दो भिन्न भाषियों के बीच अनुवाद करके बात करवाए – दुभाषिया
(400) जो शीघ्रता से चलता हो – द्रुतगामी (401) जो धनुष को धारण करता हो – धनुर्धारी
(402) धन की इच्छा रखने वाला – धनेच्छु (403) सभी को धारण करने वाली – धरणी
(404) यात्रियों के लिए निःशुल्क सार्वजनिक आवास ग्रह – धर्मशाला
(405) गरीबों के लिए दान के रूप में दिया जाने वाला धन – अन्न आदि – धर्मादा
(406) किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु – धरोहर/थाती
(407) मछली मारकर आजीविका चलाने वाला – मछुवारा/धीवर
(408) श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न शूरवीर नायक – धीरोदात्त
(409) शूरवीर किंतु अभिमानी नायक – धीरोद्धत
(410) शूरवीर किंतु क्रिडा प्रिय नायक – धीरललित
(411) धर्म के अनुसार व्यवहार या आचरण करने वाला – धर्मात्मा/धर्माचारी
(412) जिसकी धर्म में निष्ठा हो – धर्मनिष्ठ
(413) धुरी को धारण करने वाला/आधारभूत कार्य में प्रवीण – धुरंधर
(414) जो धीरज रखता हो – धीर (415) अपने स्थान पर अचल रहने वाला – ध्रुव
(416) ध्यान करने योग्य अथवा लक्ष्य – ध्येय (417) ध्यान करने वाला – ध्याता
(418) नाक से अपने आप निकलने वाला खून – नकसीर
(419) सम्मान में दी जानेवाली भेंट – नजराना
(420) नाखून से चोटी तक का वर्णन – नखशिख वर्णन
(421) जिसका जन्म अभी – अभी हुआ हो – नवजात
(422) जिस स्त्री का विवाह अभी हुआ हो – नवोद्वा
(423) जिसका उदय हाल में हुआ हो – नवोदित (424) जो वस्तु नाशवान हो – नश्वर
(425) जिसका सर झुका हुआ हो – नतमस्तक
(426) जो आकाश में विचरण करता है – नभचर(नभश्चर)
(427) जिसे ईश्वर पर विश्वास ना हो – नास्तिक
(428) जो पढ़ना लिखना न जानता हो – निरक्षर (429) जिसका कोई अर्थ न हो – निरर्थक
(430) जिसकी कोई अवधि निश्चित न हो – निरवधि

- (431) जिसका कोई आकार/रूप न हो – निराकार
(432) जिससे किसी प्रकार की हानि न हो – निरापद
(433) जो मांस न खाता हो/मांसरहित – निरामिष (434) जिसके अवयव न हो – निरवयव
(435) बिना आहार (भोजन) के – निराहार
(436) जो यह मानता है कि संसार में कुछ भी अच्छा होने की आशा नहीं है – निराशावादी
(437) जो उत्तर ना दे सके – निरुत्तर (438) जिसके पास कोई उपाय ना हो – निरुपाय
(439) जिसके कोई दाग या कलंक न हो – निष्कलंक
(440) जिसमें कोई कंटक/अड़चन न हो – निष्कंटक
(441) जिस काम के लिए धन न दिया जाए – निःशुल्क
(442) जिसका अपना कोई स्वार्थ ना हो – निःस्वार्थ (443) जिसके संतान ना हो – निस्संतान
(444) जिसको किसी में भी आसक्ति न हो – असंग/निस्संग
(445) जिसको कोई इच्छा (स्पृहा) न हो – निस्स्पृह
(446) व्यापारिक वस्तुओं को किसी दूसरे देश में भेजने का कार्य – निर्यात
(447) जिसको देश से निकाला दिया गया हो – निर्वासित
(448) जिसमें कोई विकार न हो – निर्विकार (449) रात में विचरण करने वाला – निशाचर
(450) अर्द्धरात्रि का समय – निशीथ (451) बिना किसी बाधा के – निर्बाध
(452) जो ममत्व से रहित हो – निर्मम
(453) जिसकी किसी से उपमा/तुलना न दी जा सके – निरुपमा
(454) जो निर्णय करने वाला हो – निर्णायक (455) जिसका कोई उद्देश्य ना हो – निरुद्देश्य
(456) जो पाप से रहित हो – निष्पाप (457) जो सब प्रकार की चिंताओं से रहित हो – निश्चिंत
(458) रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान – नेपथ्य (459) जो नीति के अनुकूल हो – नैतिक
(460) आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेनेवाला – नैष्ठिक
(461) जिसमें दया का भाव न हो – निर्दय/निष्ठुर
(462) महीने के दो पक्षों में से एक पक्ष (पंद्रह दिन) – पखवाड़ा
(463) नाटक का परदा गिरना – पटाक्षेप/यवनिका पतन
(464) अपनी किसी गलती के लिए हुआ दुःख – पश्चाताप
(465) केवल अपने पति में अनुराग रखने वाली स्त्री – पतिव्रता
(466) पति को चुनने की इच्छावाली कन्या – पतिम्बरा
(467) उपाय/मार्ग बताने वाला – पथ-प्रदर्शक/मार्गदर्शक
(468) अपने मार्ग से च्युत/भटका हुआ – पथभ्रष्ट
(469) जो भोजन रोगी के लिए उचित है – पथ्य (470) अपने पद से हटाया हुआ – पदच्युत
(471) केवल दूध पर जीवित रहने वाला – पयोहारी (472) जो प्रत्यक्ष ना हो – परोक्ष/अप्रत्यक्ष

- (473) दूसरों पर निर्भर रहने वाला – पराश्रयी/पराश्रित
(474) घूमने-फिरने वाला साधु – परिव्रजक (475) महीने के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित – पाक्षिक
(476) हाथ से लिखी हुई पुस्तक – पांडुलिपि
(477) जिसमें से आर-पार देखा जा सके – पारदर्शी
(478) पर पुरुष से प्रेम करने वाली – परकीया
(479) जिसका स्वभाव पशुओं के समान हो – पाशविक
(480) जन-प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था – जनतंत्र
(481) किसी प्रश्न का तत्काल उत्तर दे सकनेवाली बुद्धि – प्रत्युत्पन्न मति
(482) पर्दे के अंदर रहने वाली – पर्दानशीन (483) किसी वाद का विरोध करने वाला – प्रतिवादी
(484) शरणागत की रक्षा करने वाला – प्रणतपाल
(485) वह ध्वनि जो कहीं से टकराकर वापस आए – प्रतिध्वनि
(486) जो शरीर से हृष्टपुष्ट हो – पेशल
(487) एक बार कही हुई बात का दुहराते रहना – पिष्टकोण
(488) जो किसी मत को सर्वप्रथम चलाता है – प्रवर्तक
(489) वह आकृति जो किसी शीशे, जल आदि में दिखाई दे – प्रतिबिंब
(490) पिता एवं प्रतिपादों से संबंधित – पैतृक (491) पिता से प्राप्त की हुई संपत्ति – पैतृक संपत्ति
(492) जो प्रकृति से संबंधित हो – प्राकृतिक (493) जो पूछने योग्य हो – पृष्टव्य
(494) जिसको देखकर अच्छा लगे – प्रियदर्शी
(495) जिसमें दूसरे का उपकार करने की प्रवृत्ति हो – परोपकारी
(496) जो सदा बदलता रहे – परिवर्तनशील (497) जो दूसरे के अधिकार में हो – पराधीन
(498) जो परलोक से सम्बन्धित हो – पारलौकिक (499) मार्ग में खाने के लिए भोजन – पाथेय
(500) जो किसी के प्राणों की रक्षा करे – प्राणरक्ष
(501) हास्य रस से परिपूर्ण नाटिका – प्रहसन (502) प्रमाण द्वारा सिद्ध करने योग्य – प्रमेय
(503) संध्या और रात्रि के बीच का समय – प्रदोष/पूर्वरात्र
(504) पीने की इच्छा रखनेवाला – पिपासु (506) पति द्वारा छोड़ दी गई पत्नी – परित्यक्ता
(507) जो दूसरों का भला करता हो – परमार्थी
(508) जो पूरी तरह से पक चुका हो/पारंगत हो चुका हो – परिपक्व
(509) जिसका संबंध पृथ्वी से हो – पार्थिव (510) किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता – पारंगत
(511) किसी परिश्रम के बदले मिलनेवाली राशि – पारिश्रमिक
(512) दूसरे का मुँह ताकनेवाला – परमुखापेक्षी (513) जो पहनने लायक हो – परिधेय
(514) जिसको मापा जा सके – परिमेय (515) उपकार के बदले किया गया उपकार – प्रत्युपकार
(516) जो जाकर पुनः आ गया हो – प्रत्यागत (517) बार-बार कही गई बात – पुनरुक्ति

- (518) पहले कहा गया कथन –पूर्वोक्त (519) दोपहर से पहले का समय –पूर्वाह्न
(520) मनुष्य के पुरुषार्थ द्वारा रचा गया है –पौरुषेय
(521) जिसका पुनः जन्म हुआ हो – पुनर्जन्म, (522) प्राचीन इतिहास का ज्ञाता – पुरातत्ववेत्ता
(523) किसी कार्य के बदले में की जानेवाली आशा –प्रत्याशा
(524) विदेश में रहने वाला –प्रवासी
(525) वह स्त्री जिसका पति दूर स्थान पर गया हो –प्रोषितपतिका
(526) वह स्त्री जिसके हाल ही शिशु उत्पन्न हुआ हो – प्रसूता
(527) ज्ञात इतिहास के पूर्व समय का – प्रागैतिहासिक
(528) पृथ्वी का वह भाग जिसके तीन ओर पानी हो –प्रायद्वीप
(529) केवल फलों पर निर्वाह करनेवाला –फलाहारी
(530) घूम-फिरकर सौदा बेचने वाला –फेरीवाला (531) फल की इच्छा रखनेवाला –फलेच्छु
(532) माँग कर जीविका चलाने वाला –फकीर/भिखारी/भिक्षुक (533) सर्पों का स्वामी –फणींद्र
(534) व्यर्थ में किया गया व्यय –फिजूलखर्ची/अपव्यय (535) फल देनेवाला –फलदायी
(536) सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय – ब्रह्ममुहूर्त
(537) सभा में आधे से अधिक का मत – बहुमत
(538) जो एक से अधिक धंधा करता हो –बहुधंधी (539) काफी अधिक कीमत का – बहुमूल्य
(540) बहुत विषयों का जानकार – बहुज्ञ
(541) जिसने सुनकर अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त किया है – बहुश्रुत
(542) समुद्र में लगने वाली आग–बडवानल
(543) किसी देवता पर चढ़ाने के लिए मारा जानेवाला पशु – बलिपशु
(544) जिसका जाति और समाज से बहिष्कार कर दिया गया हो –जाति बहिष्कृत/समाज बहिष्कृत (545) जो अनेक रूप धारण करता हो – बहुरूपिया
(546) जिस स्त्री के कोई संतान नहीं हो –बांझ
(547) जो बुद्धि कार्य से आजीविका चलाता हो – बुद्धिजीवी
(548) जिसकी और कोई मिसाल न हो – बेमिसाल
(549) जो आजीवन ब्रह्मचारी रहा हो – बाल ब्रह्मचारी
(550) बहुत से देवताओं के अस्तित्व में विश्वास रखने वाला मत – बहुदेववाद
(551) अनेक भाषाओं को जानने वाला –बहुभाषाविद
(552) रात का भोजन – ब्यालू/रात्रिभोज (553) जिसकी आशाएँ नष्ट हो गई हो –निराशा
(553) जिसका हृदय टूट गया हो – भग्नहृदय
(554) किसी भवन आदि के खंडित होने के बाद बचे भाग – भग्नावशेष
(555) भय के कारण बेचैन–भयाकुल (556) जो किसी आपत्ति को भोग चुका हो–भुक्तभोगी

- (557) भारत और यूरोप से संबंधित – भारोपीय (558) जो खुब खाता पीता हो – भोजन भट्ट
(559) भाग्य पर भरोसा करने वाला – भाग्यवादी (560) जो भाग्य का धनी हो – भाग्यवान
(561) दीवारों पर बने हुए चित्र – भित्तिचित्र
(562) जो पृथ्वी के भीतर का ज्ञान रखता हो – भूगर्भवेत्ता
(563) धरती पर चलने वाला जन्तु – भूचर (564) पृथ्वी को धारण करने वाला पर्वत – भूधर
(565) भूतों का देव – भूदेव (567) जिसका मन अटका हुआ हो – भ्रान्तचित्त
(568) औषधियों का जानकार – भेषज (569) पंचभूतों से बनी हुई वस्तु – पंचभौतिक
(570) भूगोल से संबंधित – भौगोलिक (571) प्रातःकाल गाया जानेवाला एक राग – भैरवी
(572) भूमि का पूत्र – भौम (मंगल) (573) जिसकी आँखें मगर जैसी हो – मकराक्ष
(574) किसी चीज के तत्त्व/मर्म का ज्ञाता – मर्मज्ञ
(575) जिसका मूल्य बहुत अधिक हो – महार्य, महंगा (576) मांस खानेवाला – मांसाहारी
(577) कम खर्च करनेवाला – मितव्ययी (578) जो कम बोलता हो – मितभाषी
(579) जो असत्य बोलता हो – मिथ्यावादी
(580) जिस स्त्री के आँखें मछली के समान हो – मीनाक्षी
(581) खुले हाथ से दान देनेवाला – मुक्तहस्त (582) मोक्ष की इच्छा रखनेवाला – मुमुक्षु
(583) जो रचना किसी व्यक्ति की अपनी स्वयं की हो एवं नई हो – मौलिक
(584) मठों की व्यवस्था करनेवाला – मठाधीश
(585) किसी मत का अनुसरण करनेवाला – मतानुयायी
(586) दो के बीच में पड़कर फैसला करानेवाला – मध्यस्थ
(587) यज्ञों की रक्षा करने वाला – मखत्राता/यज्ञरक्षक
(588) सुख और दुःख में समान रहने वाला – मनस्वी (589) जिसमें अपार जलराशि हो – महोदधि
(590) जो बहुत ऊँची आकांक्षा रखता हो – महत्वाकांक्षी (591) चुपचाप देखने वाला – मूकदर्शक
(592) जिसकी बुद्धि कमजोर – मन्दबुद्धि/मतिमांद्य (593) दोपहर का समय – मध्याह्न
(594) मध्यरात्रि का समय – मध्यरात्र (595) मन का असीम दुःख – मनस्ताप
(596) जहाँ केवल रेत ही रेत हो – मरुस्थल/मरुधरा (597) जिसकी आत्मा महान हो – महात्मा
(598) माता की हत्या करने वाला – मातृहंता
(599) जो मीठी वाणी बोलता हो – मिष्टभाषी/मृदुभाषी
(600) जिसने मृत्यु को जीत लिया हो – मृत्युंजय
(601) हरिण के नेत्रों – सी आखों वाली – मृगनयनी
(602) मुद्रा का अधिक चलन या प्रसार – मुद्रास्फीति
(603) दिल खोलकर कहना या गाना – मुक्तकंठ (604) मरने की इच्छा – मुमूर्षा
(605) मरणासन्न अवस्थावाला या मरने के इच्छुक – मुमूर्षु (606) जहाँ तक हो सके – यथासम्भव

- (607) जैसा चाहिए, उचित हो, वैसा — यथोचित
- (608) जितनी ताकत हो / शक्ति के अनुसार—यथाशक्ति (609) इच्छा के अनुसार —यथेच्छ
- (610) जुड़वाँ भाई या बहिन—यमल / यमला (611) रंग—मंच का परदा — यवनिका
- (612) घूम—घूम कर जीवन बितानेवाला — यायावर / घुमंतु
- (613) समाज को नई दिशा देकर नए युग की शुरुवात करनेवाला — युगप्रवर्तक
- (614) युद्ध की इच्छा रखनेवाला — युयुत्सु (615) युद्ध करने की इच्छा— युयुत्सा
- (617) अपने युग का ज्ञान रखने वाला — युगद्रष्टा
- (618) यज्ञ—स्थान पर स्थापित किया जानेवाला खंभा —यूप
- (619) इंद्रियों को नियंत्रित रखना — यम (620) जो यंत्र से संबंधित हो — यांत्रिक
- (621) रक्त की बूंद जमीन पर पड़ते ही दूसरा राक्षस जन्म ले — रक्तबीज
- (622) जिस स्त्री को मासिक रक्तस्त्राव हुआ हो — रजस्वला
- (623) किसानों से भूमि—कर लेनेवाला सरकारी विभाग — राजस्व विभाग
- (624) राज्य द्वारा अधिकारिक रूप प्रकाशित होनेवाला पत्र —राजपत्र
- (625) विभिन्न वनस्पति और औषधियों से तैयार पदार्थ — रसायन
- (627) पुरानी पीढ़ी द्वारा नई पीढ़ी को मिलनेवाली संपत्ति —रिक्थ / थाती / विरासत
- (628) रात को कुछ भी दिखाई नहीं देनेवाला रोग — रतौंधी
- (629) युद्ध में बड़ी कुशलता के साथ लड़नेवाला —रण बाँकुरा
- (630) जिसके नीचे रेंखाएँ लगाई गई हो — रेखांकित
- (631) प्रसन्नता से जिसके रोंगटे खड़े हो गए हो — रोमांचित
- (632) जो लकड़ी काटकर जीवन बिताता हो — लकड़हारा
- (633) जिसका कोई इलाज न हो —लाइलाज (634) जिसका वंश लुप्त हो गया हो —लुप्तवंश
- (635) जो विचार लिखे गए हो — लिपिबद्ध (636) लोभी स्वाभाव वाला — लुब्ध / लोभी
- (637) प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति —लब्ध प्रतिष्ठ (638) जो चाटने योग्य हो —लेह्य
- (639) जो इस संसार से भिन्न हो — लोकोत्तर
- (640) जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाए — लोमहर्षक
- (641) बचपन और यौवन के मध्य की उम्र — वयःसंधि
- (642) वंश परम्परा के अनुसार —वंशानुगत (643) जिसके हाथ में वज्र हो— वज्रपाणि
- (644) बहुत ही कठोर और बड़ा आघात —वज्रघात (645) मुकदमा दायर करनेवाला — वादी
- (646) भाषण देने में चतुर —वाग्मी (647) जिसका वर्णन करना संभव न हो — वर्णनातीत
- (648) बाहर के तापमान का असर रोकने के लिए की जानेवाली व्यवस्था — वातानुकूलन
- (649) कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रस्म — वाग्दान
- (650) वह कन्या जिसका विवाह करने का वचन दे दिया गया हो — वाग्दत्ता

- (651) जो अधिक बोलता हो –वाचाल
(652) सामाजिक मान मर्यादा के विपरीत कार्य करने वाला – वामाचारी
(653) गृह–निर्माण संबंधी विज्ञान – वास्तुविज्ञान (654) जो दूसरी जाति का हो – विजातीय
(655) जिस पर अभी विचार चल रहा हो –विचाराधीन (656) जिसकी पत्नी मर गई हो – विधुर
(657) जिसके अंदर कोई विचार आ गया हो – विकृत
(658) कानून के अनुसार सही हो – वैध/विधिमत
(659) जो बहस या विवाद का विषय हो – विवादास्पद
(660) किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला – विशेषज्ञ
(661) जिस पर विजय प्राप्त कर ली है – विजित
(662) संसार भर में प्रसिद्ध–विश्वविख्यात (663) सही और गलत में अन्तर करने में यक्षम –विवेकी
(664) वह स्त्री जो पढ़ी–लिखी ज्ञानी हो – विदुषी
(665) जिस पर विश्वास किया जा सके – विश्वसनीय
(666) जो विषय–वासनाओं में अधिक डूबा हुआ हो –विषयासक्त
(667) विनाश करने वाला –विध्वंसक (668) जिसके हाथ में विणा हो – वीणापाणि
(669) व्याकरण का ज्ञाता – वैयाकरण (670) विष्णु का उपासक – वैष्णव
(671) जो अत्यधिक भूखा हो –बुभुक्षित
(672) अपनी जगह से जिसे अलग कर दिया गया है – विस्थापित
(673) जिसके शरीर के भाग में कमी हो –विकलांग (674) विदेशों से संबंधित –वैदेशिक
(675) जो विजय की इच्छा रखता हो –विजयाकांक्षी
(676) प्रशंसा के बहाने निंदा करना – व्याज स्तुति (677) सौ वर्षों का समय –शताब्दी
(678) जो सौ बातें एक साथ याद रख सकता है –शतावधानी
(679) अनुसंधान के लिए दिया जाने वाला अनुदान – शोधवृत्ति
(680) हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार–शस्त्र (681) जो शक्ति का उपासक–शाक्त
(682) शत्रु का नाश करने वाला –शत्रुघ्न (683) जो शंका के योग्य हो –शंकास्पद
(684) शरण की इच्छा रखने वाला –शंकास्पद (685) शरण की इच्छा रखने वाला–शरणार्थी
(686) शरण में आया हुआ–शरणागत (687) जिसका कोई आदि और अन्त न हो –शाश्वत
(688) शाक,फल और फूल खानेवाला –शाकाहारी/निरामिष
(689) वह जिसके ऊपर शासन हो –शासित (690) शुभ चाहने वाला – शुभेच्छु/शुभाकांक्षी
(691) जिसके हाथ में शूल (त्रिशूल) हो –शूलपाणि (692) शिव के उपासक–शैव
(693) जो सुनने योग्य हो –श्रवणीय/श्रव्य (694) जो सुनाने योग्य हो – श्राव्य
(695) जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हो – श्लिष्ट(श्लेष)
(696) जिसके छः कोण हो – षट्कोण (697) छह–छह माह में होने वाला –षाण्मासिक

- (698) जिसके छह पद हो(भौरा) –षट्पद (699) छूत का रोग –संक्रामक
- (700) अन्न/भोजन बाँटना –सदावर्त (701) एक ही माँ से उत्पन्न भाई – सहोदर
- (702) एक ही माँ से उत्पन्न बहिन –सहोदरा (703) जो सब–कुछ जानता हो – सर्वज्ञ
- (704) जो अपनी पत्नी के साथ हो –सपत्नीक (705) स्त्री के स्वभाव जैसा –स्त्रैण
- (706) अपनी ही इच्छानुसार पति का वरण करनेवाली – स्वयंवरा
- (707) जिसको सिद्ध करने के लिए अन्य प्रमाण की जरूरत न हो – स्वयंसिद्ध/स्वतःप्रमाण
- (708) स्वेच्छा से दूसरों की सेवा करनेवाली – स्वयंसेवक
- (709) जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो – स्वयंपाकी
- (710) आजीविका आदि की दृष्टि से अपने ऊपर ही निर्भर रहनेवाला –स्वावलंबी
- (712) अपने द्वारा अनुभव किया हुआ – स्वानुभूत (713) छोटे विचारों वाला –संकीर्णवृत्ति
- (714) अपनी इच्छा के अनुसार लिया गया – स्वैच्छिक
- (715) शर्तों के साथ काम करने का समझौता –संविदा
- (716) जो अपने ही अधीन हो –स्वाधीन (718) सत्य के लिए संघर्ष/आग्रह – सत्याग्रह
- (719) जनप्रतिनिधि सभा का सदस्य –सभसद/विधायक/सांसद
- (720) सब को समान भाव से देखने वाला –समदशी (721)सभी लोगों के लिए–सार्वजनिक
- (722) सभी देशों से सम्बन्ध रखने वाला –सार्वदेशिक
- (723) जीवन को आघात पहुँचानेवाला –सांघातिक (724) मांसयुक्त भोजन – सामिष
- (725)आकार से युक्त–साकार (726)जिसे अक्षर ज्ञान हो या लिखना–पढ़ना जानता हो–साक्षर
- (727) जो सत्य बोलता हो – सत्यभाषी/सत्यवादी
- (728) खरी–खरी स्पष्ट बात करनेवाला –स्पष्टवादी/स्पष्टवादी
- (729) साहित्यिक गुण–दोषों की विवेचना करनेवाला – समीक्षक/समालोचक/आलोचक
- (730) जो असत्य न बोले – अमिथ्यावादी (731) जिसकी कमियाँ ठीक की गई हो –संशोधित
- (732) संहार करने वाला – संहारक (733) जिसका चरित्र अच्छा हो – सच्चरित्र
- (734) जिस पुस्तक पर जिल्द हो –सजिल्द (735) एक ही जाति के लोग – सजातीय
- (736) अच्छा आचरण करने वाला व्यक्ति – सदाचारी
- (737) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो – सधवा
- (738) जिसने अभी–अभी स्नान किया हो –सद्य स्नात(पुरुष)/सद्य स्नाता (स्त्री)
- (739) जिसने अभी–अभी बच्चे को जन्म दिया हो – सद्या प्रसूता
- (740) जो सदा से चला आ रहा हो –सनातन (741) न बहुत ठंडा न बहुत गर्म –समशीतोष्ण
- (742) जो समान उम्र का हो – समवयस्क
- (743) वर्तमान समय या ठीक समय पर हानेवाला – सामयिक
- (744) एक समय में रहनेवाले लोग ,स्थितियाँ आदि – समसामयिक

(745) जो सबका प्यारा हो – सर्वप्रिय

(746) उसी समय में हानेवाला/रहनेवाला—समकालीन (747) जो सब—कुछ खता हो—सर्वभक्षी

(748) जो सब—कुछ करने की शक्ति रखता हो – सर्वशक्तिमान

(749) अन्य लोगो के साथ गाया जाने वाला गीत – सहगान

(750) जिसका अस्तित्व अन्य वस्तु की अपेक्षा रखता हो – सापेक्षिक/सापेक्ष

(751) जो साथ पढ़ा हो – सहपाठी

(752) जिसके हजार भुजाएँ हो— सहस्रबाहु

(753) जो दूसरो की बात सहन कर सकता हो – सहिष्णु/सहनशील

(754) जो समस्त देशों/स्थानो से सम्बन्धित हो – सार्वभौम

(755) सब कुछ पाने वाला – सर्वलब्ध

(756) जिसमे सभी का मेल हो जाता है –सामंजस्य (757) संसार से संबन्धित—सांसारिक/ऐहिक

(758) सृजन करने की इच्छा – सिसृक्षा

(759) जो एक ही स्थान पर रहता हो, गतिहीन रहता हो – स्थावर

(759) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो –वयंभू

(760) जो काम करने में आसान हो—सुकर

(761) जिसका रंग सोने जैसा हो – सुनहरा

(762) जिसकी ग्रीवा सुंदर हो –सुग्रीव

(763) किसी बात को बहुत बारीकी से विचार करनेवाला – सूक्ष्मदर्शी

(764) सौ वस्तुओं का संग्रह/सौ का समूह – सैकड़ा/शतक

(765) जो धरती पर निवास करता हो – स्थलचर, थलचर

(766) किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की इच्छा – स्पर्धा

(767) दूसरे के स्थान पर काम करनेवाला – स्थानापन्न

(768) जो सदा रहने वाला—शाश्वत/सनातन

(769) जो अपना ही हित सोचता हो—स्वार्थी

(770) जो सब जगह विद्यमान रहता हो – सर्वव्यापी

(771) जो अपनी ही इच्छा से काम करता हो – स्वेच्छाचारी

(773) पसीने से उत्पन्न जीव (जैसे जूँ) – स्वेदज

(774) जो बाएँ हाथ से भी काम कर लेता हो – सव्यसाची

(775) जो समाचार भेजता है – संवाददाता

(776) जो सोया हुआ हो – सुषुप्त

(777) हंस की तरह जिस स्त्री की चाल हो – हंस गामिनी

(778) दूसरे के काम में दखल देना—हस्तक्षेप

(779) जिसको अपने हाथ में ले लिया है—हस्तगत

(780) हित चाहनेवाला – हितैषी/हितेच्छु

(781) वह लेख जो हाथ से लिखा गया है – हस्तलिखित

(782) सेना का वह भाग जो सबसे आगे रहता है – हरावल

(783) ऐसा दुख जो हृदय को चीर डाले – हृदयविदारक

(784) जिसे देखकर हृदय पिघल जाए –हृदयद्रावक

- (785) जो बात हृदय में अच्छी तरह बैठ गई हो — हृदयंगम (787) हृदय से संबंधित — हार्दिक
(789) सोने के समान चोटियोंवाला पहाड़ — हेमाद्रि
(790) जिन्होंने दूसरों के लिए अपना बलिदान किया हो — हुतात्म/शहीद
(791) यज्ञ में आहुति देनेवाला — होता (792) यज्ञ के लिए निर्धारित अग्नि — होमाग्नि
(793) जिस पर हँसी आती हो/जो हँसी का पात्र हो — हास्यास्पद
(794) हाथ से कार्य करने का कौशल — हस्तलाघव
(795) न टलनेवाली घटना/अवश्यंभावी घटना/भाग्याधीन — होनहार
(796) ऐसा बयान जो शपथ—सहित दिया गया हो — हलफनामा/शपथपत्र
(797) हवन से संबंधित साम्रगी — हवि

अध्याय 18 — विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अघ — अनघ		अभिज्ञ — अनभिज्ञ		अर्थ — अनर्थ	
अथ — इति		अतल — वितल		अवतल — उत्तल	
अघोष — सघोष (घोष)		अपेक्षित — अनपेक्षित		अग्रज — अनुज	
अमृत — विष		अनंत — अंत		अनुक्रिया — प्रतिक्रिया	
अनुरक्त — विरक्त		अनुकूल — प्रतिकूल		अनुयायी — विरोधी	
अंतरंग — बहिरंग		अग्र — पश्च		अलभ्य — लभ्य/प्राप्य	
अल्प — अति, महा, बहु, प्रचुर		अस्त — उदय		अनुरूप — प्रतिरूप	
अनेक — एक		अंधकार — प्रकाश		अनुलोम — प्रतिलोम/विलोम	
अक्षम — सक्षम		अगम — सुगम		अनाहूत (बिन बुलाया) — आहूत	
अपेक्षा — उपेक्षा		अधम — उत्तम		अपकार — उपकार	
अपमान — सम्मान		अपयश — सुयश (यश)		अमर — मर्त्य	
अवनि — अंबर		अरुचि — सुरुचि		अवरोध — अनवरोध	
अवशेष — निःशेष		अनुग्रह — दण्ड/कोप		अदेय — देय	
अजेय — जेय		अनैक्य — ऐक्य		अवनति — उन्नति	
अंतर्द्व द्व — बहिर्द्व द्व		अचर — चर		अकाल — सुकाल	
अंगीकार/स्वीकार — अस्वीकार		अतिवृष्टि — अल्पवृष्टि, अनावृष्टि		अति — अल्प	
अर्वाचीन — प्राचीन		अज्ञ — विज्ञ		अल्पज्ञ — बहुज्ञ	
अतुकांत — तुकांत		अकर्मक — सकर्मक		अनित्य — नित्य	
अनुराग — विराग		अनुरक्त — विरक्त		अनुनासिक — निरनुनासिक	
अल्पप्राण — महाप्राण		अधिकार — अनाधिकार		अधिकृत — अनधिकृत	

असीम — ससीम	अर्पण — ग्रहण	अल्पायु — दीर्घायु
अवर (नीचा) — प्रवर	अपराधी — निरपराध	अनिवार्य — ऐच्छिक/वैकल्पिक
अतिथि — आतिथेय	अनहोनी — होनी	अभियुक्त — अभियोगी
अधुनातन/नूतन — पुरातन	असूया — अनसूया	अस्त्रीकरण — निरस्त्रीकरण
अल्पसंख्यक — बहुसंख्यक	आकाश — पाताल	आकीर्ण — विकीर्ण
आगत — अनागत	आक्रमण — प्रतिरक्षा	आचार — अनाचार
आगामी — विगत	आधार — निराधार	आजादी — गुलामी
आदि — अंत	आदर — निरादर,	आकर्षण—विकर्षण, अनाकर्षण, अपकर्षण
आर्ष(वैदिक) — अनार्ष	आवश्यक — अनावश्यक	आस्तिक — नास्तिक
आंडबर — सादगी	आरंभ — अंत(समापन)	आडंबरमुक्त — आडंबरहीन
अभ्यंतर — बाह्य	आवास — प्रवास	आलसी — कर्मठ, कर्मण्य
आस्था — अनास्था	आवृत(ढका हुआ) — अनावृत	आरोह — अवरोह
आच्छादित — अनाच्छादित	आश्रित — निराश्रित	आदान — प्रदान
आतुर — अनातुर	आशा — निराशा	आनंद — विषाद, शोक
आनंदमय—विषादपूर्ण, शोकमग्न	आर्द्र — शुष्क	आयात — निर्यात
आकांक्षा — अनाकांक्षा	आग्रह — दुराग्रह	आधुनिक — प्राचीन
आविर्भाव — तिरोभाव	आरूढ(सवार) — अनारूढ	आमिष (सामिष) — निरामिष
आज्ञाकारी — अनाज्ञाकारी	आज्ञापालन—अवज्ञा	आत्मनिर्भर—अनुजीवी, परजीवी
आदृत—अनादृत, निरादृत, तिरस्कृत	आवर्तक — अनावर्तक	आगमन — निर्गमन
आसक्त — अनासक्त	आशीर्वाद — अभिशाप, शाप	इच्छा — अनिच्छा
इहलाक — परलोक	इति — अथ	इष्ट — अनिष्ट
ईमानदार — बेईमान	ईश्वर — अनीश्वर	उचित — अनुचित
उपचार — अपचार	उदार — अनुदार	उपसर्ग — परसर्ग
उत्कृष्ट — निकृष्ट	उपयुक्त — अनुपयुक्त	उपकार — अपकार
अत्थान — पतन	उत्तम — अधम	उत्कर्ष — अपकर्ष
उत्कृणी — ऋणी	उपचय(उन्नति)—अपचय(हानि),	उन्मीलन(खिलना) — निमीलन
उत्साह — निरुत्साह	उदात्त(ऊँचा) — अनुदात्त	उन्नति — अवनति
उन्नत — अवनत	उत्पत्ति — विनाश	उद्घाटन — समापन
उन्मूलन — स्थापन/रोपण	उग्र — सौम्य	उद्धत — विनीत
उन्मुख — विमुख	उपमान — उपमेय	उत्तीर्ण — अनुत्तीर्ण
उदयाचल — अस्ताचल	उत्तरायण — दक्षिणायण	उभरा — धँसा
उपत्यका (पहाड़ के नीचे की समतल भूमि) — अधित्यका (पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन)		

उर्वर — अनुर्वर/ऊसर	उष्ण — शीत	ऊर्ध्व — अध/अधर
ऊर्ध्वगामी — अधोगामी	ऋत(सत्य) — अनृत(असत्य)	ऋणात्मक — धनात्मक
एक — अनेक	एकाकी — समग्र	एकत्र — सर्वत्र
एकाग्र — चंचल	एकांत — अनेकांत	एड़ी — चोटी
एकल — सकल	ऐश्वर्य — अनैश्वर्य	ऐहिक — पारलौकिक
ऐक्य — अनैक्य	ऐतिहासिक — अनैतिहासिक	ओजस्वी/तेजस्वी — निस्तेज
औचित्य — अनौचित्य	औपचारिक — अनौपचारिक	औदार्य — अनौदार्य
कदाचार — सदाचार	कलंकित — निष्कलंक	कल्याण — अकल्याण
कटु — मधुर	कड़वा — मीठा	क्रम — व्यतिक्रम
कनिष्ठ — वरिष्ठ/ज्येष्ठ	कमी — बेसी/बाहुल्य	कार्य — अकार्य
कारण — अकारण	कायर — शूरवीर	कानूनी — गैर-कानूनी
काला — गोरा/सफेद	कुरूप — सुन्दर	कापुरुष — नुरुषार्थी
कोप — कृपा/अनुग्रह	कीर्ति — अपकीर्ति	क्रोध — क्षमा
क्रिया — प्रतिक्रिया	कोमल — कठोर	कुबुद्धि — सुबुद्धि
कसूर — बेकसूर	कुमार्ग — सुमार्ग	कुकृति — सुकृति
क्रूर — अक्रूर/सदय	कुपथ — सुपथ	कुलटा — पतिव्रता
कृत्रिम — प्रकृत/अकृत्रिम	कुलीन — अकुलीन	कर्त्ता — अकर्त्ता
कलुषित — निष्कलुष	कृष्ण — शुक्ल	कृतज्ञ — कृतघ्न
कृपा — कोप	क्रय — विक्रय	कृश — पुष्ट/स्थूल
कुख्यात — विख्यात	खरा — खोटा	खल — सज्जन, साधु
खगोल — भूगोल	खिलना — मुरझाना	खुशबू — बदबू
ख्यात — कुख्यात	खाद्य — अखाद्य	खंडन — मंडन
खास — आम	खरीद — बिक्री/फरोख्त	खीजना — रीझना
खेद — प्रसन्नता	खर्च — आमदनी	गगन — पृथ्वी
गमन — आगमन	गहरा — उथला	गरल — सुधा/अमृत
गरिमा — लघिमा	ग्रीष्म — शीत	ग्रस्त — मुक्त
गाढ़ा — पतला	गौरव — लाघव	गुण — अवगुण
गत — आगत	ग्राह्य — अग्राह्य	गृहस्थ — सन्न्यासी
गुप्त — प्रकट	गम्य — अगम्य	गुरु — लघु
गोचर — अगोचर	गौण — प्रमुख	ग्राम्य — नागर
गेय — अगेय	घटित — अघटित	घना — छितरा/बिखरा
घर — बाहर/बेघर	घात — प्रतिघात	घाटा — मुनाफा

घृणा — प्रेम	घोष — अघोष	चर — अचर
चल — अचल	चतुर — मूढ़	चपल — गंभीर
चंचल — स्थिर	चिर — अचिर	चिरंतन — नश्वर
चिंतित — निश्चित	चेतन — अचेतन/जड़	चेतना — मूर्च्छा
चिरायु/दीर्घायु — अल्पायु	चिकना — खुरदरा	चोर — साहूकार
छली — निश्छल	छद्म — व्यक्त	छूत — अछूत
जंगली — घरेलू/पालतु	जंगम — स्थावर	जड़ — चेतन
जय — पराजय	जल — थल	जन्म — मृत्यु
जीवन — मरण	जागरण — निद्रा	जाग्रत — सुषु
जटिल — सरल	ज्योति — तम	ज्वार — भाटा
जेय — अजेय	ज्येष्ठ — लघु	झगड़ालू — शान्त
झीना — गाढ़ा	झोपड़ी — महल	टूटना — जुड़ना
टोटा — नफा/फायदा	ठोस — तरल	ठिगना — लंबा
डरपोक — निडर	तरुण — वृद्ध	तृषा — तृप्ति
तृष्णा — वितृष्णा	त्याग — ग्रहण	तेजस्वी — निस्तेज
तरल — ठोस	तृप्त — अतृप्त	ताप — शीत
तामसिक — सात्विक	ताजा — बासी	त्यक्त — गृहीत
तुच्छ — महान	तुकांत — अतुकांत	तुलनीय — अतुलनीय
तिमिर — प्रकाश	तीव्र — मंद	थल — जल
थोक — फुटकर/खुदरा	दंड — पुरस्कार	दानव — देव
दानी — कृपण/कंजूस	दया — क्रूरता/निर्ममता	दयालु — निर्दय
दाता — सूम	दुरुपयोग — सदुपयोग	दीर्घ — लघु
दास — स्वामी	देय — अदेय	द्वैत — अद्वैत
दुष्ट — भद्र, भला	द्वंद्व — निद्वंद्व	दुराचारी — सदाचारी
दुर्जन — सज्जन	दिव्य — अदिव्य	दुष्कर — सुकर
दरिद्र/निर्धन — धनी/सम्पन्न	दुर्बल — सबल	दीर्घ — लघु
दूषित — स्वच्छ	दुष्प्राप्य — सुप्राप्य	दुर्लभ — सुलभ
दोष — गुण	दाखिल — खारिज	धनाढ्य — निर्धन
धर्म — अधर्म	धीर — अधीर	ध्वंस/नाश — निर्माण
धवल — कृष्ण	धनात्मक — ऋणात्मक	धृष्ट — विनीत
नख — शिख	नकद — उधार	नवीन — प्राचीन
नमकहराम — नमकहलाल	नरक — स्वर्ग	नश्वर — शाश्वत

नागरिक — ग्रामीण	नाम — अनाम	नादान — समझदार
नाश/ध्वंस — निर्माण	नास्तिक — आस्तिक	निकट — दूर
निडर — कायर	निरामिष — सामिष	निराकार — साकार
निद्रा — जागरण	निषिद्ध — विहित	निंदा — स्तुति
निंद्य — वंद्य/स्तुत्य	निरपेक्ष — सापेक्ष	निर्गुण — सगुण
निश्चल — चंचल	निरर्थक — सार्थक	निरक्षर — साक्षर
निष्काम — सकाम	निष्फल — सफल	नीरस — सरस
नेकी — बदी	निर्मल — मलिन	नैतिक — अनैतिक
नश्वर — अनश्वर/शाश्वत	निर्लज्ज — सलज्ज	निःस्वार्थ — स्वार्थी
निर्दय — सदय	नित्य — अनित्य	निर्यात — आयात
निश्चय — अनिश्चय/संदेह	नत — उन्नत	नूतन — पुरातन
निष्क्रिय — सक्रिय	नियमित — अनियमित	न्यून — अधिक
न्यूनतम — अधिकतम	नैसर्गिक — कृत्रिम	पठित — अपठित
पतन — उत्थान	परकीय — स्वकीय	परतंत्र — स्वतंत्र
पराधीन — स्वाधीन	परितोष — दंड	परुष/कठोर — कोमल
पंडित — मूर्ख	पश्चात् — पूर्व	पाद्य — अपाद्य
पात्र — अपात्र	पार — अपार	परमार्थ — स्वार्थ
पालक — घालक	पवित्र — अपवित्र	पाश्चात्य — पौरस्त्य/पौर्वात्य
पुरातन — नूतन	परा — अपरा	पूरा — अधूरा
पेय — अपेय	पैना — थोथरा	पूर्ववर्ती — परवर्ती
पुरस्कार — दंड	पुरोगामी — पश्चगामी	पूर्ण — अपूर्ण
प्रवृत्ति — निवृत्ति	प्रातः — सायं	प्रजा — राजा
प्रजातन्त्र — राजतन्त्र	प्रकाश — अंधकार	प्रशंसा — निन्दा
प्रतीची — प्राची	प्रसारण — संकुचन	प्राकृतिक — कृत्रिम
प्रधान — गौण	प्रमुख — सामान्य	प्रसन्न — अप्रसन्न
प्रसिद्ध — अप्रसिद्ध	प्रगति — अवनति	प्रवेश — निर्गम
प्रेम — घृणा	प्रत्यक्ष — परोक्ष	पदोन्नत — पदावनत
भूषण — दूषण	भेद — अभेद	भोगी — योगी
भोज्य — अभोज्य	भोला — चालाक	भिखरी — अमीर
मंगल — अमंगल	मग्न — दुखी/ऊपर	ममता — निष्ठुरता
महात्मा — दुरात्मा	महीन — मोटा	मत — विमत
मान — अपमान	मानवीय — अमानवीय	मित्र — शत्रु

मुख – पृष्ठ/प्रतिमुख	मसृण – रुक्ष	मृदु – कठोर
मौखिक – लिखित	मूक – वाचाल	मनुज – दनुज
मनुष्यता – पशुता	मरण – जीवन	मित – अपरिमित
मिथ्या – सत्य	मँहगा-सस्ता	मिलन/मिलना-बिछोह/बिछुड़ना
मुनाफा – नुकसान	मेहनती – आलसी	मोटा – पतला
मृत – जीवित	मान्य – अमान्य	मितव्यय – अपव्यय
मुख्य – गौण	मूल्यवान – मूल्यहीन	मलिन – निर्मल
मेहमान – मेजबान	मुसीबत – आराम	यश – अपयश
यथार्थ – आदर्श/कल्पित/मिथ्या	युगल – एकल	योग – वियोग
योग्य – अयोग्य	युक्त – अयुक्त	युद्ध – शांती
युवा – वृद्ध	यौवन – बुढ़ापा/वार्धक्य	रंक – राजा
रत- विरत	राग – द्वेष	राक्षस – देवता
रीता(खाली) – भरा	रक्षक – भक्षक	रुदन – हास्य
रोगी – निरोग	रूग्ण – स्वस्थ	रिक्त – पूर्ण
रचना – ध्वेस	लचीला – कठोर	लघु – दीर्घ
ललित/सुरूप – कुरूप	लाघव – गौरव	लाभ – हानि
लिप्त – निर्लिप्त	लिखित-अलिखित/मौखिक	लोक – परलोक
लौकिक – अलौकिक	लंबा – चौड़ा	लभ्य – अलभ्य
लोभी – निर्लोभ	वन्द्य – निन्द्य	वर – वधू
वरदान – अभिशाप	वक्र – ऋजु	वाद – विवाद
वादी – प्रतिवादी	विराम – अविराम	विद्वान – मूर्ख
विस्मरण – स्मरण	विरत – रत/निरत	विजय – पराजय
विधि – निषेध	विधवा – सधवा	विपन्न – सम्पन्न
विरक्त – आसक्त/अनुरक्त	विनीत – दुर्विनीत/उद्दंड	वियोग – संयोग
विलंब – अविलंब	विजेता – अविजित	विशिष्ट – सामान्य
विशेष – सामान्य/साधारण	वृष्टि – अनावृष्टि	वृद्धि – संक्षेपण
वेदना – आनन्द	विभव – पराभव	विस्तार – संक्षेप
विस्तृत – संक्षिप्त	वैतनिक – अवैतनिक	विश्लेषण – संश्लेषण
विपुल – अल्प	विवादास्पद – निर्विवाद	व्यक्ति – समाज
व्यक्तिगत – सामाजिक	वैयक्तिक – निर्वैयक्तिक	वैमनस्य – सौमनस्य
विपत्ति – संपत्ति	विपदा – संपदा	विज्ञ – अज्ञ
विकास – ह्रास	व्यर्थ – अव्यर्थ/सफल	विख्यात – कुख्यात

विसर्जन — आवाहन	विदाई — स्वागत	व्यष्टि — समष्टि
शयन — जागरण	शकुन — अपशकुन	शायद — अवश्य/निश्चय
शासक — शासित	शांत — अशांत	शिख — नख
शिक्षित — अशिक्षित	शिव — अशिव	शीत — ऊष्ण
शुक्ल — कृष्ण	शीर्ष — पाद/तल	शुभ — अशुभ
शुद्ध — अशुद्ध	शुष्क — आर्द्र	शेष — अशेष
श्वेत — श्याम	शोक — हर्ष	शोषक — शोषित
श्रीगणेश — इति	श्रव्य — अश्रव्य	शिष्ट — अशिष्ट
शूरवीर — कायर	श्यामल — गौर	श्वास — उच्छ्वास
श्लाघा — निन्दा	श्लील — अश्लील	श्रोता — वक्ता
सचेत — अचेत	सफल — असफल/विफल	सत् — असत्
सम — विषम	सरल — कठिन/कुटिल/वक्र	सजल — निर्जल
सबल — निर्बल	संभव — असंभव	सहृदय — हृदयहीन
सम्मुख — विमुख	सत्कार — तिरस्कार	सरस — नीरस
सक्षम — अक्षम	ससीम — असीम	सत्य — असत्य
सविकार — निर्विकार	सवर्ण — विवर्ण/असवर्ण	सहमत — असहमत
सर्द — गरम	सदाचार — कदाचार	सहानुभूति — घृणा
सम्मान — असम्मान	समास — व्यास	संकल्प — विकल्प
संकीर्ण — विस्तीर्ण	संयुक्त — वियुक्त	संयोग — वियोग
संग — निस्संग	संघटन — विघटन	संधि— विग्रह
संक्षिप्त — विस्तृत	संतोष — असंतोष	संशय — निश्चय
संध्या — प्रातः	संश्लिष्ट — विश्लिष्ट	साकार — निराकार
सादर — निरादर	सीमित — असीमित	साहस — भय
साहसी — भीरू	सार्थक — निरर्थक	सापेक्ष — निरपेक्ष
साक्षर — निरक्षर	साधु — असाधु	साधर्म्य — वैधर्म्य
सुरीला — बेसुरा	सुलभ — दुर्लभ	सुधार — बिगाड़
सुकृति — कुकृति	स्मरण — विस्मरण	स्थावर — जंगम
स्थूल — सूक्ष्म	स्वकीय — परकीय	स्वीकृत — अस्वीकृत
स्वार्थ — परमार्थ	स्पृश्य — अस्पृश्य	स्वजाति — विजाति
स्वतंत्र — परतंत्र	स्थिर — अस्थिर	सुयोग — वियोग
सुर — असुर	सुगम — दुर्गम	सुरीति — कुरीति
सुगंध — दुर्गंध	सुअवसर — कुअवसर	सुबुद्धि/सदबुद्धि—दुर्बुद्धि

सुप्रबंध — कुप्रबंध	सुबोध — दुर्बोध	सुकर्म — कुकर्म
सुमति — कुमति	सुशील — दुश्लील	सूक्ष्म — स्थूल
सौभाग्य — दुर्भाग्य	सृजन — विनाश/संहार	सृष्टि — प्रलय
सुकर — दुष्कर	सुधा — गरल/विष	स्थिर — चंचल
स्वर्ग — नरक	स्वजाति — विजाति	सन्नायासी — गृहस्थ
स्तुति — निंदा	स्वस्थ — अस्वस्थ	स्पष्ट — अस्पष्ट
साकार — निराकार	हरा — सूखा	हर्ष — विषाद
हार — जीत	हित — अहित	हिंसा — अहिंसा
होनी — अनहोनी	हेय — ग्राह्य	क्षणिक — शाश्वत
क्षमा — दण्ड	क्षर — अक्षर	क्षुद्र — विराट
ज्ञात — अज्ञात	ज्ञान — अज्ञान	ज्ञेय — अज्ञेय

अध्याय 19 — पर्यायवाची

अंक — गोद, क्रोड, पार्श्व, संख्या, गिनती, आँकड़ा	अंग — भाग, अंश, हिस्सा, गात्र, पक्ष, अवयव, अजो
अँगूठी — मुद्रिका, मुँदरी, छल्ला,	अंचल — क्षेत्र, इलाका, प्रदेश, प्रांत, भाग, आँचल, पल्लू, किनारा
अंजाम — नतीजा, परिणाम, फल, अंत, खात्मा	अंत — अवसान, इति, आखिर, उन्मूलन, नाश, संहार
अंतर — फर्क, भिन्नता, भेद, असमानता, फासला, दूरी,	अंतराल — मध्यान्तर, अवकाश, अंतर, समयान्तर
अंतर्धान — ओझल, गायब, तिरोहित, लुप्त	अजनबी — अनजान, अपरिचित, अज्ञात, नावाकिफ
अंश — पक्ष, अंग, हिस्सा, अवयव, भाग, शरीर, सहायक	अंधा — नेत्रहीन, अधियारा, चक्षुहीन, दृष्टिहीन
अंतःपुर — रनिवास, जनानखाना, भागपुर, हरम	
अंतरंग — आंतरिक, अभ्यन्तर, घनिष्ठ, दोस्ताना, भीतरी, मैत्रीपूर्ण, हार्दिक	
अंधकार — तम, तिमिर, अँधेरा, अधियारा, ध्वात, तमिस्त्र, तमस	
अंदाज — अटकल, अनुमान, कूत, तखमीना, ढंग, तर्ज, तौर-तरीका	
अतिथि — मेहमान, पाहुन, आगंतुक, अभ्यागत	अर्कमण्य — निकम्मा, निखट्टू, निठल्ला, आलसी
अग्नि — आग, अनल, पावक, वह्नि, ज्वाला, कृशानु, वैश्वानर, दहन, हुतासन, हुतभुक, जातवेद, शिखी, अरुण	
अक्सर — अधिकतर, अमूमन, प्रायः, बहुधा, बार-बार	
अनादर — निरादर, तिरस्कार, अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, बेइज्जती, तौहीन	
अकस्मात् — अचानक, एकाएक, सहसा	अनाज — अन्न, धान्य, शस्य, धान, गल्ला, दाना, खाद्यान
दुर्भिक्ष, सूखा, काळ	अध्यापक — आचार्य, गुरु, शिक्षक, उपाध्याय, प्रवक्ता, व्याख्याता, अवबोधक
अखंड — अभंग, अविभक्त, अछिन्न, अक्षत, पूरा, साबुत, निरन्तर	
अर्जुन — पार्थ, सव्यसाची, गाण्डीवधारी, गुडाकेश, धनंजय	
अजीब — अद्भुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण, असामान्य	

अहंकार—दंभ, घमंड, अभिमान, दर्प, मद, गरूर, गुमान	अटल—अडिग, पक्का, अविचल, फिर, अपरिवर्तित
अमृत — पीयूष, सुधा, अमिय, सोम, सुरभोग, अमी	अतुल — पीयूष, सूधा, अमिय, सोम, सुरभोग, अमी
अतुल — अनुपम, अद्वितीय, बेजोड़, बेमिसाल, बेनजीर	
अरण्य — वन, जंगल, कानन, विपिन, अटवी, कांतार	अधर — ओठ, ओष्ठ, रदपुट, लब
अत्याचार — अनाचार, अन्याय, उत्पात, जुल्म, नृशंसता, अपकार	
अधर्म — पाप, अनाचार, जुल्म, अपकर्म, अनीत, अन्याय	
अधर्मी — निकृष्ट, नीच, पतित, गिरा हुआ, कमीना, कुत्सित, क्षुद्र, घटिया	
अधिकार — आधिपत्य, कब्जा, दावा, स्वत्व, हक, स्वामित्व	अनार — दाड़िम, शुकोदन, शुकप्रिय, रामबीज
अनुपम — अनोखा, अनूप, अनूठा, अद्भूत, अतुल, अद्वितीय, निराला	अनुमान — कयास, अटकल, अंदाज
अधीन — आश्रित, निर्भर, नीचे, परवश, मातहत, वशीभूत, अवलंबित	
असुर — दानव, राक्षस, निशाचर, दनुज, रजनीचर, तमचर, दैत्य, सुरारि	
अधीर— आकुल, आतुर, उद्विग्न, बेताब, व्यग्र, विकल	अश्व—घोड़ा, तुरंग, तुरंगम, बाजी, हय, घोटक, सैधव
अज्ञानी — अबोध, मुढ़, मूर्ख, नादान, अज्ञ, अहमक, भोंदू, उजबक	
अनचाहा — अनभिष्ट, अनिच्छित, अनाकांक्षित, अनभिलाषित	अखिल—पूरा, सारा, संपूर्ण, पूर्ण, समस्त
अचल — अडिग, अटल, अविचल, स्थिर, दृढ़	
अचेत — मूच्छित, बेहोश, बेखबर, संज्ञाहीन, संज्ञाशून्य, चेतनाहीन, चेतनाशून्य	
अतिरिक्त — अलग, पृथक, भिन्न, जुड़ा, न्यारा	अधिकार—शक्ति, सार्वभूम्य, क्षमता, अर्हता, योग्यता
अनंतर — तदुपरान्त, तत्पश्चात्, फिर, बाद में, के पिछे	अनाथ....बेसहारा, यतीम, नाथहीन, दीन, निराश्रित
अनिवार्य — अपरिहार्य, बाध्यकर, आवश्यक, अटल, लाजिमी	
अनिष्ट—अशुभ, आतिकर, बुरा, अकल्याणकर, अमंगलकारी	अनुकूल—अनुरूप, संगत, मुआफिक, अनुसार
अनुचित — अयुत, अनुपयुक्त, बेजा, गैरवाजिब, गैरमाकूल, नाजायज	
अनुकरण — अनुसरण, अनुगमन, नकल, देखादेखी, अनुवर्तन	
अनुमति — मंजूरी, स्वीकृति, आज्ञा, इजाजत, सहमति	
अनुरूप — समरूप, सदृश, समान, तुल्यरूप, मिलता—जुलता	
अनुरोध — प्रार्थना, विनती, निवेदन, याचना, अभ्यर्थना	अनूठा—अनोखा, निराला, विलक्षण, विचित्र, बेजोड़
अन्वेषण — गवेषण, खोज, जाँच, अनुसंधान, शोध	अनमान— अनादर, अवमान, बेइज्जती, अवज्ञा
अपार — असीम, अनंत, बेहद, बेशुमार, निस्सीम	अपराध — कसूर, दोष, जुर्म
अभिजात — कुलीन, संभ्रांत, योग्य, श्रेष्ठ, विशिष्ट	अभिप्राय—तात्पर्य, आशय, मतलब, मंशा, उद्देश्य
अल्प — न्यून, थोड़ा, बहुत, कम, अपर्याप्त, नाकाफी	अवज्ञा — अनादर, अवमानना, अनमान, तिरस्कार
अवनति — अपकर्ष, गिराव, घटाव, हास, उतार	अवस्था — दशा, स्थिति, हालत
अशुद्ध—दूषित, अशुचि, गंदा, अपवित्र, ऐतबार, मलिन	अस्त— तिरोहित, अदृश्य, लुप्त, गायब, ओझल
असभ्य—अशिष्ट, गँवार, अभद्र, दुश्शील	अनजान—अजनबी, अपरिचित, अनभिज्ञ, अनचीन्हा, गैर, बेगाना

आँख — नेत्र, नयन, चक्षु, दृग, लोचन, अक्षि, नजर, अक्ष, चश्म

आकाश — नभ, इंबर, गगन, व्योम, अनंत, तारापथ, अंतरिक्ष, अभ्र, आसमान, फलक, नाक, खगोल, पुष्कर, शून्य

आम — आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल, अतिसौरभ, पिकबन्धु, मधुदूत, मामूली, सामान्य, साधारण

आत्मा — चैतन्य, ब्रह्म, क्षेत्रज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वव्याप्त, विभु, जीव

आयु — उम्र, वय, अवस्था, जीवनकाल, वयस्, जिन्दगी

आनंद — प्रसन्नता, आह्लाद, उल्लास, मोद, प्रमोद, खुशी, सुख, मजा, लुफत, हर्ष

आज्ञा — आदेश, हुक्म, निर्देश, फरमान, इजाजत, अनुमति, अनुज्ञा

आभूषण — अलंकार, भूषण, गीना, आभरण, मंडन, जेवर, टूम

आश्चर्य — अचंभा, अचरज, ताज्जुब, विस्मय, हैरत, हैरानी

आदरणीय — सम्मानीय, सम्मान, मान्य, समादरणीय **आंसू** — अश्रु, नयनजल, नेत्रनीर, नेत्रवारि, नयपनीर

आकर्षक — मोहक, लुभावना, दिलकश, मनोहर, मनोहारी

आकृति — आकार, चेहरा—मोहरा, डील—डौल, गठन, नैन—नक्श

आक्षेप — आरोप, अभियोग, दोषारोपण, इल्जाम

आखिरकार — अनंत, अंततोगत्वा, परिणामतः, फलतः

आचरण — व्यवहार, चाल—चलन, बरताव, सदाचार, शिष्टाचार

आडंबर — ढोंग, ढकोसला, पाखण्ड, प्रपंच, दिखावा, साँग

आदर्श — प्रतिमान, मानक, नमूना, प्रतिरूप

आदि — पहला, प्रथम, आरम्भिक, शुरुका, आदिम

आधार — अवलंब, सहारा, आश्रय

आपत्ति — विपत्ति, आफत, मुसिबत, आपदा, विपदा

आरम्भ — श्री गणेश, सूत्रपात, शुरुआत, उपक्रम, बिस्मिल्ला

आयुष्मान — चिरायु, चिरंजीव, दीर्घायु, शतायु, दीर्घजीवी

आराम — सुख, चैन, करार, विश्राम, विश्रांति

आलोचना — टीका—टिप्पणी, समीक्षा, गुण—दोष—निरूपण, नुक्ताचीनी

आवाज — शब्द, ध्वनि, स्वर, रव

आश्चर्य — अचरज, अचम्भा, कौतुक, कुतूहल, कौतूहल

आश्रय — भरोसा, अवलम्ब, सहारा, आधार, प्रश्रय

इच्छा — अभिलाशा, आकांक्षा, कामना, चाह, लिप्सा, लालसा, ईहा, स्मृहा, वांछा, मनोरथ, वासना, तमन्ना,

अरमान, मुराद, हसरत, आरजू

इंद्र — देवराज, सुरपति, मघवा, पुरंदर, देवेश, शक्र, शतऋतु, देवेन्द्र, शचीपति, वासन, सुरेश, सहस्त्राण, बृत्रहा,

इंद्रधनुष — सुरधनु, सुरचाप, इंद्रचाप, सप्तवर्ण, शक्रचाप

इंद्राणी — शची, इंद्रवधू, ऐंद्री, इंद्रा, पुलोमजा

ईर्ष्या — कुढ़न, खार, जलन, डाह, द्वेष, रश्क, मत्सर, स्पर्धा, हसद

ईश्वर — जगदीश, जगन्नाथ, परमात्मा, परमेश्वर, प्रभु, ब्रह्म, स्त्रष्टा, अल्लाह, खुदा, निरंजन, विभु सचिदानंद,

साहब, स्वयंभू, परवरदिगार, साई

इच्छुक — अभिलाषी, उत्कंठित, लालायित, उत्सुक, आतुर

इन्कार — निषेध, अनंगीकार, अस्वीकृति, अनंगीकरण, प्रत्याख्यान

इशारा — संकेत, इंगित, निर्देश, सैन

इष्ट — वांछनीय, काम्य, इच्छित, अभिप्रेत, अभीष्ट, मनोवांछित

ईमानदारी — सदाशयता, निष्कपटता, दयानतदारी, निच्छलता

उत्सव — क्षण, मह, उद्धव, जलसा, जश्न, समारोह, पर्व, त्योहार

उग्र — अविनीत, उत्कट, उद्दंड, उद्धत, कर्कश, तूफानी, तेज, प्रचण्ड, विकट, भीषण

उत्साह — उमंग, अध्यवसाय, उछाह, उल्लास, स्फूर्ति, जोश, हौसला

उन्नति — विकास, उत्कर्ष, उत्थान, अभ्युदय, उठना, प्रगति, तरक्की, बढ़ोतरी

उदय — आरोहण, उन्नति, चढ़ना, प्रकट होना, उदगमन

उपहास — मजाक, खिल्ली, परिहास, मखौल, हँसी

उत्पत्ति — जनन, उदगम, व्युत्पत्ति, पैदाइश, आरंभ, आविर्भाव, उदय, शुरुआत, प्राकट्य, मूल स्त्रोत, स्रोत

उद्दंड — असभ्य, क्रूर, दूराचारी, दुष्ट, अविनीत, उच्छृंखल

उत्पात — उपद्रव, ऊधम, झगड़ा, दंगा, फसाद, हंगामा, हुल्लड़, अशांति

उपवन — बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन, आरामगाह

उपयोग — इस्तेमाल, उपभोग, प्रयोग, व्यवहार, सेवन

उचित — उपयुक्त, वाजिब, मुनासिब, संगत, समीचीन, ठीक

उजाड़ — वीरान, बियाबान, सुनसान, निर्जन, बरबाद

उतार — अवरोहण, अवहरण, अधोगमन

उत्कंठा — लालसा, उत्सुकता, चाव, आतुरता, प्रबलेच्छा

उत्तम — श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, प्रवर, प्रकृष्ट, बढ़िया

उत्थान — उत्कर्ष, आरोह, चढ़ाव, उत्क्रमण, उठाव

उदास — उन्मन, अवसन्न, विषण्ण, खिन्न, चिंताकुल

उदासीन — विरक्त, वीतराग, निर्लिप्त, अनासक्त

उदाहरण — दृष्टान्त, मिसाल, नजीर, नमूना

उद्देश्य — लक्ष्य, ध्येय, निमित्त, प्रयोजन, हेतु

उपकार — हितसाधन, भलाई, नेकी, परोपकार, कल्याण

उपज — कृषिफल, पैदावर, फसल

उपमा — तुलना, समानता, मिलान, सादृश्य

उपयोगी — उपादेय, इष्टकर, काम का, कार्यकार

उपाय — युक्ति, जुगत, तरीका, तरकीब, ढंग।

उलटा — विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध, प्रतिलोम, औंधा

उल्लास — आह्लाद, आनंद, हर्ष, प्रमोद, मौज।

ऊँचा — उच्च, उत्तुंग, बुलंद, ऊपर

ऊबड़-खाबड़ — ऊँचा-नीचा, असम, अटपटा, बीहड़।

ऊसर — अनुर्वर, अनुपजाऊ, सस्यहीन

ऊँट — क्रमेलक, उष्ट्र, लंबोष्ठ, महाग्रीव।

एकत्र — इकट्ठा, एकमुश्त, पुंजीभूत, संचित, समवेत, संगृहीत, जमा, संकलित

ऐच्छिक — स्वेच्छाकृज, वैकल्पिक, अख्तियारी, सविकल्प, पसंद का

ऐश्वर्य — वैभव, संपन्नता, समृद्धि, धन-संपत्ति

ओझल — अदृश्य, अंतर्धान, तिरोहित, लुप्त, गायब।

और — एवं, तथा, साथ ही, अधिक, ज्यादा, बढ़कर

कनक — कंचन, सोना, स्वर्ण, हिरण्य, हेम, हाटक,

कमल — सरोज, जलज, पंकज, इंदीवर, नलिन, उत्पल, अंबुज, नीरज, तामरस, सारंग, शतपत्र,

कोकनद, राजीव, अरविंद, शतदल, पद्म, कंज, अब्ज, पुंडरीक, सरसीरूह, वारिज।

कपट — छल, छद्म, धोखा, व्याज, वंचना, प्रवंचना, छलछिद्र, ठगी, दगा, फरेब, धूर्तता।

कपड़ा— वस्त्र, चीर, वसन, अंबर, पट, दुकूल, परिधान, पोशाक, लिबास, ।

करुणा— दया, अनुग्रह, अनुकंपा, कृपा, कारुण्य ।

कष्ट — दुःख, वेदना, पीडा, क्लेश, खेद, व्यथा, तकलीफ, दर्द, संताप ।

कल्याण— शिव, मंगल, क्षेम, शुभ, श्रेय, उपकार, भला, हित ।

कल्पवृक्षा — देववृक्ष, सुरतरु, पारिजात, कल्पतरु, मंदार, कल्पद्रु, हरिचंदन ।

कला — विद्या, कौशल, हुनर, फन, शिल्प, करिश्मा, करतब ।

कपोत — पारावत, कबूतर, रक्तलोचन, हारीत, परेवा ।

कमजोर—अशक्त, दुर्बल, निर्बल, शक्तिहीन, असमर्थ ।

कटाक्ष— व्यंग्य, आक्षेप, छींटाकशी ।

कटु— 1. कड़वा, तीखा, तेज, तीक्ष्ण, चरपरा ।

2. कर्कश, परुष, कड़ा, रूक्ष, रूखा ।

कट्टर— धर्मांध, मदांध, धर्मोन्मत, हठधर्मी, असहनशील ।

कठिन— दुर्बोध, दुरुह, जटिल ।

कपट—छल, धोखा, झूँसा, चकमा, फरेब ।

कपटी— धोखेबाज, छली, चालबाज, फरेबी, प्रपंची ।

कब्जा—अधिकार, अधिकार, दखल, प्रभुत्व, स्वत्व ।

कर्ज—ऋण, उधार, देनदारी, देयता, आभार ।

कर्मठ— कर्मपरायण, उद्यमी, उद्योशील, नियम—निष्ठ, उद्योग—परायण

कर्ण — सूर्यपुत्र, सूतपुत्र, राधेय, अंगराज ।

कलंक — लांछन, दोष, दारा, धब्बा, तोहमत,

कटि— कमर, श्रोणि, लंक, मध्यांग ।

कलिका — कली, मुकुल, कुड्मल, फोरक, डोंडी, शिगूफा, गुंछा ।

कस्तूरी — मृगनाभि, मृगमद, मदलता

कान — कर्ण, श्रुति, श्रवणेंद्रियां

कामदेव — मदन, काम, पंचशर, मन्मथ, मनसिज, मार, रतिपति, प्रद्युम्न, स्मर, मीनकेतु, पुष्पधन्वा, कुसुमशर, अनंग, कंदर्प, मनोज ।

काम — कार्य, कर्म, कृत्य, क्रिया, करनी, करोबार, व्यवसाय, रोजगार

कायदा— तरीका, ढंग, रीति, विधि, नियम ।

कारीगर — शिल्पी, शिल्पकार, दस्तकार, मिस्त्री, निपुण, प्रवीण, हुनरमंद ।

किनारा— तीर, तट, कूल, बेलातट, पुलिन, छोर, सिरा, पर्यंत

किरण — रश्मि, कर, अंशु, मरीचि, मयूख, कला ।

कीर्ति — गुणगान, प्रशस्ति, याशोगान, विरुद्ध, गुणवर्णन,

कीचड़ — कीच, कर्दम, गारा, पंक

कुत्ता — श्वान, कुक्कुर, शुनक, सारमेय, गंडक, कूकर, मृगारि, सोनहा ।

कुमारी — कन्या, कुँआरी, अविवाहिता, अनूढा ।

कुल — वंश, घराना, खानदान, समस्त, सब, सारा, तमाम, समग्र ।

कुशल — क्षेम, मंगल, भलाई, शुभ, कल्याण, दक्ष, प्रवीण, पारंगत, निष्णात, पटु, निपुण ।

कृतज्ञ — आभारी, उपकृत, अनुगृहीत, कृतार्थ, ऋणी ।

कृत्रिम — बनावटी, दिखावटी, नकली, अवास्तविक, झूठा ।

कृपा — अनुग्रह, अनुकंपा, मेहरबानी, दया, रहमत ।

कृष्ण — नंदनंदन, मुरलीधर, गिरिधर, कन्हैया, बनवारी, श्याम, मोहन, वंशीधर, माधव, नंदलाल, मुकुंद, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, हृषीकेश, कंसारी, मधुसूदन, द्वारिकाधीश, यदुनंदन ।

केला — कदली, भानुफल, रंभा, गजवसा, कुंजरासरा, मोचा ।

केश — बाल, कच, कुंतल, चिकुर, शिरोरुह, मेचक, काकुल, पशु ।

क्रोध — गुस्सा, रिस, अमर्ष, कोप, आक्रोश । कोष — भंडार, निधि, खजाना, आकर, जखीरा ।

कोयल — कोकिल, काक, पिक, बसंतदूत, पाली, वनप्रिय, श्यामा, कलापी,

कोमल — मुलायम, मृदुल, सुकुमार, नर्म, नाजुक ।

कोशिश — प्रयास, प्रयत्न, चेष्टा, आयास, यत्न ।

कौआ — काक, वायस, पिशुन, करट, काण, काग, बलिपुष्ट, एकास, करटक ।

क्रुर — निर्दय, नृशंस, निष्ठुर, निर्मोही, बर्बर क्षणभंगुर — अनित्य, अस्थायी, नश्वर, क्षणिक

क्षति — हानि, नुकसान, घाटा । क्षतिपूर्ति — प्रतिपूर्ति, मुआवजा, हर्जाना, बदला, प्रतिकार

क्षमता — सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, बल, जोर ।

क्षीण — कृश, दूबला-पतला, कमजोर, दुर्बल, बलहीन, थोडा, बारीक, अल्प, जरा, सूक्ष्म ।

क्षेत्र — भूभाग, हलका, इलाका, भूखंड, प्रदेश ।

खंभा — खंभ, स्तंभ, स्तूप ।

खर — तेज, तीक्ष्ण, खरा, स्पष्ट ।

खल — उधम, पामर, नीच, दुष्ट, दुर्जन, कुटिल, धूर्त, शठ ।

खून — रुधिर, रक्त, शोणित, लहू ।

खंड — अंश, भाग, टुकड़ा, हिस्सा ।

खतरा — आशंका, खटका, अंदेशा, भय, डर ।

खबर — समाचार, हालचाल, वृत्तांत ।

खबरदार — सावधान, सतर्क, चौकन्ना, सचेत, होशियार

खरा — शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल, साफ, अच्छा ।

खामोश — चुप, मौन, शांत, नीरव, निश्शब्द ।

खिड़की — वातायन, गवाक्ष, झरोखा, अंतर्द्वार, बारी, दरीचा ।

खोज — तलाश, गवेषणा, अन्वेषण, शोध, अन्वीक्षण ।

खोटा — झूठ, नकली, बनावटी, झूठा, मिलावटी, कृत्रिम

गंगा — मंदाकिनी, जाह्नवी, भागीरथी, देवनादी, देवपगा, त्रिपथगा, विष्णुपदी सुरसरि, जहनुतनया, सुरधुनी,

गजानन — गणेश, विनायक, गणपति, लंबोदर, गजवदन, भवानीनंदन, हेंरब, एकदंत, मूषकवाहन, गिरिजानंदन, दृवियातृज, वक्रतुंड,

गण्यमान्य — ख्यातिप्राप्त, ख्यातिनामा, प्रतिष्ठित, यशस्वी, लब्धप्रतिष्ठ ।

गन्ना — ईक्षु, ईख, ऊख, पौंडा ।

गाय — धेनु, सुरभी, गौ, दोग्धी, भद्रा, गौरी, गैया, गरु, पयस्विनी ।

गृह — घर, गेह, धाम, भवन, निकेतन, मकान, सदन, निलय, आगार, आलय, आवास, ओक, अयनशाला, मंदिर, अयन, वास, निवास,—स्थान, शाला ।

गदर – विद्रोह, विप्लव, बगावत ।

गंभीर – गूढ, जटिल, कठिन, दुरुह, क्लिष्ट, भारी, विकट, घोर, गहरा, अथाह, अतल ।

गर्व – दर्प, अभिमान, घमंड, अकड, दंभ ।

गुप्त – अप्रकट, गूढ, प्रच्छन्न, निभृत,

गौरव – बड़प्पन, महत्व, गुरुता, सम्मान, मान ।

गरीब – निर्धन, दरिद्र, अकिंचन, दीन, कंगाल

घी – घृत, हव्य, सर्पि, आज्य, अमृत, नवनीत ।

घड़ा – घट, कलश, कुंभ, कुट ।

घटा – कांदबिनी, घनावली, घनाली, मेघमाली, मेघाली ।

घाटा – हानि, नुकसान, क्षति, टोटा ।

घाव – नासूर, फोडा, व्रण ।

घेरा – मंडल, वलय, वृत, चक्कर, दायरा,

घृणा – घिन, जुगुप्सा, अरुचि, नफरत ।

चतुर – नागर, प्रवीण, कुशल, होशियार, विज्ञ, विदग्ध, दक्ष, निपुण, चालाक, पटु ।

चंदन – मलय, श्रीखंड, मंगल्य, गंधसार, सर्पावास, गंधराज ।

चरण – पाद, पद, पैर, पाँव, पग

चरित्र – आचरण, व्यवहार, आचार, शील, चालचलन ।

चाँद – चंद्र, चंद्रमा, शशि, निशाकर, कलानाथ, सोम, विधु, क्षपाकर, मृगलांछन, सुधाकर, सुधांशु, हिमांशु, द्विजराज, अमृतनिधान, राकेश, शशांक, मृगांक, इंदु, मंयक, राकापति, रजनीपति, निशनाथ, तारकेश्वर, महताब ।

चाँदनी – चंद्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी, उजियारी, हिमकर, चंद्रमरीचि, अमृतद्रव, कालानिधि ।

चाँदी – रजत, रूपक, रूपा, रौप्य, कलधौत, रूप्य, जातरूप

चिह्न – निशान, पहचान, लक्षण, अलामत ।

चोर – तस्कर, मौषक, कुंभिल, रजनीचर, खनक

चौकन्ना – सतर्क, सावधान, चौकस, सचेत, सजग, सावचेत

छानबीन – जाँच – पड़ताल, पूछताछ, तफ्तीश, तहकीकात, जाँच ।

छिद्र – छेद, सुराख, रंध्र

छुटकारा – मुक्ति, मोक्ष, रिहाई, निस्तार, निजात,

छुट्टी – अवकाश, फुर्सत, रुखसत, विश्राम, विराम

छूट – रियासत, सहूलियत, कटौती, सुविधा, ढील

जल – नीर, सलिल, वारि, तोय, उदक, पानी, पय, अंबु, अंभ, रस, आब

जन – मनुष्य, मनुज, व्यक्ति, लोक, नर, लोग ।

जगत् – विश्व, दुनिया, संसार, भव, जगती, जग, जहान ।

जीभ – जिह्वा, रसना, रसज्ञा, रसिका, रसला, जबान

जीव – प्राणी, प्राण, चैतन्य, जान, जीवन,

जलयान – जहाज, पोत ।

जड़ – निर्जीव, अचेतन, स्थावर, अचर, प्राणरहित

जड़ता – स्थिरता, निश्चेष्टता, अचलता, गतिहीनता, निष्क्रियता ।

जय – विजय, जीत, फतह ।

जल्दी – शीघ्रता, त्वरा, हडबडी, फुरती, उतावली

जवान – युवा, युवक, तरुण, किशोर, वयप्राप्त ।

जवानी – यौवन, तरुणाई, युवावस्था

जागरूक – सजग, चेतन, सचेत, चौकस, प्रबुद्ध

जिम्मा – दायित्व, उत्तरदायित्व, जवाबदेही, जिम्मेदारी ।

जीविका – आजीविका, वृत्ति, रोजी, गुजारा, राटी

झरना – प्रपात, सोता, निर्झर, स्त्रोत, उत्स

झूठ — असत्य, मृषा, मिथ्या, अनृत

झंडा — पताका, ध्वज, निशान, ध्वजा, केतन, वैजयंती

झरोखा — वायातन, गवाक्ष, रोशनदान

झाँई — परछाई, बिंब, प्रतिच्छाया, झलक

झिझक — संकोच, दुविधा, अनिर्णय, हिचकिचाहट

झोंपड़ी — पर्णकुटी, छानी, कुंज, कुटिया, झूपा

टक्कर — ठोकर, भिड़ंत, संघात, समाघात, धक्का

टेढ़ा — कुटिल, तिरछा, बलदार, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा

डॉवाँडोल — दुलमुल, अस्थिर, अदृढ़, ढीला, विचलित

ढंग — रीति, तरीका, विधि

ढाढस — आश्वासन, तसल्ली, दिलासा, सांत्वना, इतमीनान, धीरज

ढिठाई — धृष्टता, अशिष्टता, अविनय, बेशरमी, प्रगल्भता

तरु — पेड़, वृक्ष, पादप, सरोरुह, विपट, द्रुम, रूँख, गाछ

तलवार — खड्ग, असि, चंद्रहास, करवाल, कृपाण

तालाब — सर, तड़ाग, पद्माकर, तलाशय, पुष्कर, सरोवर, सरसी, ह्रद, ताल

तारा — तारक, उड्डुगन, नक्षत्र, उड्डू, सितारा

तरकश — तूणीर, तूणी, निषंग, तूण, उपासंग

तोता — शुक, कीर, सुग्गा, दाडिमप्रिय, रक्ततुंड, सुआ।

तांबा — ताम्र, तामा, रक्तधातु, ताम्रकं

तकरार — विवाद, झगडा, लडाई, कहासुनी, रार, तू-तू- मै मै।

तकलीफ — कष्ट, दर्द, पीडा, क्लेश, रोग, बीमारी।

तटस्थ — उदासीन, निरपेक्ष, निष्पक्ष, बेलागं

तत्पर — उद्यत, तैयार, मुस्तैद, कटिबद्ध, सन्नद्ध

तनिक — जरा, थोडा, किंचित, लेशमात्र, रंचमात्र।

तात्पर्य — अभिप्राय, अर्थ, मतलब, मायने, आशय।

तालमेल — सामंजस्य, समन्वय, संगति, सामरस्य, सुस्वरता, संगति।

तीव्र — तेज, तीक्ष्ण, प्रखर, पैना, छिप्र।

तिरस्कार — अपमान, उपेक्षा, निरादर, अवमानना, बेइज्जती

तूफान — झंझा, झंझावत, अंधड, आँधी

तेजस्वी — वर्चस्वी, प्रतापी, तेजवान, कांतिमय, तेजोमय।

थकान — थकन, थकावट, श्रान्ति, क्लान्त।

थोथा — खोखला, पोला, खाली, छूछा, रिक्त।

दाँत — दंत, द्विवज, रद, दशन, रदन।

दास — नौकर, चाकर, भृत्य, सेवक, किंकर, अनुचर, परिसर, परिचारक, सेवादर।

दिन — दिवस, वासर, वार।

देवता — दकव, सुर, अमर, विवुध, त्रिदश, भगवान

दानव — राक्षस, असुर, दैत्य, दनुज, निशाचर, रजनीचर, दमुल

देह — शरीर, काय, वपु, घट, काया, गात, विग्रह

दीन — गरीब, विपन्न, हीन, निर्धन, बेचारा, मलिन, अकिंचन

दुःख — वेदना, पीडा, यातना, खेद, यंत्रणा, कष्ट, संकट, क्लेश, व्यथा, क्षोभ, विषाद, संताप

दुर्गा — चंडी, चामुंडा, कामाक्षी, शांभवी, कालिका, सिंहवाहिनी, चंडिका, कल्याणी, सुभद्रा, महागौरी

द्रव्य — धन, संपत्ति, वित्त, संपदा, दौलत, विभूति, समृद्धि

दूध — पय, क्षीर, दुग्ध, गोरस

दक्ष — चतुर, कुशल, ब्रह्मा का पुत्र

दंड — डंडा, लाठी, दमन

दीपक — दीप, प्रदीप, दीया, ज्योति, गृहमणि

दुर्जन — दुष्ट, पामर, नीच, खल

दंग — विस्मित, चकित, स्तब्ध, हक्का-बक्का, हैरान

दंगा — उत्पात, फसाद, उपद्रव, ऊधम, झगड़ा

दया — करुणा, रहम, तरस, अनुकंपा	दरवाजा — द्वार, किवाड़, पल्ला, कपाट
दिव्य — अलौकिक, लोकोत्तर, लोकातीत	दुर्गम — दुस्तर, विकट, औधट, कठिन
दुविधा — धर्मसंकट, असमंजस, ऊहापोह, आगा—पीछा, कशमकश	
द्वेष — बैर, विरोध, शत्रुता, दुश्मनी, खार	धर्म — पुण्य, सत्कर्म, सुकृति, कर्तव्य, पंथ, संप्रदाय, मत, मार्ग
धरती — पृथ्वी, धरा, वसुंधरा, मेदिनी, इला, भू, धरणी, भूमि, मही, अचला, अवनी	
धनुष — धनु, कोदंड, शरासन, कमान, चाप, विशिखासन	धूप — आतम, घाम, निदाघ, द्योत, घर्म
धूल — रज, रेणु, धूलि, मिट्टी, मृदा, माटी, मृत्तिका	धुंध — कुहासा, कुहरा, नीहार
ध्रुव — स्थिर, अचल, पक्का, अटल, निश्चित	ध्यान — एकाग्रता, तन्मयता, मनोयोग, लीनता, तल्लीनता
धीरज — धैर्य, सब्र, धीरता, संतोष, तोष	नरक — यमपुर, यमलोक, रौरव, दुर्गति
नदी — सरिता, वाहिनी, तटिनी, स्त्रोतस्विनी, तरंगिणी, शैवालिनी, आपगा, शैलजा, सिंधुगामिनी, निम्नगा	
नारद — देवर्षि, ब्रह्मर्ष, ब्रह्मपुत्र	नाव — तरिणी, तरी, नैया, जलयान, नौ, पतंग, बेड़ी
निर्मल — स्वच्छ, अमल, शुद्ध, पवित्र, पावन, विमल	
निशा — रात, रात्रि, रजनी, विभावरी, यामिनी, क्षपा, तमिस्त्रा, निशीथ, शर्वरी, रैन	
नाश — ध्वंस, क्षय, विनाश, प्रलय, अवसान	
नारी — स्त्री, महिला, औरत, वामा, रमणी, वनिता, ललना, कामिनी, भागिनी, अबला	
नेता — नायक, प्रमुख, सरदार, अगुआ, प्रधान	नम्र — विनीत, शिष्ट, सुशील, विनयी, विनयशील
नया — नूतन, नया, नवीन, नव्य, नचेला, अभिनव	नाजुक — कोमल, सुकुमार, मृदुल, स्निग्ध, मसृण
निंदा — बदनामी, बुराई, अपयश, अपवाद	निकट — पास, समीप, करीब, आसन्न, निकटस्थ
निचोड़ — सार, सारांश, अभिप्राय, तात्पर्य	निजी — अपना, स्वीय, स्वकीय, खुद का, व्यक्तिगत
निढाल — थका—माँदा, शिथिल, अशक्त, सुस्त, उत्साहहीन	नियति — प्रारम्भ, भाग्य, होनी, भावी, दैव्य
निरन्तर — लगातार, बराबर, हमेशा, सदा	निदर्श — निष्ठुर, दयाहीन, निभर्य, बेदर्द
निर्दोष — दोषहीन, बेकसूर, बेगुनाह, निरपराध, अदोष, दोषरहित	
निडर — निभर्य, बेधड़क, बेखोफ, निधड़क	निस्स्तब्धता — नीरवता, सन्नाटज्ञ, खामोशी, शांति, चुप
पान — तांबुल, नागबेल, मुखमंडन, बालदल, मुखभूषण	पिता — जनक, बाप, तात, पितृ
पर्याप्त — प्रभूत, भरपूर, यथेष्ट, विपुल, काफी, बहुत	पत्थर — प्रस्तर, पाषाण, पाहन, उपल, उश्म, शिला
पराग — पुष्परज, रज, पुष्पधूलि, केशर, कुशुमराज	
पहाड़ — गिरी, अद्रि, पर्वत, भूधर, महीधर, अचल, शैल, नग, धरणीधर	
पक्षी — खग, पखेरू, विहग, नभचर, विहंग, शंकुत, चिड़िया, द्विज	
प्रिय — प्यारा, पति, स्वामी, प्राणेश, वल्लभ, भर्ता, भरतार, प्राणाधार	पति — स्वामी, बालम, साँई
पार्वती — गिरिजा, गौरी, शैलसुता, अपर्णा, शैलजा, शिवानी, भवानी, दुर्गा	
प्रभा — आभा, द्युति, छवि, दीप्ति	पुत्र — सुत, तनय, आत्मज, नंदन, पूत, बेटा, लड़का, लाल, वत्स, तनुज
पुत्री — सुता, तनया, आत्मजा, नंदिनी, दुहिता, बेटी, लड़की, तनुजा	

प्रकाश — आलोक, उजाला, आभा, प्रभा, ज्योति, द्युति, दीप्ति, छवि

पवन — अनिल, वायु, वावत, समीर, समीरण, पवमान, बयार

प्रातः — प्रभात, उषा, अहर्मुख, अरुणोदय, प्रातःकाल

पत्नी — गृहिणी, अर्धांगिनी, बहु, भार्या, कलत्र

पंडित — विद्वान, मनीषी, बुध, कोविद, विचक्षण, बुद्धिमान, प्राज्ञ, सुधी

पूजा — उपासना, अर्चना, आराधना, भक्ति

प्रेम — स्नेह, अनुराग, प्रीति, राग

प्रतिष्ठा — मान, आदर, इज्जत, आबरू, गरिमा, आन, गौरव

पत्ता — दल, पर्ण, पल्लव

पुरस्कार — पारितोषिक, ईमान, विजयोनहार

पाला — हिम, नीहार, तुषार

प्रस्तावना — भूमिका, प्राक्कथन, आमुख, उपोद्घात, लेखकीय

पराक्रम — परास्त, विजित, हारा हुआ, पराभूत

परिपाटी — रीति, प्रणाली, पद्धति, ढंग, तरीका

परिवार — कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना, कुल

परिष्कार — शुद्धि, सफाई, संरूकसर, संशोधन, परिमार्जन

परोक्ष — अप्रत्यक्ष, ओझल, तिरोहित, अगोचर, गुप्त

पल्लव — 'कौपल, किसलय, पर्ण, पत्ति, पात

पशु — जानवर, चौपाया, चतुष्पद, मवेशी, जंतु

प्रत्यक्ष — सम्मुख, समक्ष, सामने, साक्षात्, दृष्टिगोचर

प्रयत्न — चेष्टा, प्रयास, कोशिश, उद्योग, उद्यम

प्रशंसा — सराहना, बड़ाई, तारीफ, श्लाघा, गुणगान, स्तुति

प्रसन्न — हर्षित, आनंदित, खुश, प्रफुल्ल, आह्लादित

प्रसिद्ध — विख्यात, प्रख्यात, मशहूर, नामवर

फिराक — चिंता, सोच, फिक्र

फूल — पुष्प, पुहुप, हुसुम, सुमन, प्रसून, गुल

बाण — शर, सायक, नाराज, विशिख, शिलीमुख, पत्री, तीर, आशुग

बंदर — मर्कट, हरि, शाखामृग, कपि, वानर, कीश

बिजली — विद्युत, चपला, तड़ित, दामिनी, घनदाम, बीजुरी, सौदामिनी, क्षणप्रभा

बादल — मुघ, पयोदर, जलधर, नीरद, पयोद, घन, वारिद, अंबुद, बलाहक

बाह्मण — द्विज, भूदेव, भूसुर, विप्र, अग्रजन्मा, महीदेव

बुद्धि — मति, प्रज्ञा, धिषणा, मनीषा, धी

ब्रह्मा — चतुरानन, हिरण्यगर्भ, आत्मभू, लोकेश, विधि, स्त्रष्टा, विरंचि, नाभिज, विधता, प्रजापति

बहुत — प्रचुर, प्रभूत, अति, पर्याप्त, अमित, अत्यंत

बलराम — बलभद्र, हलधर, हलायुध, हली, मूसली, रवेतीरमण, राम

बरसात — बारिया, वर्षा, पावस, वृष्टि, दुर्दिन, वर्षण

बरतन — पात्र, वासन, भांडा

बसन्त — ऋतुराज, मधुमास, कुसुमाकर, माधव, पिकमित्र

बहिन — सहोदरा, भगिनि, बांधवी, सहगर्भिणी

बाध — शार्दूल, व्याघ्र, चित्रक

बाधा — व्यवधान, रूकावट, रोक, अड़चन, विघ्न, अटकाव

बचाव — त्राण, रक्षा, हिफाजत, प्रतिरक्षा

बढ़प्पन — बड़ाई, महत्ता, महत्त्व, गरिमा, वरीयता

बढ़ावा — प्रोत्साहन, उकसाव, उत्साह, प्ररेणा, उभाड़

बुढ़ापा — जरा, वृद्धावस्था, वृद्धत्व, जीर्णावस्था

बैचेन — व्याकुल, विकल, बेताब, चिंतातुर, अशांत

भय — डर, त्रास, भीति, विभीषा, आतंक

भौरा — भ्रमर, भँवरा, मधुप, भृंग, अलि, षट्पद, द्विरेफ, मधुक

भाई — भ्राता, सहोदर, बंधु, भैया, सगर्भा, सजाता

भैंस — महिषी, कासरी, सैरिभी, लुलापा

भंग — ध्वंस, नाश, क्षय, विनाश, तबाही, बरबादी

भंगुर — भग्नशील, क्षणीक, नाशवान, नश्वर, क्षणभंगुर

भिक्षा — भीख, याचक—वृत्ति, मधुकरि

भूखा — बुभुक्षित, भुक्कड़, क्षुधातुर, क्षुधार्त, क्षुधालु

मछनी — मत्स्य, मीन, शफरी, झख, मकर

महादेव —

शिव, शम्भू, पशुपति, महेश्वर, शंकर, विधुशेखर, इंदुशेखर, शशिशेखर, गिरहश, हर, मदनरिपु, पिनाकी, नीलकंठ, त्रिनयन, त्रिलोचन, कैलाशपति, चंद्रमोलि, रुद्र, चंद्रशेखर

मार्ग — रास्ता, पथ, राह, बाट, मग।

मित्र — सहचर, संगी, साथी, दोस्त, सहृदय, सखा, वयस्क, मीत, सपक्ष।

मुख — वदन, मुँह, आनन, चेहरा।

मदिरा — सुरा, वारुणी, मद, शराब, दारु, हाला, मद्य, कादंबरी।

मूर्ख — बेवकूफ, मूढ, अज्ञ, अबोध, जड़, बुद्धिहीन।

मैला — मलिन, अस्वच्छ, अशुचि, म्लान, गंदा, अपवित्र। **मूल्य** — मोल, कीमत, दाम, अर्थ।

मोर — मयूर, केकी, सांरग, नीलकंठ, कलाजी, शिव-सुत-वाहन, शिखी।

माता — माँ, जननी, जन्मदायिनी, प्रसू, अंबा।

मुर्गा — कुक्कुट, तमचुर, ताम्रचूड, ताम्रशिख, उपाकर, अरुणशिखा।

मेंढक — मंडूक, दादुर, भेक, वर्षाभ, शातूर, दर्दुर।

मृत्यु — देहावसान, स्वर्गवास, निधन, मरण, देहांत, मौत। **मट्ठा** — छाछ, तम्र, गोरस।

मुक्ति — मोक्ष, निर्वाण, कैवल्य, अपवर्ग, सद्गति, परमधाम, परमपद।

मक्खन — नवनीत, दधिसार, लौनी, माखन। **मूँगा** — प्रवाल, विद्रुम, रक्तांग, रक्तमणि।

मोती — मुक्ता, मौक्तिक, सीपज, शशिप्रभा।

मैना — सारिका, चित्रलोचना, सारी, कहहप्रिया, मधुरालया।

मंडल — घेरा, समुदाय, संघ, वर्ग, संगठन।

मनचाहा — इच्छित, अभीष्ट, यथेष्ट, यथेच्छ, अभिलषित।

मनीषी — ज्ञानी, पंडित, विद्वान, विचारक, चिंतक। **मसौदा** — प्रारूप, प्रालेख, पांडुलिपि।

महीन — पतला, बारीक, झीना, सूक्ष्म।

मान्य — माननीय, सम्माननीय, पूजनीय, समादरणीय, पूज्य, आदरणीय।

मिजाज — प्रकृति, स्वभाव, तबीयत। **मुक्त** — स्वच्छंद, स्वतंत्र, आजाद, छूटा, खुला।

मुग्ध — मोहित, आसक्त, आकृष्ट, लुब्ध, तल्लीन। **मुनि** — खती, तपस्वी, साधु, तापस, योगी।

मेधावी — सुधी, बुध, बुद्धिमान, प्रज्ञावान।

यम — यमराज, धर्मराज, कृतांत, शमन, सूर्यपुत्र, जीवितेश, काल।

यमुना — कालिंदी, अर्कजा, रवितनया, जमुना, तरणि-तनुजा, सूर्यजा, कृष्णा।

युवती — किशोरी, तरुणी, श्यामा।

युद्ध — रण, संग्राम, समर।

रमा — लक्ष्मी, श्री. कमला, विष्णुप्रिया, पद्मा, पद्मासना, हरिप्रिया, इंदिरा, क्षीरोदतनया, चंचला, लोकमाता, सिंधुसुता, सिंधुजा।

राजा — भूपति, महीप, राव, नृप, भूमिपति, भूप, नृपति, नरेश, नरेंद्र, भूपाल, नरपति, शासक

राम — रघुपति, राघव, रघुवर, रमापति, दशरथनंदन, रघुवंशमणि, सीतापति ।

रावण — दंशकंध, दशासन, दशशीश, दशानन, लंकापति, लंकेश ।

रंक — दरिद्र, कंगाल, निर्धन, अकिंचन, धनहीन ।

रक्षा — त्राण, बचाव, हिफाजत, सुरक्षा, रखवाली ।

रत — लिप्त, निमग्न, अनुरक्त, लीन, तल्लीन

राग — अनुराग, लगाव, आसक्ति, प्रेम, मोह

राय — मत, सम्मति, सलाह, मंत्रणा, परामर्श

रोगी — अस्वस्थ, रूग्ण, बीमार, रोगग्रस्त, व्याधिग्रस्त,

राधा — वृषभानुजा, ब्रजरानी, कृष्णप्रिया, राधिका ।

लहर — तरंग, ऊर्मि, वीचि

लोहा — अयस्, सार, लौह

लक्ष्मण — सौमित्र, रामानुज, शेष, लखन ।

लक्ष्य — ध्येय, उद्देश्य, ठिकाना, मंजिल, निशाना ।

लग्न — संयुक्त, संलग्न, संबद्ध, नत्थी ।

लालसा — अभिलाषा, तृष्णा, लिप्सा, लालच, लोलुपता ।

वन — अरण्य, जंगल, त्रिपिन, कातार, कानन, अटवी,

विशाल — विराट्, बृहत्, दीर्घ, बड़ा ।

विष — हलाहल, गरल, जहर, कालकूट ।

वर्ष — वत्सर, साल, बरस, अब्द ।

विष्णु — जनार्दन, चक्रपाणि, गरुडध्वज, अच्युत, गोविंद, चतुर्भुज, मधुरिपु, शेषशायी, लक्ष्मीपति, नारायण, दामोदर, हृषीकेश, मुकुल, हरि, वनमाली, उपेन्द्र ।

विनती — प्रार्थना, निवेदन, अर्ज, गुजारिश ।

विवाह — ब्याह, पणिग्रहण, परिणय, परिणय—सूत्र, उद्वाह

वीर्य — शुक्र, बीज, तेज, सार, जीवन

वज्र — कुलिश, पवि, अशनि, दंभोलि ।

वचन — उक्ति, कथन, वादा, प्रण, बात ।

वरदान — आशिष, वर, प्रसाद ।

वर्णन — बयान, वृत्तांत, विवेचना, निरूपण ।

वर्तमान — उपस्थित, विद्यमान, मौजूद, प्रस्तुत, हाजिर

वातावरण — वायुमंडल, पर्यावरण, परिवेश

वादविवाद — तर्क—वितर्क, बहस, शास्त्रार्थ, वादानुवाद, मुबाहिसा ।

विकट — भीषण, भयावह, घोर, खौफनाक, भयानक ।

विकार — दोष, बुराई, बिगाड, विकृति, खराबी ।

विघ्न — रोडा, अडचन, बाधा, अडंगा, रूकावट, व्याधात ।

विनिमय — आदान—प्रदान, अदला—बदली, उलटा—पुलटा, लेन—देन

विमल — स्वच्छ, निर्मल, साफ, मलरहित, शुद्ध ।

विमुग्ध — विमोहित, आसक्त, आकृष्ट, लीन, लिप्त ।

वियोग — विरह, बिछोह, जुदाई, विप्रलंभ, फिराक

विवश — मजबूर, लाचार, बेबस, असहाय

वीर — शूर, पराक्रमी, बहादुर, सूरमा, योद्धा ।

विवेचन — निरूपण, समीक्षण, जाँच, मीमांसा

विषम — असमान, बेमेल, बेजोड, असंगत, अनमेल ।

वृथा — व्यर्थ, निरर्थक, बेकार, बेफायदा, निष्पयोजन ।

शत्रु — अरि, रिपु, दुश्मन, अमित्र, अराति, विपक्षी ।

- शरीर** – काया, कलेवर, गात, वपु, तन, विग्रह **शेषनाग** – अहीश, धरणीधर, सहस्त्रासन, फणीश
- शहद** – पुष्पासव, मधु, मकरंद, पुष्परस।
- शारदा** – सरस्वती, वाणी, भारती, वाग्देवी, वीणापाणि, वाक्
- शिकार** – आखेट, मृगया, अहेर।
- शेर** – सिंह, मृगराज, शार्दूल, केहरि, हरि, वनराज, पंचानन, मृगेन्द्र, केशरी, केशी, नाहर।
- शुभ्र** – धवल, शुक्ल, श्वेत, सफेद, अवदात, वलक्ष, गौर।
- शरण** – आश्रय, त्राण, पनाह, संश्रय, रक्षा। **शिथिल** – ढीला, मंद, सुस्त, आलसी, अशक्त।
- शिष्ट** – सभ्य, सुसंस्कृत, सुशील, विनीत, नीतिमान **शीघ्र** – अविलंब, तुरंत, जल्दी, फटाफट
- शून्य** – खाली, रिक्त, रहित, विहीन। **शोभा** – सुषमा, छटा, सौंदर्य, सुंदरता, मनोहरता।
- श्लाघा** – प्रशंसा, सराहना, तरीफ, बडाई। **शिकरी** – आखेटक, लुब्धक, अहेरी, व्याध, बहेलिया
- षडयंत्र** – कुचक्र, अभिसंधि, साजिश, दुरभिसंधि
- संदेह** – आशंका, खटका, चिंता, अंदेशा, शक, शुबहा, संशय
- सुंदर** – मनोहर, शोभन, कल, ललित, मंजुल, सुरम्य, रम्य, रमणीय, चारु, रुचिकर, सुहावना, ललाम।
- सूर्य** – आदित्य, दिनकर, दिनेश, दिवाकर, भास्कर, प्रभाकर, मार्तंड, सविता, हरि, अर्क, भानु, सहस्त्रांशु, दिनमणि, अंशुमाली, पंतग, रवि, पूषा। **सिर** – सर, शीश, शिर, मुंड, मस्तक।
- समुद्र** – जलधि, सिंधु, सागर, रत्नाकर, उदधि, नदीश, पारावार।
- सेना** – अनी, अनीक, अनीकिनी, चमू, दल, सैन्य, वाहिनी।
- साँप** – सर्प, नाग, विषधर, भुजंग, अहि, पन्नग, सरीसृप, उरग।
- समूह** – मंडली, टोली, वर्ग, दल, वृंद, समुदाय, गण, निकाय।
- सब** – सर्व, समस्त, अखिल, निखिल, समग्र, सकल।
- स्वर्ग** – नाक, सुरलोक, दिव, परमधाम, द्युलोक, द्यौ।
- सोना** – स्वर्ण, कनक, हिरण्य, कंचन, हाटक, हेम, जातरूप, चामीकर, सुवर्ण,
- स्तन** – कुच, पयोधर, उरोज, वक्षोज, थन **संसार** – संसृति, दुनिया, लोक, जगत्, विश्व, सृष्टि
- सुरभि** – सुगंध, इष्टगंध, घ्राण, तर्पण, सौरभ, सुवास, खुशबू।
- सहेली** – सखी, सहचरी, सजनी, आली, सैरंध्री।
- सीता** – जानकी, वैदेही, जनकनंदनी, भूमिजा, रामप्रिया।
- स्वतंत्र** – स्वाधीन, स्वायत्त, आजाद, मुक्त, स्वच्छंद **संकट** – विपदा, आपति, आफत, आपदा।
- संकल्प** – व्रत, दृढनिश्चय, प्रण, प्रतिज्ञा। **संकोच** – हिचक, लज्जा, शर्म, लाज, झेंप।
- संग्रह** – संचय, संकलन, जमाव। **संतोष** – तुष्टि, वृत्ति, सब्र, तोष, संतुष्टि, इत्मीनान।
- संध्या** – सांयकाल, दिनांत, गोधूलि, दिवावसान, निशांरभ, दिवसावसान।
- संभ्रात** – सम्मानित, प्रतिष्ठित, भद्र। **संयोग** – मेल, लगाव, संग, मिलाप, संबंध, संगम।

संलग्न — संयुक्त, संबद्ध, नत्थी, अनुबद्ध **संस्थापक** — मूलकर्ता, प्रवर्तक, संचालक।
सदृश — समान, तुल्य, बराबर, सम, अनुरूप। **सलाह** — सम्मति, परामर्श, मशविरा, राय, मंत्रणा।
सन्नद्ध — उद्यत, तत्पर, तैयार, प्रस्तुत, कटिबद्ध
हरिण — मृग, कुरंग, हस्ती, मतंग, करी, नाग, दंती, द्विज, द्विरद, वितुंड, सिंधुर, कुंभी।
हनुमान — पवनसुत, अंजनिपुत्र, महावीर, कपीश, आंजनेय, वज्रांग, बजरंगबली।
हंस — मराल, चक्रांग, कलहंस, सूर्य, आत्मा, मानसौक।
हिमालय — हिमगिरी, हिमाद्रि, हिमवान, पर्वतराज, नगराज **हाथ** — हस्त, कर, पाणि, बाहु, भुजा
हानि — नुकसान, अनिष्ट, अपकार, अहित, बुरा। **हठ** — अड़, जिद, टेक, दुराग्रह।
हितैषी — शुभेच्छू, हितचिंतक, मंगलाकांक्षी, शुभचिंतक, शुभकामी।
हेतु — उद्देश्य, आशय, मतलब। **होड़** — मुकाबला, प्रतिस्पर्धा, स्पर्धा, प्रतियोगिता।
ह्रास — क्षय, घटाव, गिरावट, न्यूनता, कमी।

अध्याय 20 — अनेकार्थक शब्द

अंक — गिनती के अंक, अध्याय, भाग्य, चिह्न, देह, गोद, स्थान।
अक्ष — आँख, सूर्य, सर्प, चौसरके पासे, पहिया, आत्मा।
अक्षर — ब्रह्म, वर्ण, गगन, धर्म, सत्य, अविनाशी।
अज — ब्रह्मा, बकरा, दशरथ के पिता का नाम, जीव।
अनंत — आकाश, शेषनाग, विष्णु। **अपेक्षा** — इच्छा, आवश्यकता, आशा, बनिस्बत।
अधर — होंठ, शून्य, नीचा, मध्य। **अंबर** — आकाश, वस्त्र।
अमृत — जल, पारा, दूध, स्वर्ण, घृत। **अर्थ** — धन, प्रयोजन, कारण, लिए।
अतिथी — मेहमान, साधु, यात्री, कुश का बेटा, यज्ञ में सामलता लानेवाला।
अपवाद — नियम के विपरीत, कलंक। **अरुण** — लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी।
आपति — विपत्ति, एतराज। **आम** — आम का फल, सर्वसाधारण, मामूली।
आत्मा — बुद्धि, जीवात्मा, ब्रह्मा, देह, पुत्र, वायु। **इंद्र** — चंद्रमा, कपूर।
ईश्वर — प्रभु, समर्थ, स्वामी, धनिक। **उत्तर** — जवाब, बदला, पश्चाताप, उत्त दिशा।
कनक — सोना, धतूरा, गेहूँ, पलाश, वृक्ष। **कला** — अंश, कार्य करने का कौशल।
कर — हाथ, किरण, सँड, टैक्स।
कोट — पहनने का वस्त्र, गढ़, परकोटा, रंग चढ़ाने की प्रक्रिया।
कर्ण — कुंती-पुत्र, कान, पतवार, समकोण, त्रिभुज में सबसे बड़ी भुजा।
कल — बीता हुआ दिन, सुंदर, चैन, या शांति, पुर्जा, मधुर ध्वनि।
कला — अंश, गुण, चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। **काल** — समय, मुहूर्त, अवसर, शिव, युग।
कुशल — चतुर, खैरियत। **कुंभ** — घड़ा, हाथी का मस्तक।

- कूट** — शिखर, छल—कपट, कागज, पर्वत। **कोटि** — करोड़, श्रेणी, धनुष का सिरा।
- कृष्ण** — वासुदेव—पुत्र, काला, कौआ, अंधकार। **केतु** — ज्ञान, निशान, ध्वजा, एकग्रह, चमक।
- केश** — बाल, विष्णु, विश्व, किरण। **क्रिया** — कार्य, व्यापार, उपाय, व्यवहार, श्राद्ध।
- क्षमा** — पृथ्वी, सहिष्णुता, दया, रात्रि, दुर्गा। **क्षेत्र** — खेत, शरीर, स्त्री, गृह, नगर।
- खग** — पक्षी, वायु, बाण, ग्रह, बादल, देवता, सूर्य, चंद्रमा।
- खर** — दुष्ट, गधा, एक राक्षस, तीक्ष्ण, तृण, कौआ, बगुला।
- खल** — दुष्ट, धतूरा, दवा कूटने की खरल।
- गण** — समूह, रूद्र के अनुचर, सेना, छंदशास्त्र के आठ गण। **गति** — चाल, मोक्ष, स्थिति।
- गुण** — रस्सी, कौशल, स्वभाव, प्रत्यंचा, विशेषता।
- गुरु** — शिक्षक, बडा, श्रेष्ठ, भारी, दो मात्रावाला स्वर, बृहस्पति।
- गो** — गाय, आँख, इंद्रिय, बाण, बाल, स्वर्ग, भूमि, सूर्य, माता, बैल, सरस्वती।
- घना** — दाना, बादल, मोटा, हथौडा, कपूर, समान, लंबाई—चौड़ाई—मोटाईवाला आकार।
- चारा** — घास, उपाय। **चश्मा** — ऐनक, झरना।
- छंद** — वेद, जल, रंग, अभिप्राय, एकांत, पदादि। **जगत्** — संसार, पनघट, वायु, शंकर, टेक।
- जलधर** — बादल, समुद्र। **जलज** — कमल, मोती, मछली, चंद्रमा, सेवार शंख।
- जाल** — माया, छल, जाला, जानवरो को पकडने हेतु रस्सी की बुनावट।
- जीवन** — प्राण, आजीविका, जल, पुत्र, गंगा।
- तत्त्व** — सत्य, सार, धर्म, परिणाम, उद्देश्य, सूक्ष्मज्ञान।
- तंत्र** — सिद्धांत, प्रबंध, शासन, उपाय, औषधि, खजाना।
- तम** — अंधकार, तमाल, वृक्ष पाप, राहू, अज्ञान, तमोगुण।
- तल** — तला, खंड, नीचे, वन, हथेली, स्वभाव, महादेव।
- तारा** — नक्षत्र, आँख की पुतली, बलि की पत्नी, बृहस्पति की पत्नी।
- ताल** — जलाशय, संगीत में ताल, ताडवृक्ष। **तीर** — बाण, किनारा, सरोवर, निकट।
- टीका** — तिलक, अभिषेक, मस्तक का आभूषण, टिप्पणी, आलोचना।
- दक्षिण** — अनुकूल, दक्षिण दिशा, उदार, चतुर, सरल।
- दंड** — डंडा, सजा, सेना, साठ पल की समय अवधि, यमराज।
- द्विज** — ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चंद्रमा, **धन** — जोड़, संपत्ति, स्त्री।
- धनंजय** — अर्जुन, आग, वायु, एक वृक्ष।
- धर्म** — शुभ, कर्म, आचार, स्वभाव, कर्तव्य, संप्रदाय, व्यवस्था, रीति, न्याय, यज्ञ।
- धातु** — वीर्य, प्रकृति, व्याकरण के धातु, अष्टधातु, स्वर्ग।
- ध्रुव** — स्थिर, ध्रुवतारा विष्णु, भक्त, नित्य, विष्णु। **नग** — पहाड, नगीना, पदार्थ, वृक्ष, जड़।
- नव** — नौ की संख्या, नया। **नाग** — साँप, हाथी, वायु का एक भेद।

निर्वाण — मोक्ष , मृत्यु, संगम, विश्राम, शून्य ।

निशाचर — चोर , राक्षस, उल्लू, प्रेत ।

नीलकंठ— शंकर, नीले कंठवाला पक्षी विशेष, मोर ।

पतंग — सूर्य, गुड्डी, पक्षी, टिड्डी, फतिंगा ।

पक्ष — पंख, पखवाडा, दल, वाद का एक रूप, ओर, बल ।

पट — वस्त्र, किवाड, यवनिका, स्थान, मुख्य ।

पत्र — पत्ता, चिट्ठी, पंख ।

पद्म — कमल, संख्या, विशेष, श्रीराम, सर्प विशेष ।

पद — पाँव, चिह्न, स्थान, विभक्तियुक्त शब्द, किसी छंद का चतुर्थांश ।

पय — दूध पानी ।

पान — पीना, पत्ता, तंबाकू ।

पानी — जल, चमक, इज्जत ।

पिंड — शरीर, पितरों के लिए देय, गोल, जीविका ।

पुष्कर — कमल, पुष्कर नाम का एक तीर्थ, तालाब, हाथी के सूँड के आगे का भाग, आकाश, बाण ।

पृष्ठ — पीठ, पन्ना, पीछे का भाग ।

प्रकृति — स्वभाव, धर्म, माया, खजाना, राज्य, जन्म, स्वमी, मित्र ।

प्रत्यय — विश्वास, ज्ञान, शब्द के बाद में जुड़नेवाला शब्दांत, निश्चय, कारण ।

प्रभाव — असर, महिमा, सामर्थ्य, दबाव ।

प्रसव — जन्म, फल, फूल ।

प्राण — प्राण वायु, जीव, ईश्वर, ब्रह्मा ।

फल — परिणाम, वृक्ष से प्राप्त होनेवाला खाद्य, चर्म, ढाल, संतान, मेवा ।

बंसी — बाँसुरी, मछली फँसाने का काँटा, विष्णु, कृष्णादि के चरण-चिह्न

रस — आनन्द, प्रेम, स्वाद, अर्क, तत्व, भोजन के छह रस, काव्य के नौ रस, पारा, मेल ।

महावीर — ' हनुमान, शक्तिशाली, जैन तीर्थंकर ।

मधु — शहद, शराब, पराग, बसंत ऋतु ।

मान — अभिमान, इज्जत, नाम-तौल ।

मित्र — दोस्त, सूर्य, प्रिय, सहयोगी ।

लगन — लौ, मुहूर्त, प्रेम, धुन ।

लक्ष्य — निशाना, उद्देश्य, ।

वर — दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ, आशीर्वाद ।

वर्ग — जाति, गणित की एक क्रिया, समूह ।

वर्ण — रंग, ब्राह्मण आदि चार वर्ण, अक्षर ।

वर्तमान — विद्यमान, समय, प्रचलित ।

वर्ष — साल, संवत्, दृष्टि, पृथ्वी का एक खंड ।

विग्रह — देवता की मूर्ति, शरीर, लडाई ।

ब्याज — सूद, बहाना, छल ।

शकल — आकृति, भाग, चिह्न, छिलका ।

शिव — शंकर , मंगल, शुभ ।

शुद्ध — पवित्र, जिसमें, मिलावट न हो, ठीक ।

शेष — बचा हुआ, अंत, सर्प, सीमा ।

श्री — शोभा, लक्ष्मी, संपदा, कुंकुम, वाणी ।

श्रुति — वेद, सुनना, वाद, कान ।

सर — तालाब, सिर, पराजित ।

सारंग — एक राग , मोर, सर्प, बादल, हरिण, पानी, चातक, सिंह, कामदेव, भौंरा, कमल, स्त्री,

हंस, सुंदर, कोयल, कपूर आदि ।

सैधव — घोड़ा, एक प्रकार के नमक का प्रकार ।

हंस मराल, सूर्य, जीवात्मा, घोड़ा, योगी, सफेद

हरकत — चेष्टा, नटखटपन, गति ।

हरि — विष्णु, बंदर, सिंह, सूर्य, यमराज, किरण, पर्वत, वायु, कोयला, सर्प, मेंढक, घोड़ा, चंद्रमा।

हस्ती — हाथी, अस्तित्व

हलधर — बलराम, किसान, बैल।

हीन — दीन, निकृष्ट, रहित।

अध्याय 21 — शब्द — युग्म

अंत — समाप्त

अंत्य — नीचे का, अंत का

अकुल — कुल-रहित

आकुल — व्याकुल

अर्घ — मूल्य, पूजा का जल

अर्घ्य — पूजनीय

अकर — न करने योग्य

आकर — खजाना, खान

अग — सूर्य, पहाड़, अगम्य

अघ — पाप

अज्ञ — मर्ख

अगम — जाना संभव नहीं

आगम — आगमन, पुराण

अकृति — बुरा कार्य

आकृति — बनावट

अमल — स्वच्छ

अम्ल — खटास

अकथ — जिसके बारे में कहा न जा सके।

अथक — जो थके नहीं

अयश — बदनामी

अयस — लोहा

अवश — विवश

अवश्य — जरूर

अचिर — शीघ्र, नवीन

अजिर — आँगन। अजर — देवता, जो बूढ़ा न हो

अंब — माता

अंबु — जल

अगला — आगे का

अर्गला — रोकने की कील

अब्ज — कमल

अब्द — वर्ष

अमूल — बिना जड़वाला

अमूल्य — अनमोल

अंगना — स्त्री

अँगना — आँगन

अरक — सिवार/सत

अर्क — सूर्य

अगद — नीरोग

अंगद — बालिका पुत्र

अतर — इत्र

अंतर — फर्क, भेद।

अनंतर — बाद में

अतप — ठंडा

आतप — धूप

अचला — पृथ्वी

अचल — पर्वत/स्थिर।

अंचल — आँचल

अज — दशरथ के पिता, अजन्मा

अजा — बकरी

अगत — न गया हुआ

आगत — आया हुआ

अजन्म — जो जन्म ने ले

आजन्म — जन्म से

अजय — न जीतने योग्य

अजया — भाँग, बकरी

अगर — धूपबत्ती

आगार — स्थान।

आगर — आकर, ढेर

अक्ष — धुरी	अक्षि — आँख ।	अक्षी — आँखवाली
अनावर्त — न दोहराया हुआ	अनावृत — न ढका हुआ	
अनाचार — अयोग्य आचरण	अत्याचार — अतिपूर्ण बुरा आचरण ।	
अंजन — काजल	अजन — जन रहित, सुनसान	
अवनि — पृथ्वी	अवन — रक्षा, प्रसन्नता	
अपमान — निरादर	उपमान — जिससे तुलना हो	
अनुसार — अनुकूल	अनुस्वार — अनुस्वार चिह्न	
अपकार — बुराई	उपकार — भलाई	
अद्य — आज	आद्य — पहला	
अवमर्ष — आलोचना, प्रत्यालोचना	अवमर्श — स्पर्श, संपर्क	
अपल — टकटकी लगाकर	अपलोक — अपवाद, बदनामी	
अभिज्ञ — जानकर	अनभिज्ञ — अनजान	
विज्ञ — जानकार	अविज्ञ — मूर्ख	
अभय — निडर, बगैर भय के	अभया — देवी ,हरड	
उभय — दोनों	अनुभव — तजुर्बा	
अभिनव — नया	अभिनय — नाटक आदि में भूमिका अदा करना	
असि — तलवार	अस्सी — एक संख्या	
अव्यय — अविकारी शब्द	अवयव — अंग	
अभिहित — कहा हुआ	अविहित — अनुचित, न किया हुआ	
अमित — बहुत	अमीत — शत्रु	
अंस — कंधा	अंश — भाग , हिस्सा	
अर्चन — पूजा	अर्जन — संग्रह	
अवधूत — साधु, सन्यासी	अधूत — निडर	
आहर — तालाब, पोखर	आहार — भोजन	
अहेर — शिकार	अतल — गहरा, बिना तल के	
अतुल—जिसको तोला न जा सके ।	आसक्त—अनुरक्त,आकर्षित ।	अशक्त—शक्ति—हीन, निर्बल
अस्त्र — हाथ से फेंकने वाला हथियार		
शस्त्र — हाथ में रखकर काम में लिया जाने वाला हथियार		
अश्व — घोड़ा	अस्व — धनहीन	
अश्म — पत्थर	अहम् — अंहकार ।	अहम — महत्वपूर्ण
अस्ति — है(अस्तित्वमान)	अस्थि — हड्डी ।	हस्ती — हाथी, सं, अस्तित्व
अभिसार — प्रेमी से छिपकर मिलना ।	अभीसार — आक्रमण	

अमर्ष – क्रोध

अवमर्ष – आलोचना

असार – लक्षण, चिह्न, मूसलाधार वर्षा

अभेद – अंतर नहीं

अभेद्य – न टूटने योग्य

अपेक्षा – आवश्यकता

उपेक्षा – अवहेलना, निरादर करना।

अनिष्ट – बुरा

अनिष्ट – निष्ठा-रहित

अनल – आग

अनिल – हवा

अष्टि – एक छन्द विशेष

अष्टी – ' एक राग

अनु – एक उपसर्ग जैसे – अनुकरण।

अणु – सूक्ष्म कण

असाध – कठिन

असाधु – दुष्ट

अशोच – बिना सोच के

अशौच – अशुद्ध

अनित्य – नश्वर

अनृत – असत्य

अयुक्त – अनुचित

आयुक्त – कमिशन

अवर – नीचे का

अपर – अन्य, पहला, पिछला।

अपार – असीम, विस्तृत

अंबुज – कमल

अंबुद – बादल

अंबुधि – समुद्र

अरबी – अरब की भाषा

अरवी – एक कंद

अवशेष – बचा हुआ

अविशेष – बचा हुआ।

अविशेष – साधारण, सामान्य

असित – काला अश्वेत

अशित – खाया हुआ

अवलंब – सहारा

अविलंब – तुरंत, बिना देर किए

अवदान – प्रशंसित कार्य

अवधान – ध्यान, मनोयोग

अवरोध – रुकावट

अविरोध – बिना विरोध के

अवधि – समय सीमा।

अवधी – हिंदी की एक बोली।

अविधि – कानून विरुद्ध

अभिराम – सुंदर

अविराम – बिना रुके, निरन्तर

अभिनय – नाटक कर्म

अविनय – धृष्टता

अंधकरी – महादेव

अंधकारी – भैरव राग

अन्न – अनाज

अन्य – दूसरा

अपत्य – संतान

अपथ्य – परहेज

अनुराग – प्रेम

विराग – विरक्ति, उदासीन

अलोक – लोक रहित, सुनसान, अदृश्य।

आलोक – प्रकाश

अलि, आलि – भौरा

अली, आली – सखी

अर्थी – इच्छावाला

अरथी – टिकठी, शव ले जाने के लिए बनी शैया

अवगत – ज्ञात, विदित

अविगत – अव्यक्त, अलग दूर

अवनि, अवनी – पृथ्वी

अवन – रक्षा, प्रसन्नता

अपहार — अपहरण , चोरी, छिपाना	उपहार — भेंट	
आदि — प्रारंभ, प्रथम, वगैरह	आदी — अभ्यस्त	
आयत — एक चतुर्भुज	आयात — विदेश से माल आना	
आकार — रूप	आकर — खजाना	
आर्द्रा — एक नक्षत्र का नाम	आर्द्र — गीला	
आर्ति — पीडा	आरति — विराम ।	आरती — पूजा के लिए दीपक, नीराजन
आवरण — पर्दा ।	आमरण — मृत्युतक ।	आभरण — आभूषण , गहने
आर्षी — वेद संबंधी	आरसी — आईना ।	आधी — आधा का स्त्रीलिंग
आपात — आकस्मिक ,गिराना ।	आपद् — संकट, विपत्ति ।	आपाद — पैर तक पुरस्कार
असन — भोजन	आसन — बैठने की जगह	
आसान — सरल	आसन्न — निकट	
अभ्यास — बार—बार करना	आभास — प्रतीत होना	
आदिम — प्रारंभिक	आदम — प्रथम मानवीय रचना, मनु	
आदेश — आज्ञा	उपदेश — शिक्षा, सीख	
आभार — कृतज्ञता	अभार — भारहीन	
अर्क — सूर्य	आर्क — शनि , सूर्य के पुत्र यम	
आयस — लोहा	आयसु — आज्ञा	
आय — आमादनी	आयु — उम्र	
आगम — वेद संबंधी शास्त्र	निगम — वेद आदि मंथ	
आरुण — अरुण से संबंधित	आरुणि — सूर्यपुत्र—यम,उद्वलक	
आहुत — हवि रूप में अर्पित ।	आहूत — बुलाया गया ।	आहूति — बुलाना, पुकारना
आहार — भोजन ।	उपहार — भेंट	आहुति — होम, बली
इंदु — चंद्रमा	इंदुर — चूहा	
इति — समाप्ति	ईति — बाधा, दैवी प्रकोप	
इंदिरा — लक्ष्मी	इंद्रा — इंद्राणी	
उद्यत — तैयार	उद्धत — अक्खड़	
उदार — दानशील	उद्धार — तारना ।	उधार — ऋण
उपयुक्त — ठीक	उपर्युक्त — ऊपरं कहा हुआ	
उर — हृदय	ऊरु— जाँघ	
उपयोग — व्यवहार में लाना	उपभोग — भोगना	
उदक — जल	उदक् — उत्तर दिशा	
उद्योग — प्रयत्न, कारखाना	उद्योत — प्रकाश	

उपल — पत्थर	उत्पल — कमल	
उबारना — उद्धार करना	उभारना — ऊँचा उठाना	
उदाहरण — दृष्टांत	उद्धरण — उतारना	
उत्पात — उपद्रव	उत्पाद — उत्पन्न वस्तु	
ऋत — सत्य	ऋतु — वर्षा, शरद आदि, ऋतुएँ	
ओर — तरफ	और — तथा	
ओटना — बिनौले अलग करना	औटना — खौलना	
कुल — वंश	कूल — किनारा	
कृत — किया हुआ	कृत्य — कार्य	
क्रीत — खरीदा हुआ	कृति — रचना।	कृती — चतुर, करनेवाला
कटक — सेना	कंटक — काँटा	
कल — मशीनरी, कल का दिन	कलि — कलियुग	कली — कलिका
कामुक — कामी व्यक्ति	कार्मुक — धनुष	
कल्पना — कृत्रिम विचार	कलपना — दुखी रहना	
कक्षा — श्रेणी	कुक्षि — कोख	
कान — कर्ण, श्रवणेंद्रिय	कानि — मर्यादा	
कादंबरी — शराब	कादंबिनी — घटा	
कोर — किनारा	कौर — ग्रास	
क्रम — सिलसिला	कर्म — काम	
कपिश — भूरा, बादामी	कपीश — हनुमान, सुग्रीव	
कृपण — कंजूस	कृपाण — तलवार	
केत — घर	केतु — झंडी, एक राशि।	केतू — एक ग्रह का नाम
कटौती — कुछ अंश कम करना		कठौती — काठ का कटोरा
करण — साधन	कर्ण — कान	
कृमि — कीड़ा	कर्मी — कर्मचारी	
कटीली — सुन्दर, पैनी	कँटीली — काँटों से युक्त	
कुंजर — हाथी	कंजर — एक जाति विशेष	
कीट — कीड़ा	कटि — कमर	
कृशानु — आग	किसान — कृषक	
कलश — घड़ा	कुलिश — हीरा, वज्र	
कुजन — दुष्ट	कूजन — पक्षियों की चहचहाहट	
कुच — स्तन, लालची	कच — बाल, लटें।	कूच — प्रस्थान, मधूक की कलिका

किला – दुर्ग	कीला – धातु की बनी कील	
करी – हाथी	कीर – तोता	
कुंतल – केश	कुंडल – कर्ण आभूषण	
काश – घास विशेष	कास – खाँसी	
कृत – किया हुआ	क्रीत – खरीदा हुआ	
कंत – पति	कांत – सुन्दर	
क्रांत – कुचला हुआ	क्लांत – थका हुआ	
कांता – सुंदर स्त्री	कांतार – जंगल	
कथा – कहानी	कंथा – गुदड़ी	
क्रोड – गोद	करोड़ – सौ लाख	
कटिबद्ध – तैयार	कटिबन्ध – कमर का एक आभूषण	
कंज – कमल	कुंज – पेड़ों का समूह, लता – मंडप	
कंगाल – निर्धन	कंकाल – अस्थि – पंजर	
कांति – चमक	क्रांति – शीघ्र परिवर्तन।	क्लांति – थकावट
केसर – सिंह की गर्दन के बाल	केशर – एक सुगंधित पदार्थ	
कुलाल – कुम्हार	कलाल – शराब विक्रेता	
काष्ठ – लकड़ी	काष्ठा – दिशा, सीमा	
कोड़ी – बीस	कौड़ी – घोंघा आदि का घर	
कृतज्ञ – उपकार मानने वाला	कृतघ्न – उपकार को न मानने वाला	
कदन – युद्ध, पाप, वध	क्रंदन – चीख।	कदन्न – बुरा, मोटा अनाज
कर्कट – केकड़ा (जंतु)	करकट – गंदगी	
कोसल – अवध	कौशल – निपुणता	
कोष – खजाना, भंडार	कोस – दो मील।	कोश – शब्दों का कोष
क्षति – हानि	क्षिति – पृथ्वी	
क्षमा – माफी	क्ष्मा – पृथ्वी	
क्षत्र – क्षत्रिय	क्षात्र – क्षत्रिय संबंधी	
खर – गधा	खार – राख, सार	
खरा – विशुद्ध	खर्रा – लंबा चिट्ठा।	खुर – पशु के पैर
खारी – नमकीन	खाड़ी – उपसागर	
खासी – अच्छा	खाँसी – रोग विशेष	
खाद – उर्वरक	खाद्य – खाने योग्य वस्तु	
खल – दुष्ट	खलु – निश्चित रूप से	

खोआ – दूध से बना पदार्थ	खोया – खोया हुआ	
खेर – कक्षा	खैर – कुशलता	
खोलना – बन्धन से मुक्त करना	खौलना –उबलना	
ग्रह – नक्षत्र	गृह –घर	
गर्व –घमंड	गर्भ – उदरस्थ शिशु	
गर्म – तप्त	घर्म –धूप	
गट्टा – कलाई	गट्ठा –गट्ठर	
गत – गया हुआ	गति – चाल,स्थिति	
गण – समूह	गण्य –गणना करने योग्य	
गदा – डंडेदार अस्त्र	गधा – गर्दभ पशु	
गड़ना – चुभना,समा जाना	गढ़ना – बनाना	
गूँथना –पिरोना	गूँधना –माड़ना,सानना	
ग्रंथि – गाँठ	ग्रंथ – पुस्तक।	ग्रंथी – गुरु ग्रंथसाहब का पाठ करने वाला
गिरा – वाणी,सरस्वती	गिरी – पर्वत	गरी –गूदा
गेय – गाने योग्य	ज्ञेय –जानने योग्य	
गुर –कायदा,तरीका	गुरु – शिक्षक	
गात – शरीर	घात – हमला करना	
घन –बादल	घना – गाढ़ा	
घोष – गर्जन	घोस – बस्ती	
घोर –बहुत बुरा	घोल – घुला मिश्रण	
चपत – थप्पड़	चंपत – गायब	
चरि – जानवर	चरी – चारा,गोचारण भूमि	
चार – चार की संख्या	चारू – सुन्दर	
चक्रवात – चक्करदार हवा	चक्रवाक – चकवा	
चर्म – खाल	चरम – अंतिम	
चित् – ज्ञान,चेतना	चित – पीठ के बल।	चित्त – मन
चिता – मुर्दा जलाने के लिए चुनी हुई लकड़ियाँ		
चिंता – फिक्र	चीता – एक जंगली पशु	
चालक – चलाने वाला	चालाक – चतुर	
चूड़ – चुटिया	चूर – चूर्ण	
चिर – हमेशा	चीर – वस्त्र	
चतुष्पद – चार पैरोंवाला	चतुष्पथ – चौराहा	

छगड़ी — बकरी	छकड़ी — बैलगाड़ी	
छत्र — छाता, छतरी	छात्र — विद्यार्थी	
छीन — जबरदस्ती ले लेना	क्षीण — कमजोर	
छाग — बकरा	छाक — तृप्ति, नशा।	छाछ — मट्ठा
छत — मकान को छानेवाली	क्षत — घायल	
जल — पानी	जाल — बंधन, पशु-पक्षी फँसाने का झीना पट	
जगत — कुँएँ का चबुतरा	जगत् — संसार	
जलज — कमल	जलद — बादल	जलधि — समुद्र
जघन — जंघा	जघन्य — बहुत बुरा	
जर — जरा, विनाश	जरा — वृद्धावस्था	
ज़र — दौलत	ज़रा — थोड़ा	
जठर — पेट	जरठ — बूढ़ा	
जामन — दूध जमाने की खटाई	जामिन — जमानती।	जामुन — फल विशेष
जुआ — बैलों के कंधे की लकड़ी	जूआ — द्यूत खेल	जूवां — युवा, तरुण
जोंक — पानी का एक कीड़ा	झोंक — इकतरफा झुकाव, सनक	
जूठा — खाकर छोड़ा हुआ	झूठा — झूठ बोलने वाला	
डामर — तारकोल	डाबर — गंदा, गड़ढा	
डाट — टेक	डाँट — फटकार	
डीठ — नजर	ढीठ — बेशर्मा	
ढलाई — ढालने की क्रिया	ढिलाई — शिथिलता	
तम — अंधकार	तमा — रात्रि	
तरणि — सूर्य	तरणी — नाव	तरुणी — युवती
तर्क — बहस	तक्र — छाछ	
तरंग — लहर	तुरंग — घोड़ा	
तप — तपस्या	ताप — गर्मी	
तृण — तिनका	त्राण — मुक्ति	
तलाक़ — विवाह विच्छेद	तड़ाक — शीघ्र	तड़ाग — तालाब
तन — शरीर	तनू — पुत्र	
तरि — नाव	तरी — ठंडक	
तुंद — पेट	तुंड — चोंच, मुख	
तप्त — गर्म	तृप्त — संतुष्ट	
तर — गीला	तरू — पेड़	

थका – क्लान्त, शिथिल	थक्का – कतरा, लोंदा	
थन – पशु के स्तन	थनी – बकरी के गले के स्तन	
द्रव – तरल पदार्थ	द्रव्य – धन, पदार्थ	
दास – नौकर	दस्यू – डाकू	
दशा – हालत, अवस्था	दिशा – ओर, दिशा	
दिन – दिवस	दान – धर्म/दया के भाव से देना	
अनुदान – आर्थिक सहायता	दीन – गरीब, दयनीय	
दस – दस की संख्या	दंस – डंक	दंश – चुभन
दशन – दाँत	दसन – क्षय, नाश	
दूत – संदेशवाहक	द्यूत – जुआ	
दाह – जल जाना	दह – गंभीर, बड़ा तालाब	देह – शरीर
दामन – साड़ी का छोर	दमन – दबाना	
द्विपी – बाघ, चीता, हाथी	दीप – दीपक	
द्वीप – टापू	द्विप – हाथी	
द्वार – दरवाजा	दारा – स्त्री	
देव – देवता	दैव – भाग्य	
देहात – गाँव	देहांत – तरण	
दाख – एक सूखा फल	धाक – दबदबा	
दमन – दबाना	दामन – आँचल	
दर्भा – कुशा घास	दूर्वा – दूब	
दाम – मूल्य	धाम – घर, स्थान	
दावा – वाद	धावा – हमला	द्वाया – आकाश
धेय – धारण करने योग्य	ध्येय – उद्देश्य	देय – देने योग्य
दाय – देन	धान – बच्चे को पालने वाली स्त्री	
धनी – धनवान	धणी – पति	
धरा – पृथ्वी	धारा – प्रवाह	
धन – संपत्ति	धान – चावल	धान्य – अनाज
धनु – धनुष	धेनु – गाय	
नंदी – शिव का वाहन	नांदी – मंगलाचरण	
नद – नदी	दत – झुका हुआ, विनम्र	
नशा – मदहाशी	निशा – रात	
नहर – जलवाहिनी	नाहर – सिंह	

नगर — शहर	नागर — शहरवासी	
नियत — निश्चित	नीयत — मन की इच्छा	नियति — भाग्य
नीरज — कमल	नीरद — बादल	
नाई — हजामत बनाने वाला	नाई — तरह, समान	
नक़ल — अनुकरण	नकुल — नेवला	
निशाचर — राक्षस, चोर, पक्षी	निशाकर — चंद्रमा	
निर्वाद — निंदा, भ्रांति, अफ़वाह	निर्वात — बिना हवा के	
निर्माण — रचना	निर्वाण — मोक्ष	
निगम — वेद, संगठन	निर्गम — निकास	
निशामुख — गोधूलि वेला	निशामृग — गीदड़	
नौल — नवल, नया	नौला — नेवला	
नीड़ — घोंसला	नीर — पानी	
निधन — मृत्यु	निर्धन — ग़रीब	
नम — गीला	नमः — नमस्कार	
नाग — साँप	नाक — शरीर का एक अंग	
निदेश — निर्देश, आज्ञा	निर्देशक — निर्देश देने वाला	
निर्जन — एकांत	निर्जर — देवता, जो कभी बूढ़ा न हो,	निर्झर — झरना
निवृत्ति — अवकाश, छुटकारा	निर्वृत्ति — सिद्धि, पूर्ति	
नियुत — दस लाख	नियुक्त — सेवा में लगाया हुआ	
नेक — भला, थोड़ा	नेग — दस्तूर	
निहत — मारा हुआ	निहित — रखा हुआ	
नक्र — मगर	नर्क — नरक	
नख — नाखून	नग — नगीना, पहाड़	नाग — सर्प
नद — बड़ी नदी	नाद — शब्द, आवाज	
नर्म — कोमल	नम्र — विनित	
निश्छल — बिना कपट के	निश्चल — जो चल न सके	
निंदा — बुराई	निद्रा — नींद	
पंक — कीचड़	पंगु — लंगड़ा	
पतन — गिरावट	पत्तन — नगर	
पथ — रास्ता	पथ्य — रोगी के लिए खाने योग्य भोजन	
पावस — वर्षा	पायस — खीर	
पद — ओहदा, पाँव	पद्य — छंदबद्ध रचना	

पर — अन्य, दूसरा	परा — ब्रह्मविद्या	
परीक्षा — इम्तिहान, जाँच	परिक्षा — कीचड़, गीली मिट्टी	
पता — ठिकाना	पत्ता — पत्र	
पट — वस्त्र	पट्ट — तख्ती, पीठ	
पटु — कुशल	पट्टू — ऊनी वस्त्र	
परम — बड़ा	परमा — सुन्दरता	
पवन — हवा	पावन — पवित्र	
प्लावन — प्रलयकारी बाढ़	पातक — पापी	
पत — प्रतिष्ठा	पति — स्वामी	
परिमाण — मात्रा, तौल	परिणाम — नतीजा	
परिधान — वस्त्र	प्रधान — मुखिया, मुख्य	
परुष — कठोर	पुरुष — आदमी	
पहाड़ — पर्वत	फाड़ — चीर	
परिचालक — बस कन्डक्टर।	परिचारक — सेवक।	प्रचारक—प्रचार करने वाला
परमिति — परम सीमा, मर्यादा	परिमित — सीमित, मापा हुआ	
पदत्राण — जूता	परित्राण — रक्षण	
परिक्षत — नष्ट भ्रष्ट	परीक्षित — जाँचा हुआ, राजा विशेष	
पास — नजदीक	पार्श्व — पास	पाश — बंधन, फंदा
पेय — पीने योग्य	प्रेय — प्रिय	
परिणय — विवाह	प्रणय — प्रेम	
परिणीत — विवाहित	प्रणीत — रचित	
पिक — कोयल	पीक — थूक	
परिताप — दुःख	प्रताप — पराक्रम	
पयोज — कमल	पयोद — बादल	
पाणि — हाथ	पानी — जल	
पर्यंक — पलंग	पर्यंत — तक, भर	
पायस — खीर	पायसा — पड़ोस	
परिजन — परिवार के लोग	परजन — शत्रु	पर्जन्य — बादल
पका — सीझा हुआ	पक्का — मजबूत	
पशु — जानवर	पांशु — रेत, रज	
परिच्छद — वस्त्र, ढाँकने की वस्तु,	परिच्छेद — विभाग, पैरेग्राफ	
प्रसाद — कृपा	प्रासाद — महल	

प्रेषित — भेजा गया	प्रोषित — प्रवास करने वाला	प्रेक्षित — देखा हुआ
पृथा — कुंती	प्रथा — रीति	
प्रहार — चोट	प्रहर — पहर	
पण — मूल्य	पर्ण — पत्ता	
प्रण — प्रतिज्ञा	प्राणी — जीव	
पाणि — हाथ	पानी — जल	
पुष्कल — पर्याप्त	पुष्कर — सरोवर, एक तीर्थ	
प्रवाल — मूँगा	प्रवार / प्रावार	
प्रणाम — नमस्कार	प्रमाण — सबूत	
प्रस्तर — पत्थर	प्रस्तार — प्रसार	
प्रवाह — बहना	परवाह — चिन्ता	
प्रणत — झुका हुआ	प्रणीत — रचित	
परिणीत — विवाहित	परिणत — बदला हुआ	
प्रतिशोध — बदला	प्रतिषेध — मनाही, वर्जित	
प्रत्युपकार — उपकार के बदले उपकार	प्रत्यपकर — उपकार के बदले अपकार	
प्रचारक — प्रचार करने वाला	परिचारक — सेवक	
परिवर्तन — बदलाव	प्रवर्तन — आगे लाना	
प्रदीप — दीपक	प्रतीप — उलटा	
प्रकर — समूह	प्रकार — ढ़ंग	
प्रकार — परकोटा	प्रहार — हमला, चोट	परिहार — त्याग
प्रांजल — सरल, सुबोध	प्रांजलि — जो हाथ जोड़ हो	
फ़न — गुण	फण — साँप का फैला हुआ मुँह	
बुरा — खराब	बूरा — एक प्रकार की शक्कर	
बात — बातचीत	वात — हवा	
बद — बुरा	बंद — जो खुला न हो	
बाँट — बाँटना, हिस्सा	बाट — रास्ता, तौलने का वजन	
बली — बलवान	बलि — न्यौछावर, भेंट	
बहन — भगिनी	वहन — भार ढोना	
बारिश — वर्षा	वारिस — उत्तराधिकारी	वारीश — समुद्र
बास — दुर्गंध	वास — रहने का स्थान	
बिना — रहित	वीणा — एक वाद्य यन्त्र	
बीच — मध्य	बीज — उत्पन्न करने के लिए दाना	

बाध्य — लाचार,

वध्य — मारने योग्य

बंध्या — बाँझ

बाढ़ — खेत के चारों ओर रूकावट

बाढ़ — तेजी से जल प्रवाह

बदन — शरीर

वदन — मुँह

बान — आदत

बाण — तीर

बन्दी — कैदी

वन्दी — वन्दना करने वाला

बाजी — दाव

वाजी — घोड़ा

ब्याज — सूद

व्याज — बहाना

भव — संसार

भाव — भावना, मूल्य

भवन — मकान

भुवन — संसार

भारती — सरस्वती

भारतीय — भारतवासी

भट — योद्धा

भट्ट — पंडित

भान — ज्ञान

भाण — एक प्रकार का नाटक

भीति — डर

भित्ति — दीवार

भिड़ — ततैया, बरें

भीड़ — झुण्ड

मद — अहंकार

मद्य — शराब

मेघ — बादल

मेध — हवन, यज्ञ

मेद — चर्बी

मूल — जड़

मूल्य — कीमत

मत — विचार, सलाह

मत्त — मतवाला

मास — महीना

माष — उड़द

मौर — पक्षी विशेष

मति — बुद्धि

मन्दर — पर्वत

मन्दिर — देवालय

मेल — एकता

मैल — गंदगी

मल्ल — योद्धा

मल — गंदगी

मणि — एक रत्न

मणी — सर्प

मनुज — मनुष्य

मनोज — कामदेव

मानक — मापदंडानुसार

मानिक — एक रत्न

योग — संयोग, युगल

योग्य — लायक

यक्ष — एक जाति विशेष

यज्ञ — हवन

युगल — जोड़ा

युग्म — जुड़वाँ

योगेश्वर — योग में सिद्ध (शिव)

योगीश्वर — योगियों में शिरोमणि

रंक — दरिद्र

रंग — वर्ण

रक्त — खून

रिक्त — खाली

रंचक — थोड़ा	रंजक — मेंहदी, रंगरेज	
रंभा — एक अप्सरा	रंभाना — गाय का स्वर	
रक्षित — रक्षा किया हुआ	रक्षिता — एक अप्सरा का नाम	
रति — कामदेव की स्त्री, संभोग	रत्ती — तौल की एक मात्रा, लाल घुँघची	
रीछ — भालू	रीझ — आसक्त, मोहित	
राही — राहगीर	रोही — चढ़ने वाला, पीपल का पेड़	
रीस — ईर्ष्या	रिस — क्रोध	
रेखा — लकीर	लेखा — हिसाब	
लग्न — निश्चित समय, मुहूर्त	लगन — उत्साह	
लक्ष्य — उद्देश्य	लक्ष — लाख (संख्या)	लाक्षा — लाख (पदार्थ)
लता — बेल	लत्ता — कपड़ा	
लगान — भूमि कर	लगाम — घोड़े को नियंत्रित करने वाली रस्सी	
लोभ — लालच	लोम — बाल	
लौटना — वापस होना	लेटना — करवट लेना	
लिपट — चिपट	लपट — ज्वाला	
वन — जंगल	वन्य — जंगल	
व्याध — शिकारी	व्याधि — रोग	
विजन — एकान्त	विपन्न — निर्धन, दुखी	
व्यजन — पंखा	व्यंजन — क्, ख् आदि ध्वनियाँ, खाद्य पदार्थ	
विस्मित — चकित	विस्मृत — भूला हुआ	
वर्ण — घाव	वर्ण — रंग, सामाजिक वर्ग	
विश्वंभर — परमेश्वर	विश्वंभरा — पृथ्वी	
विद्या — शिक्षा, ज्ञान	विधा — ढंग	
विरुद — यश	विरुद्ध — खिलाफ	
वृंद — समूह	वृंत — डंठल	वित्त — रुपया पैसा
वृत्त — गोला	व्रत — प्रतिज्ञा, उपवास	
व्यंग्य — छींटाकसी, शब्द चोट	व्यंग — विकलांग	
व्यसन — बुरी लत	वसन — वस्त्र	
विधान — व्यवस्था	व्यवधान — रुकावट	
विख्यात — प्रसिद्ध	विज्ञात — विशेष रूप से जानना	
विवरण — ब्यौरा	विवर्ण — बदरंग, भय आदि से चेहरे का रंग बदल जाना	
विपणि — दुकान	विपणी — दुकानदार	

विपण — बाजार	विपिन — जंगल
वमन — उल्टी, के	वामन — बौना
वहन — धारण करना	वरण — चुनाव
वारण — न्यौछावर करना	वाहन — सवारी
विच्छेद — अलगाव, टूटकर अलग होना,	वस्तुतः — असल में
वाद — मत	वाद्य — बाजा
वस्तु — चीज	वास्तु — मकान
व्याकरण — शब्दशास्त्र	वैयाकरण — व्याकरण का ज्ञाता
विजय — जीत	विजया — देवी , भाग
व्यष्टि — व्यक्ति	व्यष्टका — कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा
शोक — अफसोस	शौक — रुचि
शकल (अरबी शब्द) — शक्ल	शकल (संस्कृत शब्द) — चमड़ा, टुकड़ा
सकल — समस्त	शंकर — शिव, संकर — मेल, मिश्रण
शंकु — कोई नुकीली वस्तु, भाला	शंक — आशंका
शंबु — घोंघा, सीप	शंभु — शिव
शकट — बैलगाड़ी,	शटकार — महानन्द का प्रधानमंत्री
शक्ति — बल	शकटारि — श्रीकृष्ण
शप्त — शाप पाया हुआ	शक्तु — भुने हुए अन्न का आटा, सत्तू
शचि, शची — इन्द्र की पत्नी	सप्त — सात
सूची — नामावली (लिस्ट)	शुचि — पवित्र
शलभ — पतंगा	सूचि — सुई
शशिधर — शिव	सुलभ — आसानी से प्राप्त
शमीर — शमी वृक्ष	शशधर — चंद्रमा
श्रोत — कान	समीर — हवा
श्रवण — कान, सुनना	स्त्रोत — झरना, उद्गम
शव — लाश	श्रमण — भिक्षु, बौद्ध
शूर — शूरवीर	सब — सम्पूर्ण
शील — मर्यादा	सूर — सूर्य
शुल्क — फीस	सिल — पत्थर
श्वेत — सफ़ेद	शुक्ल — सफ़ेद
शाला — घर	स्वेद — पसीना
शर — बाण	साला — पत्नी का भाई
	सर — तालाब

शिष्ट – सदाचारी	शिष्य – छात्र	
शिरा – नाड़ी	सिरा – छोर	
शिव – शंकर	शर्व – शिव, विष्णु	सर्व – सब
शिवि – एक राजा	शिविर – छावनी	
शिखर – चोटी	शेखर – सिर	शिशिर – जाड़ा
शम – शांति	सम – बराबर	
शांति – स्थिरता	श्रांति – थकावट	
शिति – श्याम	सित – सफेद	
शील – चरित्र	सिल – पत्थर (छोटी शिला)	
श्व – आनेवाला कल	स्व – अपना	
षष्टि – 60 वर्ष	षष्ठी – छठी	
संदिग्ध – संदेहपूर्ण	संदग्ध – जला हुआ	
स्वजन – बन्धु	श्वजन – कुत्ता	
संप्रति – अब	संप्राप्ति – प्राप्त करना	
सदेह – प्रत्यक्ष, देहसहित	संदेह – शंका	
सिता – शक्कर, मिस्त्री	सीता – राम की पत्नी	
सुखी – सुखवाला	सूखी – शुष्क	
सुत – पुत्र	सूत – धागा, भाट	
समान – बराबर	सम्मान – आदर	सामान – सामग्री
सौगंध – शपथ	सुगंध – अच्छी गंध	
सजा – दंड	सज्जा – सजावट	
सबल – शक्तिशाली	शबल – रंग बिरंगा	
सिवा – अतिरिक्त	शिवा – पार्वती	
समिति – सभा	सम्मति – राय	
सत्त्व – सार	स्वत्व – अधिकार	
सत – सत्य	सत्त – सार	
सप्त – सात	सुप्त – सोया हुआ	
संग – संगति, साथ	संघ – संगठन, समूह	
सम्मत – एक ही राय का	संवत् – वर्ष	
सुधि – याद	सुधी – बुद्धिमान	सुध – होश, चेतना
सर्ग – सृष्टि, रचना	स्वर्ग – देवलोक	
सुन – सुनना	सुन्न – सूना	

सवर्ण — समान जाति का , ऊँची जाति का

सुवर्ण — सोना

सम — बराबर

शम — शांति

सर्वदा — हमेशा

सर्वथा — सब तरह से

सागर — समुद्र

सागर — शराब का प्याला।

सुधार — संस्कार

सिधार — प्रस्थान

सुरभि — गंध

सुरभी — गाय

सूचि — सूई

सूची — नामो का संग्रह

सीसा — एक धातु

शीशा — काँच/दर्पण

सोम — चंद्रमा

सौम्य — सरल

स्तन — उरोज

स्तन्य — दूध

स्त्रोत — उद्गम

स्त्रोत — स्तुति

श्रोत/श्रोत — कान

हरण — चोरी

हरिण — मृग

हरिण्य — सोना

हस्त — हाथ

हस्ती — हाथी

हृद् — हृदय

हृद — तालाब

हास — हँसी

ह्रास — हानि

हाल — दशा

हाला — शराब

हरि — भगवान विष्णु

हरी — हरण की , हरे रंग की

हर — शिव

हय — घोड़ा

हंस — एक पक्षी

हँस — हसना

हेय — निम्न

हत — मरा हुआ

हितु — लाभ पहुँचाने वाला

हेतु — कारण

हेम — सोना, स्वर्ण

होम — हवन।

अध्याय 22 —लोकोक्तियाँ

अकल बड़ी कि भैंस — शारीरिक बल से बौद्धिक बल अधिक अच्छा होता है।

अकल का अंधा/अकल का दूश्मन होना — महा मूर्ख होना

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता — समूह के द्वारा किया जा सकनेवाला कठिन काम एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता है।

अटका बनिया देय उधार — स्वार्थी और मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है।

अध जल गगरी छलकत जाए — अल्प सामर्थ्य वाला व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के बारे बहुत डींग हाकता है।

अंधी पीसे कुत्ता खाय — मूर्ख की कमाई दूसरे ही खाते हैं।

अंधा क्या चाहे दो आँख — इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना।

अंधो में काना राजा — अज्ञानियों में अल्पज्ञ भी बुद्धिमान माना जाता है।

आँख का अंधा नाम नयन सुख — गुणों के विपरीत नाम

अंधे की लकड़ी – एक मात्र सहारा

अंधे के आगे रोवे अपने भी नैन खोवे – अपात्र से मदद माँगने का व्यर्थ परिश्रम

आँख का अंधा गाँठ का पूरा – मूर्ख किंतु सम्पन्न

अंधे के हाथ बटेर लगना – बिना मेहनत के ही उपलब्धि होना

अंधेर नगरी चौपट राजा – कुप्रशासन और अजागरूक जनता

अपनी-अपनी ढपली अपना- अपना राग – अपनी मनमानी करना और एक-दूसरे के साथ तालमेल नहीं रखना

अपनी करनी पार उतारनी – अपना कार्य ही फलदायक होता है।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है – अपने घर में, क्षेत्र में तो सब जोर बताते हैं।

अपनी पगड़ी अपने हाथ – अपने सम्मान को बनाए रखना अपने ही हाथ है।

अपना हाथ जगन्नाथ – स्वयं का काम स्वयं द्वारा ही संपन्न करना उपयुक्त है।

अपना सोना खोटा तो परखैया का क्या दोष – हम में ही कमजोरी हो तो बतानेवालों का क्या दोष।

अब पछताए क्या होत है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत – हानि हो गई, हानि से बचने का अवसर चले जाने के बाद पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं।

आँख बची और माल यारों का – अपने सामान से थोड़ा सा भी ध्यान हटा कि सामान की चोरी हो सकती है।

आगे कुआँ पीछे खाई – दोनों और संकट

अरहर की टट्टी और गुजराती ताला – अनमेल प्रबंध व्यवस्था

आगे नाथ न पीछे पगहा – पूर्णतः अनियंत्रित

गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है – दोषी की संगति से निर्दोष भी दंडित हो जाता है

आधा तीतर आधा बटेर – अनमेल योग

आधी छोड़ एक को ध्यावे, आधी मिले न सारी पावे – लोभ में सहज रूप से उपलब्ध वस्तु को भी त्यागना पड़ सकता है।

आग लगती झोपड़ी जो निकले सो लाभ – व्यापक विनाश में जो कुछ बचाया जा सकता है वह लाभ ही है।

आ बैल मुझे मार – जान बूझकर आफत मोल लेना

आम के आम घुटलियों के दाम – दुहरा फायदा

आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास – बड़ा लक्ष्य निर्धारित कर छोटे कार्य में लग जाना

आसमान से गिरा खजुर में अटका – एक आपत्ति के बाद दूसरी आपत्ति का आ जाना

आस्तीन का साँप होना – निकट के व्यक्ति का विश्वासघाती होना

इन तिलों में तेल नहीं – किसी भी लाभ की संभावना न होना।

इमली के पात पर दंड पेलना – सीमित साधनों में बड़ा कार्य करने का प्रयास करना

ईश्वर की माया, कही धूप कही छाया – संसार में व्याप्त भिन्नता

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे – दोषी का निर्दोष पर दोषारोपण करना।

उल्टे बाँस बरेली को – जहाँ जो चीज उपलब्ध हो, पैदा होती हो, उल्टे वहीं पर वह वस्तु पहुँचना।

उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई – बेशर्म आदमी पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता

ऊँची दुकान फीका पकवान – प्रदर्शन तो अधिक और सर की बात कम

ऊँट किस करवट बैठता है – ऐसी घटना की प्रतीक्षा जिसका अनुमान लगाना असंभव है।

ऊँट के मुँह में जीरा – आवश्यकता की तुलना में बहुत कम पूर्ति

ऊँट की चोरी और झुके-झुके – गुप्त न रह सकने वाले कार्य को गुप्त ढंग से करने का प्रयास करना

एक अनार सौ बीमार – वस्तु की पूर्ति की तुलना में माँग अधिक

एक हाथ से ताली नहीं बजती – केवल एकपक्षीय सक्रियता से कार्य पूरा नहीं होता।

एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है – एक बदनाम व्यक्ति अपने साथ के सभी लोगों को बदनाम करता है।

एक और ग्यारह होते हैं – संघ में बड़ी शक्ति है।

एक म्यान में दो तलवारे नहीं आ सकती – एक ही स्थान पर दो समान वर्चस्व के प्रतिद्वन्दी नहीं रह सकते।

एक पंथ दो काज – एक प्रयत्न से दो काम हो जाना

एक तो करेला गिलोय और दूसरा नीम चढ़ा – एक साथ दो-दो दोष

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर – स्थितियों का एकदम विपरीत परिवर्तन

ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरे – कठिन काम को हाथ में लेने पर आने वाली बाधाओं से क्या डरना।

कर ले सो काम और भज ले राम – समय पर जो कर लिया जाए वही अपना है।

ककड़ी चोर को फाँसी की सजा नहीं दी जा सकती – साधारण से अपराध के लिए बड़ा दण्ड उचित नहीं।

का वर्षा जब कृषि सुखाने – हानि हो चुकने के बाद उपचार करने से क्या लाभ।

काजी जी दुबले क्यों शहर का अंदेशा है – दूसरों के कष्ट से चिंतित रहना।

काला भैंस बराबर – निरक्षर अनपढ़।

कागहि कहा कपूर चुगाए, स्वान न्हवाए गंग – दुर्जन की प्रकृति खूब प्रयत्न करने पर नहीं बदलता।

कानी के ब्याह में कौतुक ही कौतुक – किसी दोष से युक्त होने पर कठिनाइयाँ आती ही रहती हैं।

काबुल में क्या गधे नहीं होते – अपवाद तो सभी जगह होते हैं।

कोऊ नृप होइ हमे क्या हानि – किसी भी परिवर्तन के प्रति उदासीनता
कौआ चले हंस की चाल – किसी बुरे व्यक्ति द्वारा अच्छे व्यवहार का दिखावा करना
कही खेत की सुनी खलियान की – कुछ का कुछ सुनना
कहीं की ईंट कहीं का रोडा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा – अनमोल वस्तुओं का संग्रह करना
कोयले की दलाली में हाथ काले – बुरे कार्य से जुड़ने पर बुराई मिलती ही है
खग जाने खग ही की भाषा – सब अपने-अपने संपर्क के लोगों का हाल समझते हैं।
खरी मजूरी चोखा काम – पारिश्रमिक सही देने पर काम भी अच्छा होता है।
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है – एक को देखकर दूसरे में परिवर्तन आता है।
खिसियानी बिल्ली खंबा नोचे – असफलता से लज्जित होकर क्रोध करना
खुदा गंजे को नाखुन नहीं देता – अनधिकारी एवं दुर्भावी व्यक्ति को अधिकार नहीं मिलता है।
खोदा पहाड़ और निकली चुहिया – अधिक परिश्रम पर लाभ कम
गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमूनादास – सिद्धांत अवसरवादी व्यक्ति
गंगा का आना हुआ और भागीरथ को यश – काम तो होना ही था, यश किसी को मिल गया
गुड़ ना दे पर गुड़ की सी बात तो करें – यदि किसी की मदद नहीं की जा सके तो कम से कम मधुर व्यवहार तो होना चाहिए।
गुड़ खाए मर जाए तो जहर देने की क्या जरूरत – यदि शांतिपूर्वक ही कोई हो जाए तो कठोर व्यवहार की जरूरत नहीं
घर का जोगी जोगना आना गाँव का सिद्ध – परिचितों की अपेक्षा दूर के अपरिचितों को अधिक महत्व दिया जाता है।
घर की मूर्गी दाल बराबर – सहज सुलभ वस्तु का कोई महत्व नहीं होता है।
घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या – यदि निर्वाह के लिए भी कमाई करने में लिहाज बरता जाए तो जीवन कैसे चलेगा।
घर का न घाट का – न इधर का न उधर का, कहीं का नहीं
घर का भेदी लंका ढाए – घर का रहस्य जानेनेवाला बड़ी हानि पहुँचा सकता है
घर में नहीं दाने, बुढिया चली भुनाने – झूठा प्रदर्शन
घर आया नाग न पूजिए बाम्बी पूजन जाए – स्वतः आए सुअवसर का लाभ न उठाकर फिर उसको प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना।
घर खीर तो बाहर खीर – घर में सम्पन्नता और सम्मान है तो बाहर के लोगों से भी यही मिल जाता है।
घायल की गति घायल जाने – जो कष्ट भोगता है वही दूसरे के कष्ट को समझ सकता है।
चंदन की चुटकी भली गाड़ी भरा न काठ – उपयुक्त गुणवाली वस्तु तो थोड़ी-सी भी अच्छी है और गुणरहित वस्तु अधिक मात्रा में भी निरर्थक है
चलती का नाम गाड़ी – जब तक सफलता मिलती रहे तब तक ही यश और प्रभाव रहता है।

चंदन विष व्यापै नहीं लिपटे रहत भुजंग – भले लोगों पर बुरो की संगति का असर नहीं पड़ता

चंद्रमा को भी ग्रहण लगता है – भले लोगों के भी बुरे दिन आ सकते हैं।

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए – अत्यधिक कंजूस

चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात – थोड़े समय का सुख अधिक समय का दुख

चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता – बेशर्म पर कोई अच्छा असर नहीं होता है।

चुपड़ी और दो-दो – अच्छी चीज और वही भी बहुतायत में

चोरन कुतिया मिल गई पहरा किसका देय – जब रक्षक ही चारों से मिल गया तो फिर ऐसे व्यक्ति से रक्षा करवाने का कोई अर्थ नहीं है।

चोर – चोर मौसेरे भाई – दुष्ट लोगों में आपस में घनिष्ठता होती है।

चोर की दाढ़ी में तिनका – दोषी अपने व्यवहार में ही दोष करने का संकेत दे देता है।

चोरी का माल मोरी में – गलत ढंग से कमाया धन यों ही बर्बाद होता है।

चोर से कहे चोरी कर शाह से कहे जागता रह – दोनों विरोधी पक्षों से संपर्क रखने की चालाकी।

चोरी और सीना जोरी – अपराध भी करना और अकड़ना भी।

छछूंदर के सर में चमेली का तेल – अयोग्य व्यक्ति द्वारा स्तरीय वस्तु का उपयोग।

छोटा मुँह बड़ी बात – सामर्थ्य से अधिक के बारे में डींग मारना।

जंगल में मोर नाचा किसने देखा – किसी के गुणों के देखे बिना उनका पता नहीं लगता।

जल में रहकर मगर से बैर – अपने से अधिक शक्तिशाली साथियों से दुश्मनी बढ़ाना।

जस दूल्हा तस बनी बराता – जैसा मुखिया वैसे ही अन्य साथी।

जाकै पैर न फटे बिवाई वह क्या जाने पीर पराई – स्वयं दुःख भोगे बिना दूसरे की पीड़ा का आभास नहीं हो सकता।

जान बची लाखों पाए – जान है तो जहान है।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइया गहरे पानी पैठ – जो संकल्पशील होते हैं वे कठिन परिश्रम करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेते हैं।

जिसकी लाठी उसकी भैंस – शक्तिशाली की ही संपत्ति है।

जैसा देश वैसा भेष – स्थान व अवसर के अनुसार व्यवहार करना।

जो गुड़ खाए सो कान छिदाय – लाभ पाने वाले को ही कष्ट उठाना पड़ता है।

झूठ के पैर नहीं होते – झूठ अधिक दिन नहीं चल सकती।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़े घर की सिल – बाहर अपने से बलवान से अपमानित होकर घर के लोगों पर गुस्सा निकालना।

टके के लिए मस्जिद तोड़ना – छोटे से स्वार्थ के लिए बड़ा नुकसान करना।

ढाक के तीन पात – सदैव एक सी स्थिती।

तबेले की बला बंदर के सिर – किसी एक पर अन्य का दोष मँढ़ देना।

तीन लोक से मथुरा न्यारी – सबसे अलग स्थिति।

तीन में न तेरह में – जिसका कुछ भी महत्त्व न हो।

तिनके की ओट में पहाड़ – छोटी चीज के पीछे बड़े रहस्य का छिपा होना।

तुरंत दान महा कल्याण – शुभ कार्य करते ही तुरंत अच्छा अच्छा फल प्राप्त होना।

तू डाल-डाल, मैं पात-पात — एक चालाक से बढ़कर दूसरा चालाक।

तेते पाँव पसारिए जेती लम्बी सौर – अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यय करना।

थोथा चना बाजे घना – अकर्मण्य बात अधिक करता है।

थोड़ी पूँजी धणी को खाय – अपर्याप्त पूँजी से व्यापार में घाटा होता है।

दबी बिल्ली चूहों से भी कान कटवाती है – किसी से दबा हुआ आदमी अपने से कमजोर लोगों के भी वश में रहता है।

दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते – मुफ्त में मिली वस्तुके बारे में क्या पसंद क्या ना पसंद।

दाख पके तब काग के होय कंठ में रोग – किसी वस्तु का उपभोग करने की स्थिति में आने पर उसका उपभोग कर सकने में असमर्थ हो जाना

दाल-भात में मूलसचंद – अवांछित एवं अनुचित हस्तक्षेप करना

दाल में काला होना – कुछ संदेहास्पद बात होना

दीवारों के भी कान होते हैं – गोपनीय बातचीत बहुत सावधानी से करनी चाहिए क्योंकि उसके औरो के ज्ञात हो जाने की संभावना बनी रहती है।

दूध का दूध पानी का पानी – सही न्याय करना सही को सही और गलत को गलत बताना

दुधारू गाय की लात भी अच्छी लगती है – जो व्यक्ति लाभकारी है उससे थोड़ा बहुत नुकसान भी सहन कर लेना उचित है।

दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम – दुविधाग्रस्त व्यक्ति को किसी की भी प्राप्ति नहीं होती।

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का – जो दो भिन्न पक्षों से जुड़ा रहता है वही कही का नहीं रहता।

न ऊधो का लेना न माधो का देना – किसी से कोई मतलब नहीं होना

नमाज छोड़ने गए रोजे गले पड़े – एक छोटी समस्या से मुक्ति का प्रयास करने में बड़ी समस्या से घिर जाना

न नो मन तेल होगा, न राधा नाचेगी – किसी कार्य को करने के लिए अव्यावहारिक शर्त लगाना

नक्कारखाने में तूती की आवाज – बड़ों के बीच में छोटे आदमी की कौन सुनता है

नाच ना जाने आंगन ढेडा – अपनी अयोग्यता के लिए साधानों को दोष देना।

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी — किसी समस्या के मूल कारण को ही नष्ट कर देना

नाच न जाने आँगन टेढ़ा — अपनी अयोग्यता के लिए साधनों को दोष देना।

नीम(अधूरा) हकीम खतरे जान — अज्ञानी एवं अनुभवहीन खतरनाक होता है।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस — बहुत सुस्ती से काम करना।

नेकी और पूछ-पूछ — शुभ कार्य करने के लिए क्या पूछना।

नेकी कर दरिया में डाल — दूसरे की भलाई करके उसे भूल जाना चाहिए तथा दूसरे से उसके प्रतिदान की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

नौ नकद न तेरह उधार — यदि लाभ शीघ्र मिल रहा हो तो वह बाद में मिलनेवाले वाले अधिक लाभ की तुलना में अच्छा है।

पनाधीन सपनेहुँ सुख नाहीं — पराधीनता में सुख कहाँ।

पाँचों अँगुलियाँ घी में है — पूरी तरह से सम्पन्नता।

प्रभुता पाहि काहि मद नाहिं — उच्च पद प्राप्त करके किसे घमंड नहीं होता।

फरा सो झरा, बरा सो बुताना — जो फला है सो झड़ेगा, जो जला है सो बुझेगा अर्थात् सभी लोग अपने अंत को प्राप्त करते हैं।

फिसल पड़े तो हर गंगा — काम बिगड़ जाने पर यह कहना कि यह तो किया ही ऐसे गया था।

बकरे की माँ कब जक खेर मनाएगी — जिसका कष्ट पाना तय है वह अंततः विपत्ति में पड़ेगा ही।

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद — मूर्ख किसी अच्छी वस्तु की कद्र नहीं कर सकता।

बद अच्छा बदनाम बुरा — नुकसान उठाना बेहतर है बजाय बदनामी के।

बांबी में हाथ तू डाल और मंत्र मैं पढ़ूँ — चालाकी से दूसरे को खतरे में डालना।

बिन माँगे मोती मिले, माँगी मिले न भीख — माँगने पर तुच्छ वस्तु देने से भी कोई इंकार कर सकता है और बिना माँगे कोई बहुमूल्य भी दे सकता है।

बासी बचे न कुत्ता खाय — जरूरत भर का काम करना।

बिल्ली के भाग से छीका टूटा — बिना प्रयास किए किसी अयोग्य व्यक्ति को फल प्राप्त हो जाना।

बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय — बुरा काम करने पर अच्छा नतीजा कैसे प्राप्त हो सकता है।

बैठे से बेगार भली — निरर्थक बैठे रहने के बजाय कम लाभ के लिए भी कुछ-न-कुछ काम करना।

भूखे भजन न होय गोपाला — भूखे रहने पर कोई काम नहीं हो सकता

भेड़ की ऊन कोई नी छोडता — जो कमजोर है उसका हर कोई शोषण करता है।

भेड़ की लात घुटनो तक — कमजोर आदमी किसी का अधिक नुकसान नहीं कर सकता है।

भागते चोर की लंगोटी ही सही – जिससे कुछ न मिलता हो उससे कुछ भी पा लेना अच्छा है।

मन की मन में रह जाना – इच्छा पूरी न होना

मन चंगा तो कठौती में गंगा – मन की पवित्रता ही महत्वपूर्ण है।

मन के लड्डुओं से पेट नहीं भरता – केवल कल्पना कर लेने से तृप्ति नहीं होती

मान न मान में तेरा मेहमान – अवांछित रूप से किसी के गले पड़ना

मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक – सीमित सामर्थ्य होना

मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त – जिसका काम हो वह तो निष्क्रिय हो और उसके मददगार सक्रिय हो।

मुख में राम बगल में छुरी – अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन किंतु धोखा देने की नीयत

मेढ़की को जुकाम – मामूली आदमी द्वारा अपनी क्षमता का काम करने में भी नखरे करना

यथा राजा तथा प्रजा – जैसा नेता वैसी जनता

रस्सी जल गई पर बल नहीं गया – प्रतिष्ठा समाप्त हो जाने पर भी दंभ की बू शेष रहना

लिखित सुधाकर(चंद्रमा) लिखिगा राहू – कोई अच्छी उपलब्धि के योग्य हो किंतु दुर्योग से परिणाम बुरा भोगना पड़े।

लिखे ईसा पढ़े मूसा – न पढ़ने योग्य लिखावट

विष दे पर विश्वास न दे – किसी को स्पष्ट करके उसका बुरा कर दीजिए पर किसी को विश्वासघात मत कीजिए।

सहज पके सो मीठा होय – समुचित समय लेकर किया जानेवाला कार्य अच्छा होता है।

समय चूके पुनि का पछिताने – अवसर बीत जाने पर फिर पछिताने से क्या होता है।

साझे की हाँडी चौराहे पर फूटती है – साझेदारी जब समाप्त होती है तो सबके सामने उजागर होती है।

साँप भी मर जाए और लाठी भी नहीं टूटे – बिना किसी नुकसान के लक्ष्य प्राप्त करना

साँप छछूँदर की गति होना – दुविधा में पड़ना

सावन हरे ना भादो सुखा – हमेशा एक जैसा रहना

सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखता है – सुख-सुविधा में पैदा होने वाले को दुनिया में कोई कष्ट नहीं आता है।

हजारो टाँकियाँ सहकर महादेव बनते हैं – कष्ट सहन करने से ही सम्मान मिलता है।

हथेली पर सरसों नहीं उगती – प्रत्येक कार्य बिना एक प्रक्रिया और समय के पूर्ण नहीं होता है।

हाथ कंगन को आरसी क्या – प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या

होनहार बिरवान के होत चीकने पात – पूत के पाँव तो पलने में ही दिख जाते हैं।

अध्याय 23 –मुहावरे

- अंक-भरना – बहुत स्नेह से मिलना
अंडे सेना – घर में ही बैठे रहना
अँगुठा दिखा देना – मदद करने से मना कर देना
अक्ल का दुश्मन – मर्ख
अक्ल के घोड़े दौड़ाना – केवल कल्पनाएँ करते रहना
अंगारे उगलना – क्रोध में लाल-पीला होना
अंगारों पर पैर रखना – संकटपूर्ण कार्य करना
अगर-मगर करना – बहाना करना
अडियल टट्टू – जिद्दी
अन्न जल उठना – एक स्थान पर रहने का सम्बन्ध टूट जाना
अपन उल्लू सीधा करना – अपना स्वार्थ पूरा करना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना – अपनी बात सबसे अलग रखना
अपना राग अलापना – अपनी ही बातें करते रहना
अपना सा मुँह देखते रह जाना – निराश होना
आँख का काटा होना – बुरा लगना
आँख रखना – निगरानी रखना
आँख की किरकिरी – अवांछित एवं व्यवधान डालनेवाला व्यक्ति
आँख लगाना – चौकस रहना, नगाह-रखना
आँखें खुलना – सजग होना
आँखें चार करना- आमना-सामना करना
आँखें चुराना – बचने की कोशिश करना, सामना नहीं करना
आँखें दिखाना – रोब मारना
आँखें नीची होना – शर्म से दृष्टि न मिलाना
आँखें फेरना – उपेक्षा करना
आँखें बिछाना – प्रेम पूर्वक स्वागत करना
आँखें लड़ाना – प्रेम करना
आँखों से गिरना – किसी का विश्वास खो देना
आँखें बंद होना – मृत्यु हो जाना
आँखों में खून उतरना – गुस्से में आँखें लाल होना
आँखों में धूल झोकना – धोखा देना
आँखों में चर्बी छा जाना – घमंड होना

आग लगने पर कुआँ खेदना – विपत्ति आने पर उपाय खोजना शुरू करना
आटे-दाल का भाव मालूम होना – जीवन के कठिन यथार्थ का पता लगाना
आँच न आने देना – कोई कष्ट, असुविधा न उत्पन्न होने देना
आकाश के तारे तोड़ना – अंसभव –सा कार्य कर देना
आकाश पाताल का अंतर होना – बहुत अधिक अंतर होना
आड़े हाथों लेना – किसी की गलती पर उसकी खिंचाई करना
आपे से बाहर होना – किसी के व्यवहार से उत्तेजित होकर होश खो देना
आसमान टूट पड़ना – बहुत बड़ी आपत्ति आना
आसन डोलना – किसी अन्य के प्रभाव से विचलित होना
आँसू पीना – चुपचाप दुःख सहन करना
ईट से ईट बजाना – कड़ी टक्कर लेना
उँगली उठाना – किसी पर आरोप लगाना
उँगली पर नचना – अपनी इच्छानुसार किसी से कार्य करवाना
उँगली पकड़ कर पहुँचा(प्रकोष्ठ) पकड़ना – शुरू में थोड़ा सा सहारा प्राप्त कर फिर सहारा देनेवाले पर पूरा अधिकार जमाना
उगल देना – भेद प्रकट करना
उड़ती चिड़िया पहचानना – थोड़े इशारे से ही सब कुछ जान लेना
उड़ती तीर झेलना – अन्य के संकट को अपने सिर पर लेना
उलटी माला फेरना – किसी का अहित सोचना
एक आँख से देखना – बराबर समझना
एक लाठी से सबको हाँकना –सबके साथ एक सा व्यवहार करना
एक ही थैली के चट्टे –बट्टे – सभी समान रूप से बुरे व्यक्ति
एड़ी चोटी का पसीना एक करना – कठोर परिश्रम करना
कंधा लगाना – सहारा देना
कमर टुटना – कमजोर पड़ जाना
कमर कसना – तैयार होना
कच्चा चिट्ठा खोलना – किसी की कमजोरियों को विस्तार से बताना
कलई खुलना – किसी की गलत बात का पता लगाना
कलेजा थामना – भय या आशंका से स्तंभित रह जाना
कलेजा मुँह को आना – घबरा जाना
कान पर जूँ नहीं रेगंना – परवाह नहीं करना,
कान खड़ होना – चौकन्ना

कान का कच्चा होना – हर किसी के कहने पर भरोसा करना

कान भरना – किसी को चुपचाप चुगली करना

कान में तेल डालना – किसी की बात पर ध्यान न देना

काला मुँह होना – कालिख पुतना

काठ का उल्लु – निपट मुख

किए कराए पर पानी फेरना – अपने किसी अच्छे कार्य को अपनी ही गलती से खराब कर देना

कोढ़ में खाज होना – एक दूख पर दुसरा दूख होना

कोल्हु का बैल होना – लगातार काम में जुटे रहना

कुँएँ में ही भांग पड़ना – सभी लोगों की मति भ्रष्ट होना

कौड़ी के मोल – अत्यंत सस्ता

खटाई में पड़ना – व्यवधान पड़ना

खाक छानना – निरर्थक भटकना

ख्याली पुलाव पकाना – व्यर्थ की कल्पनाएँ करना

खिचड़ी पकाना – गुप्त योजना बनाना

खून खौलना – बहुत गुस्सा आना

खून पसीना एक करना – कठिन परिश्रम करना

खून सूखना – बहुत भयभीत होना

गंगा नहाना – कोई अच्छा किंतु कठिन काम पूरा करना

गढ़ जीतना – कठिन सफलता प्राप्त करना

खून सफेद होना – दया भाव न रहना

गड़े मुर्द उखाड़ना – पिछले विवादास्पद मसलों को फिर से उठाना

गले का हार – बहुत प्रिय

गरदन पर छूरी फेरना – किसी को नष्ट करने का कार्य करना

गागर में सागर – कम शब्दों में बहुत अर्थ

गाँठ पड़ना – द्वेष का स्थायी हो जाना

गाँठ बाँधना – स्थायी रूप से याद रखना

गुल खिलाना – कोई बखेड़ा खड़ा करना

गाल बजाना – बढ़ चढ़ कर बातें करना

गुड़-गोबर करना – अच्छे भले कार्य का बरबाद हो जाना

गोबर गणेश – बुद्धिहीन व्यक्ति होना

घड़ो पानी पड़ना – शर्मिदा होना

घाट-घाट का पानी पीना – विभिन्न स्थानों पर घूम-घूम कर ज्ञान प्राप्त करना

घी के दीपक जलाना – खुशियाँ मनाना

घूरे के भी दिन फिरना – किसी कमजोर आदमी के भी अच्छे दिन आना

चाँदी का जूता मारना – धन देकर काम करवाना

चल बसना – मृत्यु हो जाना

चिकना घड़ा होना – कुछ भी असर नहीं होना

चींटी के भी पर निकलना – मरने के दिन निकट आना

घर में गंगा बहना – किसी उपयोगी वस्तु का पास में ही सहज उपलब्ध होना

चैन की बंशी बजाना – मौज करना

चोली-दामन का साथ – अत्यन्त निकटता

चौथ का चांद होना – किसी के लिए शुभ होना

छाती पर साँप लौटना – ईर्ष्या होना

छक्के छुटना – हिम्मत हार जाना

छक्के छुड़ाना – हिम्मत पस्त करना

छटी का दूध याद दिलाना – संकट में डाल देना

छप्पर फाड़ देना – बिना परिश्रम के अचानक प्राप्त होना

छाती पर मूँग दलना – निरंतर निकट रहकर किसी को कष्ट देते रहना

छाती पर पत्थर रखना – विपत्ति में हृदय कठोर करना तथा विचलित न होना

जड़ जमाना – किसी कार्य में जमना

जहर का घूँट पीना – असह्य स्थिति को भी सहन करना

जान पर खेलना – प्राणों को संकट में डालना

जिंदा मक्खी निगलना – स्पष्ट, साफ दिखता हुआ अन्याय करना

जूतियाँ चाटना – चापलूसी करना

टेढ़ी खीर होना – कठिन काम होना

टोपी उछालना – बेइज्जती करना

ठिकाने लगाना – मार देना, खत्म कर देना

डकार जाना – किसी का धन अनुचित रूप से हड़प कर जाना

डंका बजाना – प्रतिष्ठित हो जाना

ढिंढोरा पीटना – अति प्रचारित करना

थाह लेना – किसी गुप्त बात का भेद जानना

दाँत काटी रोटी – आपस में अत्यधिक घनिष्टता

दाँत खट्टे करना – पराजित करना

दाहिना हाथ – महत्वपूर्ण संबल

देर के ढोल सुआवने – दूर से ही कुछ चीजें अच्छी लगती हैं।

दो नावो पर पैर रखना – दो पक्षों का सहारा लेना

धाक जमाना – रोब स्थापित करना धज्जियाँ उड़ाना – किसी की बहुत आलोचना करना

धूप में बाल सफेद न होना – अनुभवी होना नजर करना – भेंट करना

नस-नस पहचानना – किसी के अवांछित व्यवहार को विस्तार से जानना

नाक का बाल होना – किसी का प्रिया व्यक्ति होना

नाक-भौं सिकोड़ना – नफरत करना

नाको चने चबाना – बहुत कष्ट होना

निन्यानवे का फेर – लोभ में पड़ना

पगड़ी उछालना – अपमान होना

पहाड़ टूट पड़ना – बहुत बड़ी आपत्ति होना

पानी में आग लगाना – असंभव कार्य करना

पापड़ बेलना – बहुत कष्ट उठाना

पर हंडी ऊँची होना – दूसरे की वस्तु बेहतर दिखना

पीठ दिखाना – किसी परिस्थिति में मुकाबला करने के बजाय पलायन करना

पेट का पानी नहीं पचना – कोई बात कहे बिना न रह पाना

पेट में ढाढी होना – बाल्यावस्था में ही समझदार हो जाना

फूँक देना – अपव्यय में किसी संपत्ति को उड़ा देना

फूँक मारना – भड़काना

फूँक-फूँक कर कदम रखना – बहुत ध्यान से काम करना

पैरो के तले से जमीन खिसकना – आधार खो जाना

बट्टा लगाना – इज्जत को कलंकित करना

बल्लियाँ उछालना – बहुत खुश होना

बावन तोले पाव रती – बिल्कुल ठीक हिसाब

बाग – बाग होना – बहुत प्रसन्न होना

बालू से रेत निकालना – असंभव कार्य करना

मुँह काला करना – बदनाम कर देना

बीड़ा उठाना – किसी कार्य को करने का संकल्प लेना

भाड़ झोकना – निरर्थक समय गुजारना

मक्खी मारना – ठाले बैठे रहना

मन के लड़खू खाना – मन ही मन खुश होना

मुँह की खाना – पराजित होना

माथे पर शिकन न आना – कष्ट में थोड़ा भी विचलित न होना

मुट्ठी गरम करना – रिश्वत देना

मुट्ठी में करना – किसी को अपने वश में करना

मुहर्रमी सूरत – शोक मनानेवाला चेहरा

मैदान मारना – विजय प्राप्त करना

रंग में भंग होना – खुशी के अवसर पर कुछ बुरा हो जाने से खुशी का दुःख में बदल जाना

रंगा सियार होना – ऊपर कुछ अंदर कुछ

रास्ते पर आना – सही व्यवहार करना

राई का पहाड़ बनाना – तिल का ताड़ बनाना, किसी छोटी सी बात को व्यर्थ ही बढ़ाना

रोंगटे खड़े होना – भय से रोमांचित हो जाना

रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना – रोज कमाकर जीवन निर्वाह करना

लकीर का फकीर – पुरातनपन्थी जैसा चला आ रहा है वैसे ही चलते रहने देने वाला

लंबी तानकर सोना – निष्क्रिय होकर बैठना

लुटिया डुबोना – बरबाद करना

लोहा मानना – किसी की शक्ति को स्वीकार करना

लोहे के चने चबाना – मुश्किल कार्य करना

लोहा लेना – टक्कर लेना

विष उगलना – किसी के विरुद्ध जली-कटी कहना

शेर की सवारी करना – खतरनाक कार्य करना

शेर के कान कतरना – बहुत चालाक होना

समझ पर पत्थर पड़ना – विवेक खो देना

साँच को आँच नहीं – सच बोलनेवाले को किसी का भय नहीं

श्री गणेश करना – किसी कार्य को प्रारम्भ करना

सब्ज बाग दिखाना – झूठे आश्वासन देना

साँप सुघना – सहम जाना

सिक्का जमाना – प्रभाव स्थापित करना

सिर आँखों पर लेना – बहुत सम्मान देना

सिर पर हाथ होना – सहारा होना, वरदहस्त होना

सिर मुँडाते ही ओले पड़ना – कोई नया कार्य शुरू करते ही व्यवधान आ जाना।

सिर खपाना – व्यर्थ ही दिमाग लगाना

सिर उठाना – विरोध करना

सिर झुकाना – पराजय स्वीकार करना

सीधी उँगली से घी नहीं निकलता – प्रेमपूर्ण व्यवहार से काम नहीं चलता।

सूरज को दीपक दिखाना – सुविख्यात एवं सुपरिचित का परिचय देने की कोशिश करना

हक्का-बक्का रह जाना – अचम्भे में पड़ जाना

हथियार डालना – संघर्ष बन्द कर देना

हथेली पर सरसों उगाना – आवश्यक समय से भी पहले असंभव कार्य करना

हवा से बातें करना – बहुत तीव्र गति से चलना

हवा हो जाना – शीघ्रता से गायब हो जाना

हाथ का मैल – तुच्छ और त्याज्य वस्तु

हाथ के तोते उड़ना – अचानक घबरा जाना

हाथ कट जाना – किसी संकट से बचने के लिए अपनी ओर से ही मार्ग बंद कर देना

हाथ को हाथ न सूझना – घना अंधेरा होना

हाथ खींचना – सहायता करना बंद कर देना

हाथ धोकर पीछे पड़ना – किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए पूरी तरह जुट जाना।

हाथ धो बैठना – किसी वस्तु या व्यक्ति को खो देना

हाथ पीले करना – लड़की का विवाह करना

हाथ बँटाना – मदद करना

हाथ डालना – किसी काम में दखल करना

हाथ पसारना – किसी से कुछ माँगना

हाथ पर हाथ धरे बैठना – बेकार बैठना

हाथ मलना – पछताना

हाथ साफ करना – चोरी करना

हाथों हाथ रखना – देखभाल के साथ रखना

होम करते हाथ जलना – भला करते समय भला करनेवाले का बुरा होना।

अध्याय 24 – प्रशासनिक शब्दावली

Academy :	संस्थान	Case:	प्रकरण
Accede :	मान लेना	Caution:	सावधानी
Accrue:	प्रोद्भूत होना	Confiscate:	अधिहरण
Adjourn :	स्थगित करना	Covering letter:	आवरण पत्र
Administration:	प्रशासन	Custody:	अभिरक्षा
Agrarian :	कृषि भूमी सम्बन्धी	Damages:	हरजाना
Authorise:	प्राधिकार देना	Delimitation:	परिसीमन
Abdicate :	पद त्याग देना	Deputation:	प्रतिनियुक्ति
Abridge report :	संक्षिप्त रिपोर्ट	Disparity :	असमानता
Accession:	राज्यारोहण	Disposal:	निष्पादन
Accountability :	जवाबदेही	Devaluation:	अवमूल्यन
Adopt :	ग्रहण करना	Demonstration:	प्रदर्शन
Adverse:	प्रतिकूल	Endorse:	पृष्ठांकन करना
Agenda:	कार्यसूची	Executive:	अधिशाली
Amendment :	संशोधन	Expel:	निष्कासित करना
Auction :	नीलामी	Extensive:	व्यापक
Accountant General:	महालेखापाल	Extension:	विस्तार
Ballot :	मतपत्र	Fiscal:	राजस्व संबन्धी
Banner :	प्रदर्शन पट्ट	Forbid:	निषेध करना
Bearer Cheque:	धारक चेक	Fixation:	स्थिरीकरण
Bill of entry :	आगम पत्र	Grant:	अनुदान
Bipartite agreement:	द्विपक्षीय समझौता	Glossary:	शब्दावली
Blanket deal :	व्यापक सौदा	Hierarchy:	सोपान
Boy cott :	बहिष्कार	Hand over:-	सौंपना
Break-up :	विराम देना	Implement:	कार्यान्वित करना
Bribe :	रिश्वत	Indispensable:	अपरिहार्य
Brochure :	विवरणिका	Incentive :	प्रोत्साहन
Balance Sheet :	तुलन पत्र	Integration :	एकीकरण
Body :	निकाय	Investigation :	अनुसंधान
Caretaker government :	कामचलाऊ सरकार	Instruction:	अनुदेश
Cash down:	रोकड भुगतान	Justification :	औचित्य
Census:	जनगणना	Judicial :	न्यायिक
Centralization:	केन्द्रीय करण	Litigation :	मुकदमेंबाजी
Civil Code:	सिविल संहिता	Laxity :	शिथिलता
Commission:	आयोग	Migration :	प्रवास
Compilation:	संकलन	Motion :	प्रस्ताव
Consent:	सहमति	Merger :	विलियन

Maintenance :	मरम्मत	Uniformity :	एकरूपता
Manual :	नियम पुस्तिका	Verdict :	निर्णय
Nominee :	नामिक	Violation :	हिंसा
Notification:	अधिसूचना	Appraise :	मूल्यांकन
Opposition :	विरोध	Articale :	अनुच्छेद
Ordinance :	अध्यादेश	Insjnyation :	परीक्षा संकेत
Organization :	संगठन	Legal :	वैध
Observance :	पालन	Vigilance :	सर्तकता
Petition :	याचिका	Exanerate :	दोषमुक्त करना
Preliminary :	प्रारम्भिक	Gazette :	राजपत्र
Prima facie :	प्रथम दृष्टि से	Grant :	अनुदान
Proviso :	शर्त	pact :	समझौता
Provisional :	अस्थायी	Probation :	परिविक्षा
Recurring :	आवर्ती	Rebate :	छूट
Regulation :	विनिमय	Refutation :	खंडन
Resolution :	संकल्प	Suffix :	प्रत्यय
Resign :	त्याग पत्र	Toll tax :	पथकर
Sanction :	संस्वीकृती	Undue :	अनुचित
Subordinate :	अधिनस्त	National Anthem :	राष्ट्रगान
Stipulate :	अनुबंध करना	Lease :	पट्टा
Terminal :	आवधिक	National song :	राष्ट्रगीत
Transaction :	संचालन	Insinuation :-	वक्रोक्ति
Unavoidable :	अपरिहार्य	Ex - officio :	पदेन

अध्याय 25 – तत्सम् – तद्भव शब्द

तत्सम् – तद्भव

अकार्य – अकाज

अक्षर – अच्छर/आखर

अक्षत – अच्छत

अक्षि – आँख

अग्र – आगे

अगम्य – अगम

अद्य – आज

अन्ध – अँधेरा

अट्टालिका – अटारी

अमावस्या – अमावस

अनार्य – अनाड़ी

अम्लिका – इमली

अवगुण – औगुण

अष्टादश – अठारह

अर्द्ध – आधा

अश्रु – आँसू

अग्नि – आग

अग्रवर्ती – अगाड़ी

अक्षय – आखा

अच्युत – अचूक

अज्ञान – अजान

अज्ञानी – अनजाना

अन्धकार – अँधेरा

अन्न – अनाज

अन्यत्र – अनत

अमुल्य – अमोल

अमृत – अमिय

अर्पण – अरपन

अवतार – औतार

आभीर – अहीर

आर्य – आरज

आश्चर्य – अचरज

इक्षु – ईख

उत्साह – उछाह

आदेश — आयश	कुम्भकार — कुम्हार	तिलक — टीका
आखेट — अहेर	कुष्ठ — कोढ़	तीक्ष्ण — तीखा
आम्रचूर्ण — अमचूर	कोकिल — कोयल	तपस्वी — तपसी
आश्रय — आसरा	गर्त — गड़ढ़ा	ताम्र — ताम्बा
ईप्सा — इच्छा	ग्रंथि — गाँठ	तुन्द — तोंद
उच्च — ऊँचा	गायक — गवैया	त्वरित — तुरन्त
उपाध्याय — ओझा	ग्रामीण — गँवार	तृण — तिनका
उलूखल — ओखली	ग्रीवा — गरदन	दधि — दहि
उपरि — ऊपर	गुहा — गुफा	दन्तधावन — दातुन
एला — इलायची	गोधूम — गेहूँ	दण्ड — डण्डा
ओष्ठ — ओठ	ग्राम — गाँव	दक्षिण — दाहिना
एकत्र — इकट्ठा	गुम्फन — गूँथना	दीप — दीया
अंक — आँक	गोमय — गोबर	दूर्वा — दूब
अंचल — आँचल	गो — गाय	दृष्टि — दीटि
कंकण — कंगन	घट — घड़ा	द्वादश — बारह
कटु — कड़वा	घोटक — घोड़ा	दक्ष — दच्छ
कपाट — किवाड़	घृत — घी	दाह — डाह
कपर्दिका — कौड़ी	घृणा — घिन	द्विवर — देवर
कतगरी — कैची	घटिका — घड़ी	दीपशलाका — दीयासलाई
कण्टक — काँटा	चर्म — चाम	दुग्ध — दूध
काक — काग	चर्मकार — चमार	दौहित्र — दोहिता
किरण — किरन	चर्वण — चबाना	द्विगुण — दूना
कुक्कर — कुत्ता	चन्द्रिका — चाँदनी	धर्म — धरम
कुक्षि — कोख	चतुष्पद — चौपाया	धरणी — धरती
कुपुत्र — कपूत	चंचु — चोंच	धूम्र — धुआँ
कन्दुक — गेंद	चिक्कण — चिकना	धर्तूर — धतूरा
कृषक — किसान	चौर — चोर	धूलि — धूरि
कोण — कोना	चित्रकार — चितेरा	धैर्य — धीरज
गर्दभ — गधा	चित्रक — चीता	नग्न — नंगा
अंगुलि — अँगूरी	छत्र — छाता	नव्य — नया
कर्म — काम	छाया — छाँह	नव — नौ
कर्पट — कपड़ा	छिद्र — छेद	नम्र — नरम
कदली — केला	जन्म — जनम	नकुल — नेवला
कर्ण — कान	ज्योति — जोत	नासिका — नाक
कपोत — कबूतर	जिह्वा — जिभ	नापित — नाई
कास — खाँसी	जंघा — जाँघ	निपुण — निपुन
किंचित — कुछ	जीर्ण — झीना	निद्रा — नींद
कुमार — कुँअर	जामाता — जमाई	निशि — निसि
	तप्त — तपन	निम्बुक — निम्बू

निष्ठुर – निठुर
 नृत्य – नाच
 पक्ष – पंख
 पथ – पंथ
 पक्षी – पंछी
 पक्वान्न – पकवान
 पश्चाताप – पछतावा
 पर्पट – पापड़
 परशु – फरसा
 पाषाण – पाहन
 पाद – पैर
 पत्र – पत्ता
 पवन – पौन
 परश्वः – परसों
 पर्यंक – पलंग
 पिप्पल – पीपल
 पितृ – पितर
 पिपासा – प्यास
 पीत – पीला
 पुष्प – पुहुन
 पुत्र – पूत
 पुच्छ – पूँछ
 पुष्कर – पोखर
 पूर्व – पूरब
 पूर्ण – पूरा
 पौष – पूस
 पौत्र – पोता
 पंक्ति – पंगत
 प्रिय – पिय
 प्रस्वेद – पसीना
 प्रस्तर – पत्थर
 प्रतिच्छाया – परछाँई
 पृष्ठ – पीठ
 फणि – फण
 फाल्गुन – फागुन
 बधिर – बहरा
 बलीवर्द – बैल
 बर्कर – बकरा
 बन्ध्या – बाँझ

बालुका – बालू
 बुंभुक्षित – भूखा
 भक्त – भगत
 भद्र – भल्ला
 भल्लुक – भालू
 भगिनी – बहिन
 भागिनेय – भानजा
 भाद्रपद – भादों
 भिक्षा – भीख
 भ्रू – भौं
 भ्रमर – भौरा
 भ्रातृ – भाई
 मकर – मगर
 मक्षिका – मक्खी
 मस्तक – माथा
 मशक – मच्छर
 मल – मैल
 मनुष्य – मानुस
 मयूर – मोर
 महिषि – भैंस
 मर्कटी – मकड़ी
 मार्ग – मारग
 मणिकार – मणिहार
 मातुल – मामा
 मातृ – माता
 मित्र – मीत
 मिष्टान्न – मिठाई
 मुक्ता – मोती
 मुषल – मुसल
 मुख – मुँह
 मेघ – मेह
 मौक्तिक – मोती
 मृत्यु – मौत
 मृतघट्ट – मरघट
 यमुना – जमुना
 यज्ञ – जग
 यजमान – जजमान
 जति – जती
 यत्न – जतन

यव – जौ
 यद्यपि – जदपि
 यम – जम
 यश – जस
 यज्ञोपवीत – जनेऊ
 युक्ति – जुगति
 यूथ – जत्था
 युवा – जवान
 योगी – जोगी
 रज्जु – रस्सी
 रक्षा – राखी
 राजपुत्र – राजपूत
 राशि – रास
 रिक्त – रीता
 रूदन – रोना
 लक्ष्मण – लखन
 लक्षण – लच्छन
 लज्जा – लाज
 लक्ष – लाख
 लवंग – लौंग
 लवण – लौण
 लक्ष्मी – लछमी
 लेपन – लीपना
 लोमशा – लोमड़ी
 लौहकार – लुहार
 वणिक – बनिया
 वत्स – बच्चा
 वधू – बहु
 वट – बड़
 वरयात्रा – बरात
 वज्रांग – बजरंग
 वचन – बचन
 वर्षा – बरसात
 वर्ण – बरन
 वक – बगुला
 वाष्प – भाप
 वाणी – बैन
 विष्टा – बीट
 विवाह – ब्याह

विद्युत — बिजली
विकार — बिगाड़
वंश — बाँस
वंसी — बाँसुरी
व्यथा — विथा
वृषभ — बैल
व्याघ्र — बाघ
वृश्चक — बिच्छू
शर्करा — शक्कर
शकट — छकड़ा
शत — सौ
शाक — साग
शाप — सराप
शिक्षा — सीख
शीतल — सीतल
शुक — सुआ
शुष्क — सूखा
शून्य — सूना
शूकर — सूअर
शुण्ड — सूँड
श्वसुर — ससुर
श्यामल — साँवला
श्याली — साली
श्मश्रु — मूँछ

श्वश्रू — सास
श्वास — साँस
श्मशान — मसान
श्रृंगार — सिंगार
श्रृगाल — सियार
श्रृंग — सींग
श्रावण — सावन
श्रेष्ठि — सेठ
षोडश — सोलह
सरोवर — सरवर
सप्तसती — सतसई
सर्सप — सरसों
सपत्नी — सौत
सर्प — साँप
सन्ध्या — साँझ
सत्य — सच
साक्षी — साखी
सूत्र — सूत
सूर्य — सूरज
सौभाग्य — सुहाग
स्वप्न — सपना
स्वर्णकार — सुनार
स्थल — थल
स्कन्ध — कंध

स्थान — थान
स्तम्भ — खम्भा
स्नेह — नेह
स्पर्श — परस
हरित — हरा
हस्तिनी — हथिनी
हरिद्रा — हल्दी
हर्ष — हरख
हट्ट — हाट
हण्डी — हाँडी
हस्त — हाथ
हस्ती — हाथी
हरिण — हिरन
हास्य — हँसी
हिन्दोला — हिण्डोला
हीरक — हीरा
होलिका — होली
क्षण — छिन
क्षति — छति
क्षार — खार
क्षत्रिय — खत्री
क्षीण — छीन

अभ्यास प्रश्न-पत्र

- सुन्दर की भाव वाचक संज्ञा है?
(अ) सुन्दरता (ब) सोन्दर्य
(स) केवल (अ) (द) (अ) व (ब) दोनों
- दिक् + गज की संधि है?
(अ) दिक्गज (ब) दिग्गज (स) दिगज (द) कोई नहीं
- निर्माण करने वाले शब्दों की विशेषता बताने वाला शब्द किसे कहते हैं?
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम
(स) विशेषण (द) क्रिया-विशेषण
- अनुनासिक व्यंजन कौनसे होते हैं?
(अ) वर्ग के प्रथम अक्षर (ब) वर्ग का तीसरा अक्षर
(स) वर्ग का चौथा अक्षर (द) वर्ग का पंचम अक्षर
- वर्तनी की दृष्टि से कौनसा शब्द सही है?
(अ) संन्यासी (ब) सनयासी
(स) सन्यासी (द) संनयासी
- निम्नलिखित में से कौनसा वाक्य शुद्ध है?
(अ) मैं गाने की कसरत कर रहा हूँ।
(ब) मैं गाने का शौक कर रहा हूँ।
(स) मैं गाने का अभ्यास कर रहा हूँ।
(द) मैं गाने का व्यायाम कर रहा हूँ।

7. निम्न में कौनसा शब्द है जो सदैव स्त्रीलिंग में प्रयोग होता?

(अ) पक्षी (ब) बाज (स) मकड़ी (द) गैडा

8. निम्न संज्ञा विशेषण जोड़ी में सही नहीं है—

(अ) विष-विषैला (ब) पिता-पैतृक
(स) आदि-आदिम (द) प्रांत-प्रांतिक

9. जिन शब्दों की उत्पत्ति का पता नहीं चलता उन्हें क्या कहा जाता है?

(अ) तत्सम (ब) तद्भव (स) देशज (द) संकर

10. अंडे का बादशाह मुहावरे का अर्थ है—

(अ) कमजोर व्यक्ति (ब) चालाक व्यक्ति
(स) अनुभवी व्यक्ति (द) अनुभवहीन व्यक्ति

11. चाय किस भाषा का शब्द है?

(अ) चीनी (ब) जापनी (स) फ्रेंच (द) अंग्रेज

12. वह घर से बाहर गया — इस वाक्य में कौनसा कारक है—

(अ)कर्ता (ब)कर्म (स)करण (द) अपादान

13. सृष्टि का विलोम शब्द है?

(अ) मरण (ब) प्रलय (स) दृष्टि (द) मौक्ष

14. जंगल में लगने वाली आग ' वाक्यांश का एक शब्द है?

(अ) जठरानल (ब) बडवानल
(स) कामानल (द) दवानल

15. हमेशा रहने वाला " एक शब्द बताइए—

(अ) शाश्वत (ब) समसायनि
(स) प्राण्दा (द) पार्थिव

16. निम्न लिखित में से संयुक्त वाक्य का चयन करो

(अ) जो परिश्रम करता है वही आगे बढ़ता है।
(ब) मैं पढ़ता हूँ और वह गाता है।
(स) क्या मेरे पिता वह पढ़ नहीं सकता
(द) परिश्रमी व्यक्ति सफलता प्राप्त करते हैं।

17. स्पर्श व्यंजन का उदाहरण है?

(अ) य (ब) ल (स) व (द) च

18. निम्न में से सरल वाक्य नहीं है?

(अ) विद्यार्थी रसोई में जा रहे हैं
(ब) बंदर पेड़ पर कूद रहे हैं।
(स) उसके घर में पानी आ गया
(द) भूख लगी है तो खाना खा लो

19. अध्यापक ने कहा कल अवकाश है" यह वाक्य है—

(अ) सरल (ब) उपवाक्य (स) संयुक्त (द) मिश्र

20. निम्न में से किस वर्ग में सभी वर्ग सभी शब्द तत्सम नहीं हैं?

(अ) वृश्चिक, सर्प (ब) दंत, कर्म
(स) शुष्क बर्फ (द) लज्जा, सींग

21. अतिथि शब्द में "एय" प्रत्यय जोड़ने पर बनने वाला शब्द होगा—

(अ) अतिथिय (ब) आतिथेय (स) अतिथेय (द) आतथ्य

22. लेटना क्रिया है—

(अ) अकर्मक (ब) सकर्मक (स) प्रेरणार्थक (द) द्विकर्मक

23. अब तो उससे बैठा भी नहीं जाता है" वाक्य है—

(अ) कर्तृवाच्य (ब) कर्मवाच्य
(स) इच्छाबोधक (द) भाववाचक

24. लड़का शब्द में प्रत्यय जोड़ने पर भाववाचक संज्ञा बनेगी—

(अ) लड़कापन (ब) लड़के (स) लड़कपन (द) लड़त्व

25. शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है?

(अ) अत्याधिक (ब) अनाधिकृत (स) कवियत्री (द) श्रीमती

26. सदानंद संधि विच्छेद है—

(अ) सत्+आनंद (ब) सद+आनंद
(स) सदा+आनंद (द) सद+नानंद

27. हिन्दी में आगत व्यंजन है—

(अ) च (ब) ज (स) त (द) श्र

28. निम्न में कौनसा शब्द उपसर्ग से नहीं बना है?

(अ) अज्ञान (ब) बदनाम (स) ईमानदार (द) हेडमास्टर

29. नौकरी प्राप्त करने के लिए दिया जाता है—

(अ) आवेदन पत्र (ब) कार्यालय आदेश
(स) निविदा (द) कार्यालय ज्ञापन

30. तन बदन में आग लगना मुहावरे का अर्थ है—

(अ) घबरा जाना (ब) नाराज होना
(स) क्रोधित होना (द) चकित रह जाना

31. अपनी कब्र आप खोदना इस मुहावरे का अर्थ है—

(अ) अपनी मृत्यु की तैयारी करना
(ब) अपने विनाश का काम स्वयं करना
(स) परिश्रम से जी चुराना
(द) संकट में पड़ना

32. मनीषा बहुत धीरे-धीरे चलती है" इस वाक्य में बहुत शब्द है?

(अ) विशेषण (ब) संज्ञा (स) प्रविशेषण (द) कारक

33. पंडित मिठई खाता है" इस वाक्य में कारक है?

(अ) कर्ता, कर्म (ब) कर्म, करण

- (स) सम्प्रदान,कर्ता (द) कर्ता,अपादान
 34. श्रावक शब्द में संधि है—
 (अ) श्राव+अक (ब) श्रौ+अक
 (स) श्रौ+आक (द) श्राव+आक
 35. निम्न में से कौनसा शब्द व्यक्ति वाचक संज्ञा नहीं है?
 (अ) ताजमहल (ब) हिमालय (स) पहाड़ (द) अशोक
 37. सच्चिदानन्द का संधि विच्छेद है?
 (अ) सच्चि + दानन्द (ब) सच् + चिद + आनन्द
 (स) सत् + चित् + आनन्द (द) सच् + चिदानन्द
 38. निम्न में से अघोष वर्ण है—
 (अ) इ (ब) ज (स) स (द) ह
 39. निम्न में से तत्सम है—
 (अ) लौंग (ब) बहिन (स) जवान (द) पृष्ठ
 40. निम्न में से कौनसा शब्द अन्य तीनों से भिन्न अर्थ रखता है—
 (अ) अनिल (ब) वहनि (स) समीर (द) बयार
 41. अवन्ति में उपसर्ग है—
 (अ) अन् (ब) अनु (स) अन्व (द) अन
 42. जिह्वा जब दन्त -पंक्ति से स्पर्श करती है तब निम्न में से किन वर्णों का उच्चारण होता है—
 (अ) प,फ (ब) च,छ (स) ट,ठ (द) द,ध
 43. निम्न में से कौनसा गुण वाचक का उदाहरण नहीं है—
 (अ) प्राचीन (ब) नया (स) मध्यकालीन (द) तिगुना
 44. निम्न में से शुद्ध शब्द है—
 (अ) अधिआत्मिक (ब) आध्यात्मिक
 (स) आधियात्मिक (द) अध्यत्मिक
 45. तिमिर का पर्याय नहीं है—
 (अ) अंधकार (ब) तम (स) अंधेरा (द) निशान्त
 46. राजमहल " में कौनसा समास है—
 (अ) तत्पुरुष (ब) कर्मधारय
 (स) द्विगु (द) अव्ययीभाव
 47. संसार शब्द में संधि है—
 (अ) व्यंजन (ब) यण (स) विसर्ग (द) गुण
 48. निम्न में से सकर्मक क्रिया है—
 (अ) हसना (ब) आना (स) सोना (द) पीना
 49. निम्न में से योगरूढ शब्द है—
 (अ) कमल (ब) चौमासा (स) चौकोर (द) एकैक
 50. निम्न में से "अल्पविराम" व्यंजन वर्ण है—
 (अ) फ,भ (ब) ध,घ (स) अ,आ (द) ट,ड

उत्तरमाला

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
द	ब	स	द	अ	स	स	द	द	अ	अ	द	ब	द	अ	द	द	द	द	द
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
ब	अ	द	स	द	अ	ब	स	अ	स	ब	स	अ	ब	ब	स	स	स	द	ब
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50										
ब	द	द	ब	द	अ	अ	द	ब	द										